A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 12 अक्टूबर, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 351, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

04 - फिक्शन और मायथोलॉजी से अनुप्रेरित 'कांतरा...

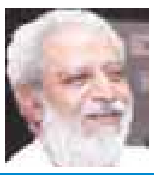
05 - वर्तमान समय में डॉ. लोहिया

06 - परिवार और प्रेम का अक्षय कोश है कविता

07 - फिल्मों के कथानक को मोड़ देता करवा चौथ

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

तोपखाना जो भव्य संस्कृत विद्यालय था...

राजस्थान के जालौर शहर के मध्य में स्थित तोपखाना कभी एक भव्य संस्कृत विद्यालय हुआ करता था। इसका निर्माण राजा भोज ने 7वीं और 8वीं शताब्दी के बीच करवाया था। ब्रिटिश शासनकाल में इसका उपयोग तोपखाने और गोला-बारूद के भंडारण के लिए किया जाने लगा। तोपखाना के दोनों ओर दो मंदिर हैं, लेकिन अब उनमें मूर्तियाँ नहीं हैं। यहां की नक्काशी प्रभावशाली है।

फोटो: पंकज शर्मा

सुप्रभात

समुद्र आता है औरत के स्वप्न में
उछालें मारता
सवार हवा के घोड़े पर
वह घर के बाहर बाँध घोड़ा
ले आती समुद्र को घर के भीतर
घर भीग गया है।
वह भरती समुद्र के मीठे जल से घड़ा
धोती कपड़े
करती चौका-बर्तन
तल की भविष्य रेत से
बीन लेती सीपियाँ
चंद्रमा की संगत में
जब शोर मचाता समुद्र
वह डपट कर समुद्र को
बना देती मुर्गा घर के कोने में
सारे समुद्र औरत के स्वप्न में क़ैद
पृथ्वी सूखी है।

– निरंजन श्रोत्रिय

दीवाली से पहले 42 हजार करोड़ की कृषि योजनाओं का तोहफा

● **पीएम बोले-पहले की सरकारों ने किसानों को अपने हाल पर छोड़ा**

नई दिल्ली (एजेंसी)। दीवाली से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किसानों को बड़ा तोहफा दिया है। पीएम मोदी ने दिल्ली के पूसा स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान से 42000 करोड़ रुपये की योजनाओं का शुभारंभ किया। पीएम मोदी ने किसानों को बड़ी सौगात देते हुए 24000 करोड़ रुपये वाली पीएम धन धान्य कृषि योजना और 11,440 करोड़ के दलहन उत्पादकता मिशन का शुभारंभ किया है। दिल्ली में आयोजित इस कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान भी शामिल हुए। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा आज पीएम धन-धान्य कृषि योजना का शुभारंभ किया गया है। इस योजना में सरकार के 36 योजनाओं को एक साथ जोड़ जा रहा है।

● **किसानों का भाग्य बदलने का काम करेंगी दोनों योजनाएं**– दिल्ली के पूसा स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान से किसानों के लिए एक साथ दो योजनाओं को लॉन्च करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि ये दो योजनाएं भारत के किसानों का भाग्य बदलने का काम करेंगी। पीएम मोदी ने कहा कि इन योजनाओं पर सरकार करीब 35 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा खर्च करने वाली है।

● **दूध उत्पादन में नंबर वन भारत, दलहन आत्मनिर्भरता मिशन**– पीएम मोदी ने आगे कहा, बीज से लेकर बाजार तक अनगिनत सुधार किए गए। जिसके परिणामस्वरूप आज दूध उत्पादन में भारत नंबर एक पर है। भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक है। भारत में शहद उत्पादन 2014 की तुलना में दोगुना हो गया है। देश में 6 बड़ी फर्टिलाइजर फैक्ट्रियां बनाई गई हैं। 25 करोड़ से ज्यादा सॉइल हेल्थ कार्ड किसानों को दिए गए हैं। 100 लाख हेक्टेयर में सूक्ष्म सिंचाई की सुविधा पहुंची है। पीएम फसल बीमा योजना से करीब 2 लाख करोड़ रुपए क्लेम के रूप में किसानों को मिले हैं। बीते 11 वर्षों में 10 हजार से ज्यादा किसान उत्पाद संघ एफपीओ बने। पीएम मोदी ने दलहन आत्मनिर्भरता मिशन की भी शुरुआत कर दी है।

आरएसएस जैसी संस्था केवल नागपुर में बन सकती थी

भागवत बोले-यहां पहले से त्याग और समाज सेवा की है भावना

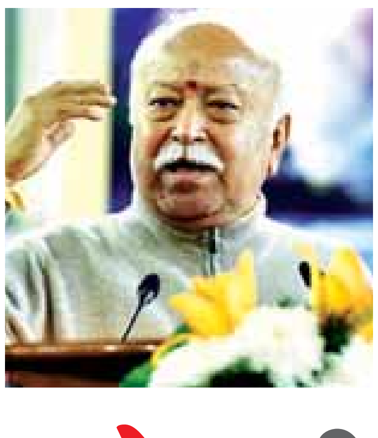

नागपुर (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ चीफ मोहन भागवत ने कहा, देश में कई लोग हिंदुत्व पर गर्व करते थे और हिंदू एकता की बात करते थे, लेकिन आरएसएस जैसी संस्था केवल नागपुर में ही बन सकती थी। यहां पहले से ही त्याग और समाज सेवा की भावना थी। उन्होंने कहा- आरएसएस ने हाल ही में दशहरे पर अपने 100 साल पूरे किए। इसकी स्थापना साल 1925 में नागपुर में डॉ. हेडगेवार ने की थी। संगठन का उद्देश्य समाज में अनुशासन, सेवा, सांस्कृतिक जागरुकता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना पैदा करना था। शुक्रवार को नागपुर में एक कार्यक्रम के दौरान भागवत ने कहा छत्रपति शिवाजी महाराज ने स्वराज की स्थापना अपने लिए नहीं, बल्कि ईश्वर, धर्म और राष्ट्र के लिए की थी। उन्होंने लोगों को एक महान उद्देश्य के लिए जोड़ा। उनकी एकता की भावना ने समाज को ताकत दी। जब तक उनके आदर्श जीवित रहे, तब तक समाज में प्रगति और विकास होता रहा। उनके विचारों ने आगे चलकर 1857 के स्वतंत्रता संग्राम तक को प्रेरित किया। संघ चीफ ने कहा कि ब्रिटिश शासन ने योजनाबद्ध तरीके से उन प्रतीकों और परंपराओं को खत्म करने की कोशिश की, जो भारतीयों को एकजुट करती थीं। इसलिए इतिहास से सीखें और उन लोगों की निस्वार्थ भावना को याद रखें, जिन्होंने समाज और देश के हित के लिए काम किया।

भिलाला समाज ने जगाई सामाजिक चेतना: मुख्यमंत्री

जनजातियों का समग्र कल्याण हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि जनजातीय वर्ग का समग्र कल्याण राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। हमारी कोशिश है कि जनजातीय वर्ग का कोई भी व्यक्ति शासन की योजनाओं के लाभ से वंचित न रहे। उन्होंने कहा कि भिलाला समाज एक साहसी और संस्कारित समाज है, जिसने मां नर्मदा के आशीर्वाद से नशामुक्ति और मृत्युभोज जैसी सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने का संकल्प लिया है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का धार में भिलाला समाज के 12वा प्रांतीय सम्मेलन में शानदार आत्मीय और हार्दिक अभिनंदन किया गया। मुख्यमंत्री ने धार में भिलाला समाज के प्रांतीय सम्मेलन में मुख्य संगीत साज थाली बजाकर भिलाला समाज का अभिवादन स्वीकार किया और बाल कलाकारों को दुलार भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नशा नाश की जड़ है, जो कई पीढ़ियों को बर्बाद कर देता है। समाज की कुरीतियों को खत्म करने का प्रयास एक सामाजिक क्रांति का संकेत है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को धार के किला मैदान में जय ओमकार आदिवासी भिलाला समाज संगठन द्वारा आयोजित 12वें प्रांतीय वार्षिक सामाजिक सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम शुभारंभ किया। सम्मेलन के तहत भिलाला समाज द्वारा युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन, रोजगार पंजीयन शिविर, स्वास्थ्य परीक्षण शिविर, नशामुक्ति जागरूकता शिविर, कैरियर मार्गदर्शन शिविर सहित सामाजिक कुरीतियों के निवारण के लिए जागरुकता शिविर भी आयोजित किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पीथमपुर थाना (बगदून) के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण भी किया।

एक करोड़ 26 लाख लाड़ली बहनों को मिलेगी आज 29वीं किस्त

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव रविवार 12 अक्टूबर को श्योपुर जिले में आयोजित कार्यक्रम के माध्यम से लाड़ली बहना योजना के तहत प्रदेश की लगभग 1 करोड़ 26 लाख 86 हजार लाड़ली बहनों के बैंक खातों में 29वीं किस्त 1541 करोड की राशि का अंतरण करेंगे। मेला ग्रांउड पर आयोजित कार्यक्रम से श्योपुर जिले के 98.87 करोड़ के विकास कार्यो का लोकार्पण करेंगे तथा 460.40 करोड़ के निर्माण तथा विकास कार्यो का शिलान्यास करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव इस अवसर पर शासन की विभिन्न योजनाओं के तहत हितग्राहियों को लाभान्वित करेंगे। महिला सशक्तिकरण की दिशा में प्रदेश सरकार द्वारा किये जा रहे कार्यो के तहत एनआरएलएम अंतर्गत संचालित स्व-सहायता समूह की महिलाओं को 30 करोड़ 12 लाख रूपये की सीसीएल राशि का चैक सौपेंगे। इसके अलावा मुख्यमंत्री दुधारू गाय प्रतियोगिता पुरस्कार योजना, आचार्य विद्यासागर गौ-संवर्धन योजना, प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना, मुख्यमंत्री जन-कल्याण संबल योजना, प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना, राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम अंतर्गत निःशुल्क उपचार योजना, मुख्यमंत्री कल्याण विवाह सहायता योजना, दिव्यांग विवाह प्रोत्साहन योजना सहित अन्य योजनाओं में हितग्राहियों को हितलाभ का वितरण करेंगे।

बंगाल में फिर रेप, तीन लोगों ने की दरिंदगी

● **दुर्गापुर में मेडिकल स्टूडेंट को कैंपस के बाहर से घसीटकर ले गए** ● **जंगल में दिया वारदात को अंजाम, साथ में दोस्त था, वह भाग गया**

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के पश्चिम बर्धमान जिले के दुर्गापुर में एक मेडिकल स्टूडेंट के साथ शुक्रवार को गैंगरेप हुआ। पीड़ित अपने एक पुरुष दोस्त के साथ डिनर पर गई थी। वापस लौटते समय 3 लोगों ने उनका रास्ता रोका। छात्रा का दोस्त उसे छोड़कर भाग गया, जिसके बाद आरोपियों ने उससे दरिंदगी की। पुलिस ने शनिवार को बताया कि पीड़ित ओडिशा के जलेश्वर की रहने वाली है और दुर्गापुर के एक प्राइवेट मेडिकल कॉलेज में सेकेंड ईयर की स्टूडेंट है। यह घटना मेडिकल कॉलेज कैंपस के बाहर हुई। मेडिकल छात्रा का पास के एक अस्पताल में इलाज चल रहा है। छात्रा रात करीब 8.30 से 9 बजे बाहर गई थी। रात करीब 10 बजे वापस लौटते समय गैंगरेप की घटना हुई। छात्रा के माता-पिता को देर रात मामले की जानकारी दी गई। वे आज सुबह दुर्गापुर पहुंचे और दुर्गापुर न्यू टाउनशिप थाने में अज्ञात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कराया। छात्रा बोली-

आरोपियों ने फोन वापस करने के लिए पैसे मांगे पुलिस के मुताबिक, छात्रा ने बताया कि जब तीन लोगों ने उसका रास्ता रोका, तो उसका दोस्त उसे अकेला छोड़कर चला गया। फिर आरोपियों ने उसका फोन छीन लिया और उसे जंगल में ले गए, जहां तीनों ने उसके साथ रेप किया। आरोपियों ने घटना के बारे में किसी को बताने पर छात्रा को अंजाम भुगतने की धमकी भी दी। फिर उसका मोबाइल फोन वापस करने के लिए पैसे भी मांगे। पुलिस ने बताया कि उन्होंने पीड़ित छात्रा का बयान दर्ज कर लिया है। पुलिस ने बताया कि कल रात पीड़ित की दोस्त से भी पूछताछ की गई है। सीसीटीवी फुटेज की जांच कर रहे हैं। सबूत इकट्ठा करने के लिए एक फोरेंसिक टीम घटनास्थल का दौरा करेगी। अभी तक मामले में किसी आरोपी की पहचान या गिरफ्तारी नहीं हुई है। मेडिकल कॉलेज के कर्मचारियों से भी पूछताछ हो रही है। छात्रा के पिता बोले- कॉलेज में सुरक्षा नहीं है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 35 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 12 अक्टूबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

नागपुर की तर्ज पर संवरेगा ग्वालियर का नौरोगेज म्यूजियम

नई दिल्ली (एजेंसी)। ग्वालियर के तानसेन रोड पर स्थित नैरोगेज म्यूजियम को संवारने का काम जल्द शुरू हो सकता है। कुछ दिन पहले केंद्रीय मंत्री ज्योदिरादित्य सिंधिया ने इस म्यूजियम का निरीक्षण किया था। वहीं, अब रेलवे बोर्ड की एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर हेरिटेज आशिमा मेहरोत्रा और डिप्टी डायरेक्टर हेरिटेज राजेश कुमार ने भी म्यूजियम का दौरा किया है। बीजेपी नेता सुधीर गुप्ता ने रेलवे बोर्ड के चेयरमैन सतीश कुमार को ज्ञापन सौंपा है। इस म्यूजियम को नागपुर के नैरोगेज म्यूजियम की तर्ज पर बनाने का आग्रह किया गया था। रेलवे बोर्ड के अधिकारियों ने इस ज्ञापन को गंभीरता से लेते हुए म्यूजियम का निरीक्षण किया है। एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर आशिमा मेहरोत्रा ने नैरोगेज हेरिटेज संग्रहालय के साथ ही लोको शेड का भी निरीक्षण किया। आशिमा मेहरोत्रा के अनुसार, इस हेरिटेज बिल्डिंग को रेनोवेशन की जरूरत है। इसे संग्रहालय के तौर पर विकसित किया जाएगा। इसके लिए बिल्डिंग में संचालित होने वाले एडीईएन, एडीईई तथा एसीएम आफिस को दूसरी जगह पर शिफ्ट किया जाएगा। सिंधिया स्टेट के दौर में 1885 में निर्मित नैरोगेज म्यूजियम ऐतिहासिक महत्व रखता है। हेरिटेज बिल्डिंग के पास जीर्ण-शीर्ण क्वार्टर को हटाकर वहां म्यूजियम का विस्तार किया जा सकता है। पर्यटक स्थल की तरह यह विस्तार नागपुर नैरोगेज हेरिटेज म्यूजियम की तरह होगा। नैरोगेज म्यूजियम के अलावा रेलवे बोर्ड के अधिकारियों ने घोसीपुरा से लेकर मोतीझील तक नैरोगेज ट्रैक का भी निरीक्षण किया। काफी समय से ट्रेन चलाने की मांग की जा रही है।

- सिंधिया के बाद रेलवे बोर्ड के अधिकारियों ने किया निरीक्षण

आधा कोच पार्सल से भरा, आधे में 100 यात्री भरे थे

स्लीपर में भी जनरल जैसी भीड़, भोपाल स्टेशन पर 'अमृत संवाद' में खुलकर बोले यात्री

भोपाल (नप्र)। भोपाल रेलवे स्टेशन पर शनिवार को आयोजित 'अमृत संवाद' कार्यक्रम में यात्रियों ने रेलवे की सुविधाओं और व्यवस्थाओं को लेकर कई अहम मुद्दे उठाए। किसी ने स्टेशन पर ओवर चार्जिंग की शिकायत की, तो किसी ने स्लीपर कोच में बढ़ती भीड़ पर सवाल उठाया।कुछ यात्रियों ने रेलवे स्टाफ के व्यवहार और ट्रेन में सफाई को लेकर अपने अनुभव साझा किए। कार्यक्रम में मंडल रेल प्रबंधक डीआरएम पंकज त्यागी और सीनियर डीसीएम सौरभ कटारिया ने यात्रियों की बात ध्यानपूर्वक सुनी और जवाब देते हुए कहा कि रेलवे लगातार यात्रियों की सुविधा और सुरक्षा सुधारने की दिशा में काम कर रहा है।

स्लीपर में जनरल जैसी भीड़, अतिरिक्त ट्रेनों की मांग

बेंगलुरु के यात्री मनी कंटा ने बताया कि हाल ही में बेंगलुरु एक्सप्रेस से सफर के दौरान उनका टिकट स्लीपर क्लास का था, लेकिन ट्रेन में इतनी भीड़ थी कि सीट पर कोई और बैठा था। उन्होंने शिकायत की, लेकिन समाधान में आठ घंटे से अधिक समय लगा। स्लीपर कोच में जनरल जैसी भीड़ होती है। यह स्थिति यात्रियों के लिए असुविधाजनक और असुरक्षित है। रेलवे को इस पर नियंत्रण के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए।इस पर डीआरएम पंकज त्यागी ने कहा जितनी मांग है, उतनी ट्रेनें अभी चलाना संभव नहीं है, लेकिन रेलवे लगातार इन्फ्रास्ट्रक्चर बढ़ाने और नई ट्रेनों के संचालन की दिशा में काम कर रहा है। यात्रियों की शिकायत मिलते ही उसे जल्द से जल्द हल करने की कोशिश की जाती है।

आधा कोच पार्सल से भरा, आधे में 100 यात्री

पुणे के पन्ना लाल ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि मैं भोपाल आया और वापसी में नर्मदा एक्सप्रेस से जनरल कोच में बैठा। देखा कि आखिरी बोगी का आधा हिस्सा पार्सल से भरा था और बाकी आधे हिस्से में सौ से ज्यादा यात्री भरे हुए थे।आम आदमी आखिर कैसे सफर करे? उन्होंने आगे कहा कि रेल नीर की बोतल की एमआरपी 14 है, लेकिन ट्रेन में 20 वसूले जा रहे हैं। हमने विरोध किया तो कैंटीन मैनेजर ने माफी मांग ली, लेकिन कार्रवाई नहीं हुई। रेलवे को इस तरह की ओवर चार्जिंग पर सख्ती से कार्रवाई करनी चाहिए।इस पर डीआरएम ने कहा कि रेलवे ऐसी शिकायतों को गंभीरता से लेता है और यात्रियों से अपील की किसी भी तरह की ओवर चार्जिंग या गलत व्यवहार पर चुप न रहें। तुरंत रेलवे हेल्पलाइन या स्टेशन प्रबंधन से शिकायत करें। जब जनता जागरूक होगी, तभी सिस्टम मजबूत बनेगा।

मानवता सीखें रेलवे कर्मचारी, लखनऊ के आनंद चौबे की भावनात्मक अपील

लखनऊ के आनंद चौबे सेना से जुड़े हैं, उन्होंने कहा कि उन्हें रेलवे से कोई शिकायत नहीं है, लेकिन स्टेशन स्टाफ और सुरक्षा कर्मियों को यात्रियों के प्रति थोड़ा मानवीय व्यवहार सीखने की जरूरत है। मेरी सिर्फ एक गुजारिश है स्टेशन पर वेटिंग लाउंज में कोई यात्री अगर सो रहा हो तो आरपीएफ स्टाफ उसे बार-बार न जगाए। उनका काम बैग देखना है, यात्री को जगाना नहीं। यह भी एक तरह से मानवता का हिस्सा है।

इस पर सीनियर डीसीएम सौरभ कटारिया ने जवाब दिया और कहा कि आपकी बात बिल्कुल सही है, यात्रियों को अनावश्यक रूप से परेशान नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन स्टेशन पर कई बार बाहरी या असंबंधित लोग भी आ जाते हैं। ऐसे में आरपीएफ यह सुनिश्चित करता है कि हर व्यक्ति सही यात्री हो। फिर भी, हम निर्देश देंगे कि स्टाफ यात्रियों के साथ विनम्र व्यवहार करें।

सफाई, वेटिंग रूम और जागरूकता पर भी हुई चर्चा

उड़ीसा की सुष्मिता ने कहा कि स्टेशन पर एसी वेटिंग हॉल की स्थिति ठीक नहीं है और शौचालय में तय दर से अधिक वसूली की जा रही है।इस पर डीआरएम ने बताया कि रेलवे ने सभी ट्रेनों में ओबीएचएस सिस्टम लागू किया है, जिसमें सफाईकर्मी हर समय ड्यूटी पर रहते हैं। यात्रियों को अपने अधिकार जानना चाहिए।

अगर सफाई या अन्य सुविधा में कमी दिखे तो तुरंत कॉल करें। रेलवे नियमित सरप्राइज चेक करता है ताकि गुणवत्ता बनी रहे।रेलवे ने कहा इस दौरान रेलवे अधिकारियों ने कहा कि जब जनता जागेगी, तब रेलवे और मजबूत होगा रेलवे की सफलता जनता की सहभागिता पर निर्भर करती है। जब यात्री अपनी शिकायतें दर्ज कराएंगे, तब सुधार तेजी से होंगे। हमारा उद्देश्य हर यात्री को सुरक्षित, स्वच्छ और सहज यात्रा का अनुभव देना है।रेलवे प्रशासन ने बताया कि 'अमृत संवाद' जैसे संवाद कार्यक्रम आगे भी आयोजित किए जाएंगे, ताकि यात्रियों की समस्याओं को सीधे सुना जा सके और उनके समाधान पर तेजी से काम हो।

13 अक्टूबर को सुरों की शाम, यादों का कारवां

भोपाल में अनिल श्रीवास्तव के द्वारा सुरों से होगी किशोर कुमार नाइट

भोपाल (नप्र)। भोपाल में 13 अक्टूबर सोमवार को रविंद्र भवन में किशोर कुमार नाइट का आयोजन होगा। यह विशेष आयोजन माध्या एडवर्टाइजिंग प्रा. लि. और द दंगल स्टोरी के बैनर तले मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति विभाग के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है।

इस संध्या में प्रसिद्ध गायक अनिल श्रीवास्तव अपनी आवाज में किशोर कुमार के सदाबहार गीतों की

झंकार बिखेरेंगे, जबकि 'के फॉर किशोर' और वेस्ट बंगाल बैंड अपने लाइव म्यूजिक से सुरों का जादू बिखेरेंगे।

यह संगीतमय आयोजन 13 अक्टूबर 2025, सोमवार शाम 7-30 बजे से हंसराज ऑडिटोरियम, रविंद्र भवन, भोपाल में आयोजित होगा।'द दंगल स्टोरी' मीडिया और सिद्धार्थ एंटरप्राइजेज आयोजन सहयोगी के रूप में इस शाम को और खास बनाएंगे। मध्या ग्रुप के डायरेक्टर सुशील अग्रवाल ने कहा- किशोर कुमार सिर्फ एक नाम नहीं, बल्कि एक युग हैं, जिन्हें हर पीढ़ी अपने तरीके से महसूस करती है। हमारा उद्देश्य उसी युग को दोबारा जीवंत करना है।

पहले सिंधु समझौता रद्द किया, अब दिया दूसरा झटका

- चिनाब नदी पर सावलकोट प्रोजेक्ट को मिल गई मंजूरी
- पाक के बुरे दिन तय, नदियों के जल पर बढ़ेगा टकराव

श्रीनगर (एजेंसी)। भारत सरकार ने जम्मू-कश्मीर के रामबन जिले में चेनाब नदी पर बनने वाले 1856 मेगावॉट के सावलकट जलविद्युत परियोजना को पर्यावरणीय मंजूरी दे दी है। यह परियोजना रणनीतिक दृष्टि से बेहद अहम मानी जा रही है, खासकर ऐसे समय में जब भारत ने पाकिस्तान के साथ इंडस वाटर ट्रीटी यानी सिंधु जल संधि को निलंबित कर रखा है। करीब चार दशक से अटकी यह परियोजना अब फिर से गति पकड़ने जा रही है। इसे राष्ट्रीय

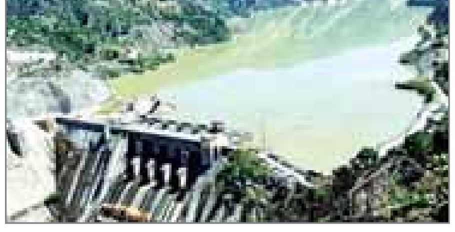

जलविद्युत निगम दो चरणों में बनाएगा। परियोजना की अनुमानित लागत 31,380 करोड़ रुपये है और इसके तहत चेनाब नदी के जल का उपयोग रामबन, रियासी और ऊधमपुर जिलों में किया जाएगा। सावलकट परियोजना में 192.5 मीटर ऊंचा रोलर-कंपैक्टेड ग्रेविटी डैम बनाया जाएगा। इसके साथ ही एक अंडरग्राउंड पावरहाउस (भूमिगत विद्युत गृह) स्थापित किया जाएगा, जिसमें मशीन हॉल, टर्बाइन और जेनरेटर जैसी मुख्य इकाइयां होंगी।

- **1960 की संधि और भारत का अधिकार**- 1960 में साइन की गई इंडस वाटर ट्रीटी के तहत तीन पूर्वी नदियां- रावी, ब्यास और सतलुज भारत को दी गई थीं, जबकि तीन पश्चिमी नदियां- सिंधु, झेलम और चेनाब पाकिस्तान को आवंटित की गईं।हालांकि, भारत को इन पश्चिमी नदियों के जल का सीमित उपयोग गैर-उपभोगी कार्यों जैसे रन-ऑफ-द-रिवर हाइड्रोपावर उत्पादन, नौवहन और मत्स्य पालन के लिए करने की अनुमति है।भारत ने पहलगाम हमले के बाद इस संधि को निलंबित कर दिया था।

ग्वालियर में रेलवे के रिटायर्ड अधिकारी से 3.80 लाख ठगे

सीबीआई ऑफिसर बनकर व्हाट्सएप वीडियो कॉल लगाया, डिजिटल अरेस्ट कर ट्रांसफर कराए रुपए

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में एक बार फिर एक रिटायर्ड रेलवे अधिकारी को डिजिटल अरेस्ट करने का मामला सामने आया है। इस बार शातिर ठगों ने ग्वालियर रेलवे विभाग के चीफ टीएनसी के पद से सेवानिवृत सुधाकर यादव को अपना टारगेट बनाया है। शनिवार दोपहर 2 बजे उनके मोबाइल पर अनजान नंबर से व्हाट्सएप वीडियो कॉल आया। उनको डराया गया कि उनका मोबाइल नंबर मनी लॉन्ड्रिंग केस में ट्रेस हुआ है। कॉल करने वाले ने खुद को सीबीआई ऑफिसर बताया था।

सेवानिवृत 64 वर्षीय सुधाकर यादव पुत्र सूर्यदेव यादव निवासी ईओडब्ल्यू ऑफिस के पास डीबी सिटी ब्लॉक-सी फ्लैट नंबर 6 ने बताया कि रोज की तरह वह सुबह घर पर बैठे हुए थे, तभी उनके मोबाइल पर एक अनजान नंबर से वॉट्सऐप पर वीडियो काल आया और कॉल करने वाले ने उनसे बातचीत करते हुए बताया कि वह एक सीबीआई अधिकारी बताया कि उनका फोन 2 घंटे के अंदर बंद कर दिया जाएगा। जब सुधाकर यादव ने उससे पूछा कि उनका फोन क्यों बंद कर दिया जाएगा तो उसने बताया कि उनके ऊपर मनी लॉन्ड्रिंग का केस है और आपके नाम पर किसी संदीप कुमार नाम के आदमी ने बैंक में खाता खोला है और आपके नाम से फोन उपयोग किया जा रहा है। उसने अपने आपको सीबीआई अधिकारी बताया और वह आईपीएस अधिकारी की यूनिफॉर्म पहने हुए था और बोला में इस केस की जांच कर रहा हूं, आपके नंबर पर बैंक अकाउंट खुला है, जो मनी लॉन्ड्रिंग में उपलब्ध हुआ है, तुम पर केस लगाया जाएगा।

डिजिटल अरेस्ट का यह छठवां मामला- ग्वालियर में पिछले दिनों में डिजिटल अरेस्ट का यह छठवां मामला है। 6 दिसंबर 2024 को जिला मलेरिया अधिकारी डॉ. विनोद दोनेरिया को डिजिटल अरेस्ट कर 50 हजार रुपए ठगे थे।

इससे पहले चार दिन पहले 2 दिसंबर 2024 को बिल्कुल इसी अंदाज में आयुर्वेदिक डॉक्टर को मनी लॉन्ड्रिंग केस में 29 घंटे तक डिजिटल अरेस्ट कर ठगों ने 21 लाख रुपए ठगे थे।

तेजस्वी-राहुल का गेम बिगाड़ेंगे ओवैसी !

- 100 सीटों पर चुनाव लड़ने की तैयारी,पहले से 5 गुना ज्यादा

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) और इंडिया (महागठबंधन) से इतर एक तीसरे मोर्चे की पहल ऑल इंडिया

मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) की ओर से की जा रही है, जिसकी कमान पार्टी प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने खुद संभाली है। एआईएमआईएम ने शनिवार को कहा कि वह आगामी राज्य विधानसभा चुनावों में लगभग 100 सीटों पर चुनाव लड़ने की योजना बना रही है, जो पिछले चुनावों में लड़ी गई सीटों से पांच गुना ज्यादा है। पार्टी के इस ऐलान के बाद तेजस्वी यादव और राहुल गांधी के नेतृत्व वाले इंडिया गठबंधन का गेम बिगड़ सकता है।

इससे अल्पसंख्यक वोटों में बंटवारा होने की संभावना है। हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी ने दावा किया कि उसका लक्ष्य बिहार में एक तीसरा विकल्प तैयार करना है, जहां वर्षों से राजनीति भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए और कांग्रेस-राजद गठबंधन के इर्द-गिर्द घूमती रही है।

- **सीमांचल की पांच सीटों पर मिली थी जीत**- एआईएमआईएम ने 2015 में पहली बार बिहार विधानसभा चुनाव में किस्मत आजमाई थी। पार्टी ने सीमांचल की छह सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे, लेकिन उसे कोई सफलता नहीं मिली। हालांकि, किशनगंज के कोचाधामन विधानसभा सीट से पार्टी के उम्मीदवार और मौजूदा प्रदेश अध्यक्ष अख्तरुल ईमान को करीब 37 हजार वोट मिले थे, जो कुल मतों का लगभग 26 प्रतिशत था।

भारत ने सस्ता तेल देने वाले मित्र रूस से निभाई दोस्ती

- हिंदुस्तान के मोबिल से ताकत पा रहे सुखोई फाइटर जेट, यूक्रेनी लाल

मॉस्को/कीव (एजेंसी)। यूक्रेन के एक थिंक टैंक ने आरोप लगाया है कि भारत, रूसी लड़ाकू विमानों की क्षमता बढ़ाने वाले तेल की सप्लाई कर रहा है। ब्रिटिश अखबार द इंडिपेंडेंट की रिपोर्ट में कीव स्थित एक थिंक टैंक के हवाले से दावा किया गया है कि दिल्ली और मुंबई स्थित आधा दर्जन से ज्यादा भारतीय कंपनियों, आपूर्तिकर्ताओं और निर्माताओं ने 2024 में रूस को ईंधन एडिटिव की सप्लाई की है। थिंक टैंक इकोनॉमिक सिक्योरिटी काउंसिल ऑफ यूक्रेन ने आरोप लगाया है, कि भारत अब रूस के लड़ाकू विमानों के लिए उपयोग होने वाले ईंधन एडिटिव का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता बन गया है। एजेंसी ने अपनी रिपोर्ट में दावा किया है कि दिल्ली और मुंबई स्थित आधा दर्जन से ज्यादा भारतीय कंपनियों ने 2024 में रूस की तरफ से खरीदे गये ईंधन एडिटिव के लगभग आधे हिस्से की आपूर्ति की है। इन एडिटिव्स का इस्तेमाल एविएशन ईंधन में किया जाता है,ताकि विमानों की क्षमता बेहतर हो।

अफगानी मंत्री की प्रेस कान्फ्रेंस में सियासी कोहराम

- महिला पत्रकारों की रोक पर बवाल, विपक्ष हो गया लाल
- प्रियंका बोलीं-महिलाओं का अपमान कैसे होने दिया गया

नई दिल्ली (एजेंसी)। अफगानिस्तान के विदेश मंत्री अमीर खान मुत्तकी की दिल्ली में प्रेस कॉन्फ्रेंस में महिला पत्रकारों की एंट्री पर रोक लगाने पर विवाद हो गया है। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने पीएम मोदी से पूछा- भारत में हमारे ही देश की कुछ सबसे सक्षम महिलाओं का अपमान कैसे होने दिया गया, जबकि महिलाएं ही देश की रीढ़ और गौरव हैं। वहीं, विवाद बढ़ने पर भारत के विदेश मंत्रालय ने कहा कि अफगानिस्तान के विदेश मंत्री की प्रेस कॉन्फ्रेंस में उनका कोई रोल नहीं था। न ही उनकी तरफ से पत्रकारों को बुलाया गया था। यह प्रेस कॉन्फ्रेंस अफगानी एंबेसी में हुई थी। विदेश मंत्रालय ने कहा- जब अफगानिस्तानी मंत्री दिल्ली आए तो मुंबई स्थित अफगानिस्तान के काउंसिल

जनरल ने ही 10 अक्टूबर को चुनिंदा पत्रकारों को आमंत्रण भेजा था। अफगान दूतावास भारत सरकार के अधिकार क्षेत्र में नहीं आता है। बता दें कि अफगानी विदेश मंत्री 9 से 16 अक्टूबर तक भारत दौरे पर हैं। भारत दौरे पर अफगानी मंत्री, सिर्फ पुरुष पत्रकारों से बात की अफगानिस्तान के कार्यवाहक विदेश मंत्री अमीर मुत्तकी 9 अक्टूबर से भारत दौरे पर हैं। उन्होंने शुक्रवार को दिल्ली में भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर के साथ द्विपक्षीय वार्ता की। दोनों मंत्रियों की मीटिंग के बाद कोई जॉइंट प्रेस कॉन्फ्रेंस नहीं हुई। अफगानी मंत्री ने अकेले अफगानिस्तान दूतावास में मीडिया से बात की। हालांकि, इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में केवल चुनिंदा पुरुष पत्रकार और अफगान दूतावास के अधिकारी ही शामिल हुए। प्रेस कॉन्फ्रेंस में एक भी महिला पत्रकार नहीं थी। कई महिला पत्रकारों ने सोशल मीडिया पर दावा किया कि उन्हें एंट्री ही नहीं दी गई। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, मुत्ताकी के साथ आए तालिबान अधिकारियों ने ही ये तय किया था कि प्रेस कॉन्फ्रेंस में कौन शामिल होगा।

राहुल समेत कई विपक्ष नेताओं ने पीएम पर निशाना साधा

राहुल गांधी-पीएम मोदी, जब आप महिला पत्रकारों को सार्वजनिक मंचों से बाहर रखने की इजाजत देते हैं, तो आप भारत की हर महिला को यह बता रहे होते हैं कि आप बहुत कमजोर हैं और उनके लिए खड़े नहीं हो सकते।इस तरह के भेदभाव पर आपकी चुप्पी नारी शक्ति पर आपके नारों की खोखलीपन को उजागर करती है।पी चिदंबरम- मुझे इस बात पर हैरानी है कि अफगानिस्तान के अमीर खान मुत्ताकी की प्रेस कॉन्फ्रेंस में महिला पत्रकारों को शामिल नहीं किया गया। मुझे लगता है कि जब पुरुष पत्रकारों को पता चला कि उनकी महिला सहकर्मियों को नहीं बुलाया गया है, तो उन्हें बाहर चले जाना चाहिए था।महुआ मोइत्रा-एक भारतीय मुस्लिम अपनी छत पर नमाज नहीं पढ़ सकता, पैगंबर से प्यार का इजहार नहीं कर सकता है, लेकिन एक विदेशी मुस्लिम कट्टरपंथी अपनी आस्था के नाम पर हमारी जमीन पर हमारी औरतों के साथ हमारे कानूनों और मूल्यों का उल्लंघन करते हुए भेदभाव कर सकता है।इसके बारे में जरा सोचिए।

जजों और वकीलों के अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में व्यापार, विवाद निपटाने के कानून पर चर्चा

मुख्यमंत्री ने कहा, न्याय की देवी की आंखों की पट्टी सुप्रीम कोर्ट ने खोली

इंदौर। डेनमार्क के पेटेंट और ट्रेडमार्क ऑफिस की मदद से मध्य प्रदेश हाईकोर्ट और राज्य न्यायिक अकादमी ने इंटरनेशनल सेमिनार का आयोजन किया। यह कार्यक्रम 11 अक्टूबर से इंदौर के ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में शुरू हुआ है, जो दो दिन चलेगा। समापन सत्र 12 अक्टूबर को होगा। इसमें प्रदेश हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश संजीव सचदेवा और अन्य जज शामिल होंगे। अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधि भी इस सत्र का हिस्सा बनेंगे।

इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का शीर्षक है 'विकासशील क्षितिज- डिजिटल दुनिया में वाणिज्यिक और मध्यस्थता कानून की जटिलता और नवाचार।' शनिवार को मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव और सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस जितेंद्र कुमार माहेश्वरी, अहसानुद्दीन अमानुल्लाह, राजेश बिंदल और अरविंद कुमार की मौजदूगी में सेमिनार की शुरुआत हुई। इस कार्यक्रम का मकसद है कि वकील, जज और कानून के छात्र डिजिटल जमाने में बदलते व्यापारिक कानून और विवाद सुलझाने के तरीकों को बेहतर तरीके से समझ सकें।

कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के जज, नामित वकील और विधि छात्र हिस्सा ले रहे हैं। इसमें चर्चा होगी कि डिजिटल तकनीक, डेटा आधारित बिजनेस और अंतरराष्ट्रीय लेन-देन के कारण कानून में कौन-कौन सी नई चुनौतियां सामने आ रही हैं। इस संगोष्ठी का एक और उद्देश्य यह भी है कि भारत और यूरोप के न्यायिक सिस्टम के बीच सहयोग को बढ़ाया जाए। साथ ही, तकनीकी बदलाव के साथ हमारे कानून भी कैसे आगे बढ़ें, इस पर भी विचार होगा।

दुनिया में भारतीय प्रजातंत्र का मान बढ़ा

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि के रूप में मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा कि अब समय बदल गया। न्याय की देवी की आंखों की पट्टी खोलने का सौभाग्य सुप्रीम कोर्ट से प्राप्त हुआ। न्याय की देवी खुली आंखों से न्याय कर सकती हैं। हमारे यहां तो न्याय की प्राचीन परंपरा है। इस संगोष्ठी के लिए राजा विक्रमादित्य के प्रदेश को चुना गया है। यह हमारे लिए गर्व की बात है। मध्य प्रदेश में भी न्याय परंपरा पुरातन है।

उन्होंने अयोध्या फैसले का जिक्र करते हुए कहा कि जिस विषय को लेकर समाज में अलग-अलग प्रकार की धाराएं बहती थीं। ज्वलंत विषय को टालने की परंपरा थी। उसे टालने के बजाए सीना ठोक कर फैसला देना और उस फैसले को लागू कराकर भारत के प्रजातंत्र का मान दुनिया में बढ़ाया गया। अयोध्या जैसा फैसला सुप्रीम कोर्ट ने करके दिखाया। यह हम सबका सौभाग्य है। उन्होंने कहा कि अब डिजिटल युग है। एआई जैसे माध्यम हैं, लेकिन न्याय की आत्मा वही है। वह बदलने वाली नहीं है। समानता, पारदर्शिता, विनम्रता व समय पर न्याय की प्राप्ति की दरकार हमेशा रहेगी।

पति से प्रताड़ित सुमन ने पांच माह के बेटे को गोद पर बैठाकर लगाई आग

शुगर थी पर पति ने ध्यान नहीं रखा, कई महिलाओं से संबंध

इंदौर। पारिवारिक कलह से परेशान होकर एक महिला ने अपने पांच महीने के बेटे को गोद में लेकर खुद पर एसिड डाला और फिर आग लगा ली। इस घटना में दोनों की मौत हो गई। महिला करीब ढाई घंटे तक तड़पती रही, लेकिन उसे बचाया नहीं जा सका। यह घटना राऊ इलाके की न्यू ब्रज विहार कॉलोनी की है।

25 वर्षीय सुमन ने अपने पांच महीने के बेटे प्रथम को गोद में लेकर खुद पर एसिड छिड़का और फिर आग लगाकर आत्महत्या कर ली। दोनों को झुलसी स्थिति में परिजन चोइथराम अस्पताल लेकर पहुंचे। डॉक्टरों ने पूरी कोशिश की, लेकिन गुरुवार रात मासूम प्रथम की मौत हो गई, जबकि शुक्रवार दोपहर सुमन ने भी दम तोड़ दिया। पुलिस ने दोनों शवों को जिला अस्पताल भेजकर पोस्टमॉर्टम कराया गया। बाद में उनका अंतिम संस्कार किया गया। बताया गया कि सुमन का पति कैलाश उसे लंबे समय से प्रताड़ित कर रहा था। कैलाश के अन्य युवतियों से संबंध थे, इस कारण दोनों के बीच अकसर झगड़े होते थे। सुमन ने कई बार उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन विवाद लगातार बढ़ता गया। सुमन की तबीयत भी खराब रहती थी उसे शुगर की समस्या थी, फिर भी पति उसका ध्यान नहीं रखा।

जब सुमन ने आत्महत्या की, उस समय कैलाश काम पर था। पुलिस को सूचना मिलने पर राऊ थाना प्रभारी और एसीपी गांधी नगर नीति सक्सेना मौके पर पहुंचीं। उन्होंने बताया कि चोइथराम अस्पताल से दो झुलसे शवों के पहुंचने की जानकारी मिली थी। इस पर मर्ग कायम कर लिया गया है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। सुमन भोपाल की रहने वाली थी।

15 शिकायतों का निराकरण किया गया

इंदौर। ट्रेफिक पुलिस की हेल्पलाइन नंबर पर गुरुवार को 24 शिकायतें दर्ज हुई थी। इनमें से 15 शिकायतों का निराकरण कर दिया गया है। हेल्पलाइन पर मोडिफाइड सायलेंसर लगाने पर बाइक का चालान बनाया। नाश्ते-चाय की दुकानों के आगे बेतरतीब वाहन खड़े होने से यातायात अवरुद्ध होने, लोडिंग और ईरिक्शा के रोड़ में बेतरतीब खड़े होने कारण जाम, वाहन चालकों द्वारा यातायात नियमों का उल्लघंन कर तेज गति से वाहन चलाना, रांग साइड वाहन चलाकर वनवे का पालन नहीं करना, नो-पार्किंग में रोड़ साइड और दुकानों के सामने खड़े वाहनों से यातायात अवरुद्ध होना तथा जाम लगने के संबंध में शिकायतें आई थी। इसी प्रकार नो इंट्री में प्रवेश करने पर 17 ट्रकों पर कार्रवाई कर चालान वसूला गया।

एक लाख की स्मैक दो युवकों से जब्त

इंदौर। पुलिस के सारे प्रयासों के बाद भी मादक पदार्थों की खरीद फरोख्त कम नहीं हो रही है। इसी क्रम में तिलक नगर पुलिस ने स्कीम नंबर 140 के सांची पाइंट से बिना नंबर की बाइक पर जा रहे दो बदमाशों रोहन सरकार निवासी पिपलियाहाना तालाब की पाल तथा आकाश पाल निवासी पिपलियाहाना को पकड़ा। उनके पास से 15.84 ग्राम स्मैक(कीमत एक लाख रुपए) की जब्त की। आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

बदमाश ने गैस सुधारने के बहाने माल उड़ाया

इंदौर। गैस सुधराना एक परिवार को उस समय भारी पड़ गया, जब कारीगर नकदी और जेवर लेकर चंपत हो गया। घटना रावजी बाजार थाना क्षेत्र के प्रकाश का बगीचा इलाके की है। फरियादी श्रीकांत चौरसिया ने बताया कि मंगलवार को घर पर अज्ञात युवक आया था। उसने मेरे बेटे से कहा कि तुम्हारे मकान मालिक ने गैस सुधारने के लिए बुलवाया है। इस पर बेटे ने मकान मालिक को फोन लगाने गया, तभी मौका देखकर बदमाश गैस टंकी, मंगलसूत्र, कान की बाली और 20 हजार नकद लेकर भाग गया। इसी तरह संतोष अग्रवाल निवासी न्यू श्रीकृष्णा नगर कॉलोनी के घर में भी चोरों ने हाथ साफ किया। फरियादी परिवार सहित बाहर गए थे। इसी दौरान अज्ञात बदमाशों ने ताला तोड़कर घर में रखी ज्वेलरी और नकदी पर हाथ साफ कर दिया।

लापता रिक्शा चालक की लाश मिली

इंदौर। 4 दिन पहले लापता हुए रिक्शा चालक की लाश झाड़ियों में पड़ी मिली। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है। खजराना पुलिस के अनुसार, दीपक पिता गोपाल बोडाना (45) निवासी खजराना आईडीए बिल्डिंग 5 अक्टूबर से लापता थे। परिवार वालों ने खजराना उनकी गुमशुदगी रिपोर्ट भी दर्ज कराई थी। परिजनों की मानें तो दीपक कई दिनों से बीमार था। मृतक के शरीर पर चोट के निशान नहीं पाए गए हैं, जिससे यह मामला आत्महत्या का लग रहा है। पुलिस ने शव को पीएम के लिए एमवाय भेज दिया है।

धक्का लगने पर हत्या करने वाले 3 आरोपियों को पकड़ा

कोर्ट ने 17 तक रिमांड पर सौंपा, एक हुआ फरार

इंदौर। बर्थडे पर शराब पार्टी में दो युवकों का चार बदमाशों से टल्ला लगने की बात पर विवाद हो गया था। इसके बाद बदमाशों ने चाकू से एक युवक पर हमला किया था। कुछ देर बाद गंभीर घायल युवक ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया था। मामले में विजयनगर पुलिस ने गुरुवार को एक आरोपी को पकड़ लिया था।

दो आरोपी शुक्रवार को कोर्ट में पेश हुए। कोर्ट ने तीनों को 17 अक्टूबर तक रिमांड पर सौंप दिया है। आरोपियों का एक साथी घटना के बाद से फरार चल रहा है, जिसकी तलाश में तीन टीमें लगी हुई है।

पुलिस के मुताबिक, स्कीम नंबर 54 में वाइन शॉप के पास शनिवार रात 19 वर्षीय पार्थ दीवान की बदमाशों ने चाकू हत्या कर दी थी। पुलिस जांच में सामने आया कि इस हत्याकांड का मुख्य आरोपी निकुंज उर्फ कृष्णा गुप्ता है, जो उज्जैन के कुख्यात गैंगस्टर दुर्लभ कश्यप को अपना रोल मॉडल मानता है। घटना के बाद पुलिस ने इलाके में लगातार दबिश दी, जिसके बाद मुख्य आरोपी निकुंज गुप्ता और उसके साथी निकुंज कोठे ने कोर्ट में सरेंडर कर दिया। वहीं, एक अन्य फरार आरोपी की तलाश में पुलिस की टीम जुटी हुई है।

हत्या कर चुका है आरोपी

निकुंज हीरानगर में हत्याकांड में भी शामिल रह चुका है। कुछ समय पहले ही वह जेल से रिहा हुआ था और लगातार असामाजिक तत्वों के संपर्क में था। पार्थ दीवान से उसकी बहस सिर्फ कंधा टकराने को लेकर हुई थी, जिसके बाद वारदात को अंजाम दिया गया। पुलिस ने घटनास्थल पर लगे क्यूआर कोड से वाइन शॉप पर पेमेंट करने वाले युवक लविश वाडे को हिरासत में लिया था। पूछताछ में लविश ने खुलासा किया कि पार्थ को चाकू मारने वाला निकुंज ही था।

बार और क्लब खोलकर 3.60 करोड़ की ठगी, मुनाफा में भी हिस्सा नहीं

पार्टनरशिप कर पैसा लिया और पलट गए, 3.60 की ठगी की

इंदौर। क्लब और बार खोलने के नाम पर करोड़ों की ठगी के मामले में क्राइम ब्रांच ने चार लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की। यह शिकायत पुणे के कारोबारी अंकुर बग्गा ने की थी। उन्होंने बताया कि गौरव माखीजा, उनकी पत्नी रिया, करण शर्मा और उसकी पत्नी श्रेया ने मिलकर उनके और उनकी पत्नी के साथ 3 करोड़ 60 लाख रुपए की धोखाधड़ी की है।

साल 2021 में अंकुर ने बताया कि गौरव, जो उनके भाई का साढ़ू है और करण शर्मा ने क्लब और बार खोलने का आइडिया दिया। उन्होंने बताया कि इस बिजनेस में 1.60 करोड़ रुपए लगेंगे और सालाना करीब 8 करोड़ की कमाई होगी। अंकुर और उनकी पत्नी दिव्या ने इस प्रस्ताव पर सहमति दी और 75 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ पार्टनरशिप डीड बनाई। क्लब खोलने के लिए क्लिफ्टन कॉरपोरेट, एबी रोड रोड स्थित सीसी बिल्डिंग में नगर निगम से अनुमति ली। इसके बाद गौरव और करण ने अंकुर और उनकी पत्नी के खाते से कुल 2 करोड़ 40 लाख रुपए लिए।

मुनाफा हुआ, पर हिस्सा नहीं मिला

क्लब 6 अक्टूबर 2023 को शुरू हुआ और 31 मार्च 2024 तक चला। चार्टर्ड अकाउंटेंट की रिपोर्ट के मुताबिक इस दौरान 6 करोड़ 33 लाख रुपए का कारोबार हुआ और करीब 1 करोड़ 35 लाख रुपए का प्रॉफिट हुआ। इसमें अंकुर के हिस्से का मुनाफा 67.83 लाख रुपए बताया गया, जो उन्हें नहीं दिया गया। सिर्फ 22 लाख रुपए अंकुर के और 21 लाख रुपए उनकी पत्नी के खाते में डाले गए। इसके अलावा, समझौते के अनुसार 2.40 करोड़ रुपए के निवेश पर ब्याज सहित 52.80 लाख रुपए लौटाने थे, जो नहीं लौटाए गए।

लाइसेंस भी फर्जी साइन कर लिया – बड़ा आरोप यह भी है कि 15 मार्च 2025 को आबकारी विभाग से बार का लाइसेंस लेने के लिए फर्जी हस्ताक्षर किए। जबकि, उस वक्त अंकुर दुबई में और दिव्या मुंबई में थीं। शिकायत में कहा गया कि इन सबके जरिए कुल मिलाकर 3.60 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी की गई। अब क्राइम ब्रांच ने गौरव, करण और उनकी पत्नियों के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू की है।

12 वॉलिंटियर्स की तीन इमली से अग्रसेन चौराहा तक तैनाती

दोपहर 12 से रात 8 तक ट्रैफिक पुलिस का साथ देंगे

इंदौर। शहर में सुगम और सुरक्षित यातायात व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से ट्रैफिक पुलिस के साथ अब ट्रैफिक मार्शल वॉलंटियर्स भी प्रमुख मार्गों पर सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। पुलिस कमिश्नर के निर्देशन में यातायात प्रबंधन को और बेहतर बनाने के लिए यह पहल की गई है। प्रभारी पुलिस उपायुक्त आनंद कलादगी ने ट्रैफिक मार्शल वॉलंटियर्स को उनके कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे में विस्तार से समझाइश दी गई। इन वॉलंटियर्स की तैनाती तीन इमली चौराहा, नवलखा चौराहा और अग्रसेन चौराहा पर की गई है। ये वॉलंटियर्स प्रतिदिन दोपहर 12 बजे से रात 8 बजे तक ट्रैफिक पुलिस के साथ मिलकर यातायात व्यवस्था को नियंत्रित करेंगे। विशेष रूप से तीन इमली से अग्रसेन चौराहा मार्ग पर अनाज मंडी और लोहा मंडी की ओर जाने वाले ट्रकों और भारी वाहनों को प्रशासन द्वारा आवागमन की अनुमति दी गई है।

इस दौरान ट्रैफिक व्यवस्था को सुचारू बनाए रखने के लिए ट्रक ऑपरेटर, ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन एवं व्यापारियों के सहयोग से 12 ट्रैफिक मार्शल वॉलंटियर्स की व्यवस्था की गई है। सभी वॉलंटियर्स को प्रशिक्षित करने के बाद संबंधित पॉइंट्स पर तैनात किया गया है, ताकि भारी वाहनों की आवाजाही के दौरान नागरिकों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो और ट्रैफिक व्यवस्था सुचारू रूप से संचालित हो सके।

हाईकोर्ट का आदेश, सवारी ले जाने और माल ढोने वाले टू व्हीलर पर लगेगी पीली नंबर प्लेट

इंदौर। सवारियों को लाने-ले जाने वाली और सामानों को पहुंचाने में उपयोग होने वाली बाइकों को भी व्यावसायिक वाहनों की तर्ज पर रजिस्टर्ड करना होगा। जैसे अन्य व्यवसायिक वाहनों पर पीली नंबर प्लेट लगती है, ऐसे दुपहिया वाहनों पर भी पीली नंबर प्लेट लगेगी। ये निर्देश शुक्रवार को हाईकोर्ट ने जारी किए। चीफ जस्टिस संजीव सचदेवा और विनय सराफ की युगलपीठ ने राज्य सरकार को निर्देश दिए कि नियम के पालन में किसी तरह की ढील-पोल न हो। हाईकोर्ट में छात्र आयुष जाट द्वारा दायर याचिका पर युगल पीठ ने सुनवाई की। अभिभाषक विकास यादव के अनुसार याचिकाकर्ता ने मांग की थी कि शहर में यात्रियों को लाने व ले जाने के लिए बाइक का इस्तेमाल हो रहा है, जबकि ये बाइक निजी उपयोग के लिए रजिस्टर्ड हैं। ऐसे में इनकी दुर्घटना होने पर सवारियों की सुरक्षा को लेकर कोई व्यवस्था नहीं है। कोर्ट ने इस मामले में सुनवाई करते हुए सरकार से जवाब मांगा था।

नियमों का पालन करने का आदेश जारी किया- शुक्रवार को सुनवाई के दौरान कोर्ट ने सवाल उठाया था कि सवारी वाहन उपलब्ध कराने वाली कंपनियां तो पहले से ही रजिस्टर्ड हैं, जिस पर कोर्ट को बताया गया कि कंपनियां रजिस्टर्ड हैं लेकिन उनमें चलने वाले वाहन कमर्शियल वाहन की श्रेणी में शामिल नहीं हैं। जबकि मोटर व्हीकल एक्ट में साफ है कि जो वाहन सवारियों को ढोते हैं, उन्हें कमर्शियल वाहन के तौर पर रजिस्टर्ड होना जरूरी होगा। इसके बाद कोर्ट ने सरकार को ऐसे सभी वाहनों को कमर्शियल वाहन के तौर पर रजिस्टर्ड करने और उनसे जुड़े सभी नियमों का पालन कराने के लिए आदेश जारी किया है।

कई व्यापारियों का माल लेकर फरार ट्रक ड्राइवर गिरफ्तार

चोरी के सामान के साथ चार आरोपी भी पकड़े गए

इंदौर। मिनी ट्रक में व्यापारियों का माल लेकर फरार हुए ड्राइवर और उसके तीन साथियों को रावजी बाजार पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी माल बेच चुके थे, लेकिन पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए पूरा माल बरामद कर लिया है। घटना 24 सितंबर की है।

राऊ थाना क्षेत्र के यादव रोड लाइन्स के ट्रांसपोर्टर मनीष यादव ने इंदौर से मानपुर के लिए मिनी ट्रक रवाना किया था। ट्रक चालक विशाल उर्फ सोनू पिता श्यामसिंह तोमर निवासी बेगमखेड़ी कनाड़िया रास्ते में माल सहित गायब हो गया था। काफी देर तक जब विशाल मानपुर नहीं पहुंचा तो मनीष ने चालक को कॉल किया। विशाल ने काल रिसीव नहीं किया, तब फरियादी ने मानपुर में जिसे माल भेजना था, उस व्यापारी से बात की तो उसने माल डिलीवर नहीं होने की बात कही। इसके बाद वह रिपोर्ट लिखाने राजेन्द्र नगर थाने पहुंचा, लेकिन पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज करने से मना कर दिया। दो दिन की भागदौड़ के बाद रावजी बाजार थाने में एफआईआर दर्ज की गई। प्रकरण दर्ज होते ही पुलिस ने आरोपी को पकड़ने टीम गठित की।

ऐसे पकड़े गए आरोपी

विशाल की तलाश में जुटी पुलिस टीम को मानपुर रोड पर पेट्रोल पंप के सीसीटीवी फुटेज मिले, जिसमें चालक विशाल ट्रक से उतरकर पैदल जाता नजर आया। इसके बाद उसकी मोबाइल लोकेशन ट्रेस की गई और मुखबिर की मदद से उसे धरदबोचा गया। पुलिस ने पूछताछ के बाद उसके तीन और साथियों सुनील पिता कड़वाजी सिधिया निवासी बेगमखेड़ी, गोलू उर्फ सुनील पिता गिरधारी वर्मा निवासी बेगमखेड़ी थाना कनाड़िया और बिट्टू पिता संजय गंगारे निवासी पीथमपुर को भी गिरफ्तार किया। विशाल ने ट्रक खराब होने का बहाना बनाया और ट्रांसपोर्ट मालिक लोकेशन बताई। लोकेशन मिलने पर जब मनीष वहां पहुंचा तो चाबी लगा ट्रक तो मिला लेकिन माल गायब था। बाद में सीसीटीवी फुटेज में विशाल को ट्रक खाली करते हुए देखा गया। ट्रक में शंकर ट्रेडर्स, जय अंबे ट्रेडर्स, सिंध ट्रेडर्स, सुभाष फरूड्स, सच्चानंद ट्रेडर्स, अग्रवाल फर्नीचर, नितिन ट्रेडर्स, रानी इलेक्ट्रिक और अन्य फर्मों का माल था। आरोपी विशाल ने बताया कि उसने माल की जानकारी अपने दोस्तों को दी और सभी माल बेचने ग्राहक ढूंढने लगे, लेकिन पुलिस की सख्ती से वे सफल नहीं हो पाए। विशाल ने ट्रक का माल अपने घर के पास छुपाकर रख दिया था, जिसे पुलिस ने बरामद किया है।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।

फिक्शन और मायथोलॉजी से अनुप्रेरित 'कांतारा चेप्टर वन'

फिल्म वहीं से शुरू होती है जहां पिछला भाग खत्म हुआ था। एक बच्चा सवाल पूछता है, जिसके जवाब में उसे एक दंत कथा सुनाई जाती है और यही कहानी का आग़ाज़ है। कहानी कदंब साम्राज्य के दौर की है। एक तरफ ईश्वर के मधुबन में भगवान शिव के उपासक कांतारा गाँव वाले रहते हैं दूसरी तरफ राजा विजयेंद्र का बांगरा साम्राज्य है। अविश्वसनीय लगने वाली यह कहानी कुल मिलाकर फिल्म की शक्ल में फिक्शन और मायथोलॉजी का रचना संसार रचती है। अक्सर ऐसा होता है कि किसी भी फिल्म का पहला पार्ट सफल होने के बाद दूसरे पार्ट के लिए जब फिल्म का बजट बढ़ता है तो निर्माता सब हॉच पॉच कर देते हैं।

शृँखलाबद्ध फिल्मों और वेबसिरीज़ के साथ दर्शक काफी असहज महसूस करते हैं क्योंकि उसमें पिछले पार्ट की कहानी को इस पार्ट की कहानी के साथ जोड़ने यानी को-रिलेट करने में उन्हें अपनी याददाश्त पर जोर देनाझहोता है। फिल्म- ' कांतारा चैप्टर - वन ' के साथ भी दर्शक यही असहजता महसूस कर रहे हैं। अच्छी बात यह है कि' कांतरा चेप्टर-वन ' की कहानी वहीं से शुरू होती है जहाँ तीन साल पहले वर्ष 2022 में रिलीज हुई फिल्म - ' कांतारा ' की कहानी खत्म हुई थी। क्या यह फिल्म भी पिछली फिल्म की तरह बॉक्स ऑफिस पर ब्लाकबस्टर साबित होगी इस सवाल का जवाब यह है कि ' कांतारा चैप्टर वन ' की कलेक्शन की रफ्तार थम ही नहीं रही है फिल्म तीन सौ करोड़ के क्लब में शामिल हो चुकी है गोया ऋषभ शेट्टी की यह फिल्म खासा कारोबार भी कर रही है।

फिल्म वहीं से शुरू होती है जहां पिछला भाग खत्म हुआ था। एक बच्चा सवाल पूछता है, जिसके जवाब में उसे एक दंत कथा सुनाई जाती है और यही कहानी का आग़ाज़ है। कहानी कदंब साम्राज्य के दौर की है। एक तरफ ईश्वर के मधुबन में भगवान शिव के उपासक कांतारा गाँव वाले रहते हैं दूसरी तरफ राजा विजयेंद्र का बांगरा साम्राज्य है। अविश्वसनीय लगने वाली यह कहानी कुल मिलाकर फिल्म की शक्ल में फिक्शन श्रौर मायथोलॉजी का रचना संसार रचती है। अक्सर ऐसा होता है कि किसी भी फिल्म का पहला पार्ट सफल होने के बाद दूसरे पार्ट के लिए जब फिल्म का बजट बढ़ता है तो निर्माता सब हॉच पॉच कर देते हैं। शुक्र है - ' कांतारा चैप्टर वन' के साथ ऐसा नहीं हुआ।

फिल्म की शुरुआत बढ़िया है। हाँ, बीच में कहीं-कहीं निर्यात निर्देशक भटके जरूर हैं पर अन्त में उन्होंने एक बार फिर से फिल्म को सम्भाल लिया है।

अभिनय के नजरिए से ऋषभ शेट्टी ही पिछली फिल्म की तरह इस फिल्म की भी जान हैं। उनका स्क्रीन प्रेजेंस कुछ अलग ही होता है। एक्शन सीन में भी वो कमाल कर जाते हैं। रुद्र गुलिगा के रूप में जो वो करते हैं उसे देखकर वाकई रोम रोम सिहर उठता है। ऐसा महसूस होता है कि उनको जन्म इसी किरदार को निभाने के लिए हुआ था। यह कहना गलत नहीं होगा कि उनका अभिनय पिछले भाग से बहुत ज्यादा बेहतर है।रुक्मिणी पूरी फिल्म में खूबसूरत लगी हैं। उन्होंने भी उतना कुछ ही किया है जितना वो? कर सकती थी जो अच्छा बन पड़ा है। गुलशन देवैया यहां अपना काम बखूबी कर गए। उन्हें देखकर मजा आता है। शारीरिक तौर पर वो फिल्म में ऋषभ से कमजोर लगेंगे पर उनके अभिनय में दम है। बाकी कलाकारों ने सही साथ दिया है।

ऋषभ ने इस फिल्म में प्रमुख किरदार में अभिनय करने के साथ ही निर्देशन भी किया है और ऐसा करना आसान नहीं होता पर ऋषभ ने एक बार फिर इस विधा में कमाल किया है। फिल्म के कई सीन उन्होंने बेहद खूबसूरत बुने हैं। हालांकि, वो कुछ चीजें और बेहतर कर सकते थे। सेकंड पार्ट के बाद कुछ पल के लिए फिल्म नीरस होती है, जिसे वो फिल्म की लंबाई कम करके बचा सकते थे। बहरहाल, कुल मिलाकर ऋषभ का काम बढ़िया है। 'कांतारा' के पिछले भाग की आत्मा उन्होंने इस फिल्म में भी बरकरार रखी। जंगल का एक्शन सीक्वेंस और रुद्र गुलिगा के कई सीन अच्छे बन पड़े है।साउथ की फिल्मों और कांतारा सीरीज के फैन हैं तो आपको यह सवाल करना ही नहीं चाहिए कि देखें या नहीं। हां, ज्यादा एक्शन वाली फिल्में पसंद नहीं करते तो विचार कर सकते हैं, क्योंकि इस बार स्केल बड़ा है तो एक्शन भी बड़ा और ज्यादा है। पोस्ट क्रेडिट सीन के लिए इंतजार न करें। एक और दंत कथा सुनने के लिए तैयार रहें।

राजकुमार कुम्भज की तीन कविताएं

अपनी-अपनी आदत अनुसार

अपनी -अपनी आदत अनुसार
बच्चों ने खींच दी हैं कुछ लकीरें रॅंग-बिरॅंगी
उन तमाम -तमाम कच्ची - पक्की
सड़कों पर,दीवारों पर

जिन्हें बनाया है कुछेक ठस
और ठोस मसख़रे कारीगरों ने
अपने भुगतानकर्ता आक़ाओं के
सनसनाते सनकी आदेशों पर
रोटी -बोटी के छूत जैसे चक्रव्यूह में
बच्चों द्वारा लकीरें खींचने से ज़रा पहले-पहले तक
वहॉं खड़े - खड़े मूतते थे
कुछेक ढोरनुमा अभद्रजन
और अपने-अपने गुप्तॉंगों को
अपनी-अपनी अशुभ आदत अनुसार
करते हुए हस्तप्रक्षालन.

पहले मैं फिर दु:ख

पहले आऊॅंगा मैं फिर आंगे दुग्ख
हरी घास पर रेंगते कीड़े भी हो सकते हैं
अर्थवान और आसपास
उनकी सेवां नहीं जानता रेडक्रास

तो करूॅं क्या मैं
रोज़ - रोज़ मरता हूॅं,
तो क्या फिर-फिर मरूॅं रोज़ -रोज़
लाशें बिछी पड़ी हैं सड़कों पर
और-और जुलूस -सभा भी
बंद हैं दरवाज़े, अर्थादेश पहुॅंचते नहीं हैं
ग़रीबों के गंतव्य तक
परिवार -नियोजन के पोस्टरों से
भरा पड़ा है शहर.

है ज़िम्मेदारी दोस्तों की भी

साबित करो, साबित करो
कि दुश्मनों का बढ़ते जाना दरअसल
होता नहीं है दोस्तों का घटते जाना

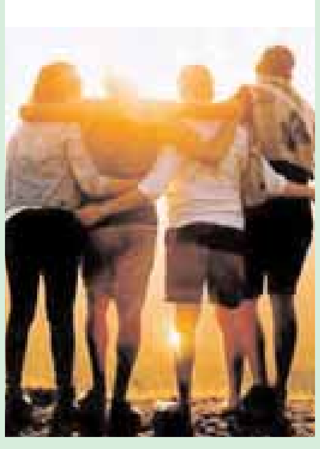

अगर सच बोलने की आदत
मुझे करती जा रही है हर कहीं अकेला
और बेहद अकेला
तो क्यों और कैसे नहीं है ज़िम्मेदारी
मेरे साथ -साथ, मेरे अपने ही
दोस्तों की भी
है ज़िम्मेदारी दोस्तों की भी
सुलगा सिगरेट.

मौसम आएंगे जाएंगे, हम तुमको भूल न पाएंगे

स्मृति शेषः भारतेंदु मिश्र

संतोष कुमार द्विवेदी

समीक्षक

गुरुवार शाम से भारतेंदु मिश्र की याद लगातार घनीभूत होती रही। रात 9 बजे भोजन के लिए बैठा तो यूं ही उनकी किताब 'कालाय तस्मै नमः' का कवर पृष्ठ आंखों में तैर गया लेकिन मुझ मूरख को इस बात की कहीं से कल्पना तक नहीं हुई कि यह अंतिम विदाई का संकेत था। शुक्रवार सुबह जब खबर मिली कि वे नहीं रहे। तो स्तब्ध रह गया। उनका नहीं रहना हिंदी साहित्य जगत की बड़ी क्षति है।

करीब 10 वर्षों का उनके साथ गहरा रचनात्मक और पारिवारिक मैत्री संबंध रहा।

2017 में संभवतः वे पहली बार गीत ग़ज़ल की दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में उमरिया आए। परम आनंदित हुए। मेरे अनुरोध पर उन्होंने वरिष्ठ नवगीतकार रामनिहोर तिवारी जी के नवगीत संग्रह 'आईने अंधरा गए' की भूमिका लिखी। विमोचन समारोह में आने का वायदा पक्का था लेकिन जब मैंने फोन किया तो उन्होंने कहा अस्पताल में हूं और कैंसर सस्पेक्टेड है। मैं अवाक था। अंततः कैंसर की पुष्टि हो गई। लंबा और खर्चीला इलाज लेकिन उन्होंने अत्यंत धीरज और पूरी मानवीय गरिमा के साथ उसका मुकाबला किया और अंत तक सक्रिय बने रहे। कोविड के बाद मैं दिल्ली गया तो उनसे न मिलूं ऐसा हो नहीं सकता था। फोन किया और और मिलने पहुंच गया, देखा वे घर के बाहर नीचे सड़क पर प्रतीक्षा में खड़े थे। मिलकर बेहद खुश हुए। मैंने गौर से देखा बीमारी से उनकी काया अवश्य जर्जर हुई थी लेकिन चेहरे की चमक वही थी। आवाज मद्धिम हो गई थी लेकिन उसकी खनक वही थी।

उमरिया से उनके साथ की कितनी यादें जुड़ी हैं। रामनिहोर तिवारी जी के नवगीत संग्रह 'आईने अंधरा गए' में बीमारी के कारण नहीं आ पाने का उन्हें मलाल था और तभी कहा था उन्होंने देखो अगर तबियत सुधरी तो एक बार उमरिया परिवार सहित जरूर आऊंगा। मुझे ये बात याद थी।

जब रामनिहोर तिवारी की एक दूसरी पुस्तक 'आपकी ख़िदमत में' आई तो मुझे लगा इसके विमोचन का अवसर भारतेंदु जी को बुलाने का बेहतर मौका हो सकता है। मैंने अनुरोध किया तो वे बहुत खुश हुए। सपत्नीक आए। उनकी साली साहिबा जो खुद लेखक आलोचक हैं डॉ रश्मिशील वे भी साथ आईं। विमोचन तो ऐतिहासिक हुआ ही क्योंकि उनके साथ उस आयोजन में ख्यात कवि आलोचक डॉ जीवन सिंह जी और सुविख्यात चिंतक आलोचक डॉ. मोहन श्रोत्रिय जी भी शामिल हुए थे। आयोजन के बाद हमलोगों ने बांधवगढ़ भ्रमण किया। खूब आनंदित होकर गए। बोले इस वन प्रांतर की शुद्ध हवा फेफड़े भरने से प्राण पुष्ट हुए हैं।

उन्होंने बहुत ही प्रामाणिक सुंदर और सार्थक जीवन जिया। उनका जीवन सफर अकादमिक और रचनात्मक उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा है। वे जितने सशक्त कवि और गीतकार थे उतने ही सशक्त निबंधकार और आलोचक भी।

उनके गीत नवगीत की दुनिया दशकों तक फैली है। भारतेंदु मिश्र की गीत सर्जना को डॉ रश्मिशील ने 5 खंडों में विभक्त किया है। बांसुरी की देह, बाकी सब ठीक है, मौत के कुएं में, जुगलबंदी और शब्दों की दुनिया।

गीतों की आलोचना को लेकर नामवर सिंह से जुड़ा बड़ा रोचक प्रसंग है। रख बार नामवर सिंह से गीत की आलोचना पर एक सवाल पूछ लिया किसी ने तो उन्होंने पलट कहा गीत की आलोचना मैं क्यों करूंगा? गीत की आलोचना करेंगे राजेंद्र गौतम और डॉ भारतेंदु मिश्र। कितनी महत्वपूर्ण बात है कि भारतेंदु जी ने यह चुनौती स्वीकार की और वर्ष 1991 से 2001 तक की छंदोबद्ध कविता पर आलोचना पुस्तक लिख दी, जो 'समकालीन छंदप्रसंग' नाम से प्रकाशित हुई।

लोकभाषा और लोकजीवन पर भी उनकी गहरी पकड़ थी और उन्होंने अवधी में खूब काम किया। अवधी में भी उनके रचनाकर्म जो गद्य और पद्य दोनों में है को खूब सराहना मिली। प्राचीन विलुप्त साहित्य का शोध और उसका पुनर्लेखन, संपादन, प्रकाशन भी उनके काम का हिस्सा रहा। वे एक ऐसे गंभीर स्कॉलर और लेखक थे, जिनके जीवन में कोई कॉन्ट्रोवर्सी नहीं थी। वे किसी गुट, किसी अकादमी, किसी पुरस्कार की होड में नहीं थे, इसीलिए सुधि जनों के बीच समादृत थे। वे सच्चे अर्थों में भारतीय ज्ञान परंपरा के सहृदय साधक और संवाहक साहित्यकार थे। उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

मौसम आयेंगे जाएंगे,
हम तुमको भूल न पाएंगे।

चढ़ावा

लघुकथा

रामेश्वरम तिवारी

परम आदर्शवादी मास्टर धर्मपाल शर्मा जी ने जीवन भर बड़ी ईमानदारी से सरकारी नौकरी की। सरकार ने जब चाहा, जहाँ चाहा, जिस जगह चाहा तबादला किया, बिना हिला-हवाला, ना-नुकुर किए चुपचाप बीबी-बच्चों के साथ बोरिया-बिस्तर उठाया और अगली सुबह, अगली जगह के लिए रवाना हो लिए। जबकि उनके पढ़ाए हुए कुछ स्टूडेंट्स ऊँचे ओहदों पर आसीन थे और कुछ अंत्री-मंत्री बनकर सत्ता का सुख भोग रहे थे।

मास्टर धर्मपाल जीवन भर उसूलों के पक्के, समय के पाबंद और अपने कर्त्तव्य निर्वाह के प्रति बेहद सजग और निष्ठावान रहे, पर जमाने के हिसाब से अपने अधिकारियों और नेताओं को पटाना, चापलूसी और जी-गुज़ारी करना उन्होंने नहीं सीखा। यदि वह चाहते, तो दूसरे सहकर्मियों की तरह सिफ़ारिश के बल पर अपनी पोस्टिंग मनचाही जगह करवा सकते थे। पर उनकी आत्मा ने ऐसा करना कभी गवारा नहीं किया।

मास्टर धर्मपाल जीवन भर उसूलों के पक्के, समय के पाबंद और अपने कर्त्तव्य निर्वाह के प्रति बेहद सजग और निष्ठावान रहे, पर जमाने के हिसाब से अपने अधिकारियों और नेताओं को पटाना, चापलूसी और जी-गुज़ारी करना उन्होंने नहीं सीखा। यदि वह चाहते, तो दूसरे सहकर्मियों की तरह सिफ़ारिश के बल पर अपनी पोस्टिंग मनचाही जगह करवा सकते थे। पर उनकी आत्मा ने ऐसा करना कभी गवारा नहीं किया।

प्राचार्य पद से सेवानिवृत्ति पर स्कूल के सहकर्मियों ने बड़े ज़ोर-शोर से विदाई समारोह रखा। उनकी तारीफ़ में कशीदे पढ़े गए। समारोह में ज़िलाधीश से लेकर शिक्षा विभाग के सभी छोटे-बड़े अधिकारी-कर्मचारी से लेकर नगर के गणमान्य नागरिकों को आमंत्रित किया गया। भव्य स्तर पर भोज का आयोजन हुआ। शासन के स्टेंडिंग आदेशानुसार शासकीय सेवक की सेवानिवृत्ति के दिन उसके क्लेम के सारे कागज़ात सौंपे जाने चाहिए, पर धर्मपाल जी के प्रकरण में ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

आज उनको सेवानिवृत्त हुए क़रीब साल भर हो चुका है, पर न तो उनकी पेंशन स्वीकृत हुई है और न ही अन्य क्लेम मिले हैं। कल तक जो आदरणीय गुरुजी हुआ करते थे अब बेचारे होकर रह गए हैं। पेंशन कार्यालय के चक्कर लगाते-लगाते उनकी चप्पलें घिस चुकी हैं, पर अनावश्यक आपत्तियाँ लगाई जाकर फ़ाइल को बार-बार लौटाया जा रहा है।

धर्मपाल जी की दीन दशा देखकर कॉलोनी में रहने वाले उनका पुराना स्टूडेंट जोकि आजकल वार्ड का मेम्बर हो गया है। उन पर दया बरसाते हुए मुफ़्त में मशविरा देते हुए बोला-'गुरु जी! मेरा कहना मानिए और पल भर के लिए अपने उसूल और ईमानदारी को ताक पर रखकर इंसानी माँस के भूखे भेड़ियों को थोड़ा सा चढ़ावा चढ़ा दीजिए। फिर देखिए; कैसे और कितनी त्वरित गति से आपके सारे काम सुलटते हैं।'

लघुकथा

मीठा झूठ

सुरेश सौरभ

वह दुःखी था। उदासी से उसका चेहरा कुम्भला गया। उसके साथी सैनिक ने पूछा-क्या हुआ भाई! इतना उदास क्यों हो। बेटी अनशन पर बैठी है। कह रही है, इस बार दिवाली में आप को आना ही है। बहाना कोई न चलेगा। कैसे समझाऊँ सीमा पर लगी अपनी ड्यूटी के बारे में।

समझाने-बुझाने की ज्यादा जरुरत नहीं, बस कह दो आऊँगा। मैं झूठ बोलना नहीं चाहता और सच भी न उगला जा रहा न निगला। तो क्या करें छोटे-छोटे बच्चों को रुलाएं। मैं तो यही करता हूं। पहले, पत्नी को यथास्थिति समझा देता हूँ फिर बच्चों से कहता है, आऊँगा आऊँगा, फिर त्योहार गुजर जाता है। मैं घर नहीं पहुंच पाता, तब फोन से सौरी बोल कर जैसे-तैसे बच्चों समझा-बुझा देता हूँ। कुछ घड़ी शांति के बाद वह शून्य में देखता हुआ बोला-लगता है, मुझे भी इस मीठे झूठ का सहारा लेना पड़ेगा।

कन्फेस

हां
मुझे कन्फेस करना है
कि
नहीं होती है इच्छा
अब कुछ भी
कन्फेस करने की !
हालांकि
गाहे - बगाहे
मुझसे
हो रहे हैं जुर्म
हो रहा है कत्ल
रिश्तों का
भावनाओं का
और हाँ
कल तो
मार ही दिया है
मैंने
अपनी
आत्मा को भी !!

- संदीप राशिनकर

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इनका शौक - उनके शोक का कारण

व्यंग्य

मोहन वर्मा

लेखक साहित्यकार हैं।

अब इन्सान की फितरत के बारे में और फुरसती दुनिया के बारे में क्या तो कहा जाये और क्या ना कहा जाये। अब इन्सान की फ़ितरत है कुछ न कुछ करते रहना और दुनिया की फ़ितरत है हर अच्छे बुरे पर सवाल खड़े करना। वो ये क्यों कर रहा है..क्यों नहीं कर रहा है..ये सब करने की क्या जरूरत है.? दुनिया तो दुनिया कई बार घर वाले या घरवाली भी बेबात का बतंगढ बनाने से बाज नहीं आते। कुछ करो तो परेशानी..ना करो तो परेशानी। लोग घरबार छोड़कर यों ही साधु सन्यासी नहीं बन जाते। कहते है जिंदा रहना और जिंदादिल रहना है तो इंसान को कोई ना कोई शौक रखना चाहिये। अब चचा ग़ालिब को ही लीजिए..क्या उम्दा शायरी छोड़ गये। मग़र जैसा कि कहा सुना जाता है बेगम साहिबा को उनका लिखना पढ़ना इतना नागवार गुजरता था कि वे उनका लिखा या तो फाड़ कर फेंक देती थीं या फिर जला देती थी। जो बचा हुआ हमारे सामने आया उसने ग़ालिब को अमर कर दिया। सब जानते हैं और उनका शौक इनके शोक का कारण भी रहा है ऐसे तमाम किस्से है जो लगभग हर घर की कहानी है

अब साहेब हो गये रिटायर्ड। बच्चे अपने अपने काम धाम पर। मैडम जी अपनी घर गृहस्थी में लगी रह्ती और ये आये दिन दोस्तों की महफ़िल जमा लेते। शाम की चाय से शुरू हुई बैठक कब महफ़िल में बदल गई पता ही नहीं चला। एतराज करने पर मैडम को सुनना पड़ता ÷अरे..दोस्तों के साथ नी बैठें तो क्या करें?इधर ये अपना शौक पूरा करते उधर मेडम जी कोप भवन में बैठकर इनको और इनकी मंडली को कोस कोस कर शोक मनाती।

दूसरे हजरत को पढ़ने लिखने का शौक। किताबों में मुँह दिये कभी ये पढ़ते कभी वो और इधर मैडम भुनभुनाती.मुई किताब नी हो गई सौतन हो गई..कहीं आने के न जाने के..ना जाने किस घडी इस आदमी से पाला पड़ा था. साब जी का अपना शौक..मैडम जी का अपना शोक। तीसरे को मोबाईल और टीवी का शौक..दिनभर उसी में लगे रहते और बीबी कलपती रह्ती..कहीँ आया जाया करो..खुद को नहीँ तो अपनी बढ़ती तोंद को तो देखो..इनका शौक अपनी जगह। उनका शोक अपनी जगह।जिंदगी की गाड़ी हिचकोले खाती चल रही है।

मैडम जी का मन फोन मोबाईल पर फ़ेसबुक, रील, वाटसप चेटिंग से भरता नहीँ। श्रीमान के आपत्ति उठाने पर कहासुनी के दौरान वे बोलती-घर का काम कौन तुम्हारी अम्मा करती है..अपने शौक के लिये कुछ देर टाईम पास कर लेती हूँ तो तुम्हें बड़ीतकलीफ हो जाती है..और तुम जो यहां वहाँ आवारागर्दी करते रहते हो उसका क्या..? उनका शौक इनके शोक का कारण..शोक में दुःखी होकर मुँह उठाये बाहर निकलने के अलावा इनके पास चारा भी क्या? और फिर मियां बीबी के बीच बोलने की किसकी हिम्मत ?

इधर बढ़ते कराओके म्युजिक की महफ़िलों ने उनके अंदर बैठे गायक को फिर से जिंदा कर दिया।झ दिनभर मोबाईल में गानों की प्रेक्टिस और शाम को यहां वहां होने वाले कार्यक्रमों में पैसे देकर गाने का भूत चढ़ा। पेंशन के पैसों का बढ़िया आनंद। घर में प्रेक्टिस करते तो बीबी परेशान रहने लगी। कई बार अपने कमरे का दरवाजा भी बन्द कर लेती। और फिर एक दिन इनसे कहा-सुनो मुझे सुनाई कम देने लगा है। डॉक्टर के पास ले चलो। डॉक्टर इनका शौक और उनका दुःख/शोक समझ गया।

बहरहाल शौक और शोक इन दो शब्दों में तमाम ढ़ेर किस्से छुपे है। एक का शौक दूसरे के शोक का कब और कैसे कारण बन जाये कहा नहीं जा सकता।समझदारी और तालमेल से जैसे और जब तक गृहस्थी की गाड़ी खींची जा सकती हो खेंचते रो भिया यही जिन्दगी है।

वर्तमान समय में डॉ. लोहिया

पुण्यतिथि पर विशेष

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

12 अक्टूबर डॉ लोहिया का स्मृति दिवस है और उनकी स्मृति क्यों की जानी चाहिये, इसके कारण वे स्वतः बता गये थे। उन्होंने मृत्यु के कुछ दिन पूर्व कहा था कि श्लोग मेरी बात सुनेंगे शायद मेरे मरने के बाद, पर सुनेंगे जरूर और अब लोहिया की बातें न केवल भारत बल्कि दुनिया सुन रही है। कुछ नाम के साथ और कुछ नाम के बगैर।

भारत में पचमढ़ी के सोशलिस्ट पार्टी के सम्मेलन में डॉ लोहिया ने ही भारतीय समाजवाद की कल्पना को प्रस्तुत किया था और साम्यवाद व समाजवाद के अंतर को स्पष्ट करते हुये साम्यवाद या मार्क्सवाद की वैचारिकी में क्या अंतरविरोध या कमियां हैं उन्हें रेखांकित किया था। साम्यवाद सर्वहारा की तानाशाही के नाम पर दलीय तानाशाही और हिंसा के बारे में तो दुनिया व व देश में पहले भी कुछ चर्चा शुरू हुई थी। स्वतः जर्मनी के समाजवादी विचार की महिला रोजा लक्जमबर्ग जो मूलतः मार्क्सवादी थी और लेनिन के समकालीन थी, ने 1917 में हुई रूसी क्रांति के तत्काल बाद ही साम्यवाद के हिंसक लोकतांत्रिक और तानाशाही रूप को समझकर विरोध शुरू किया था, उनके विरोध से साम्यवादी नेतृत्व बहुत क्षुब्ध था और यहाँ तक की बर्लिन में जब उनकी हत्या की गई, यह आश्चर्यजनक था कि लेनिन ने उनके प्रति शोक संदेश भी जारी नहीं किया। जबकि उनकी हत्या नाजियों के द्वारा की गई थी। भारत में भी आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण जैसे वरिष्ठ समाजवादी नेताओं मार्क्सवाद की थीसिस को विशेषता उसके आर्थिक तर्कों को नहीं नकारा था केवल उसके हिंसा के पक्ष को नकारा था। यह आमधारणा थी कि साम्यवाद में से हिंसा व तानाशाही को निकाल दिया जाए तो वह समाजवाद होगा। परंतु लोहिया ने पचमढ़ी अधिवेशन और उसके बाद मार्क्सवाद की आर्थिक कल्पना और कुछ हद तक उसकी नियत पर भी संदेह की उंगली उठाई। लोहिया ने लिखा कि मान लो साम्यवादी बदलाव के लिये 5-10 लाख लोग मर भी जाएं और साम्यवादी सरकारी आ भी जाये तब भी क्या कोई वास्तविक आर्थिक बदलाव हो सकेगा। लोहिया ने सरप्लस वेल्यू के सिद्धांत को अधूरा बताया और कहा कि सरप्लस वैल्यू का निर्माण जिससे पूँजी व पूँजीवाद पनपता है वह अधूरा है तथा यूरोप के द्वारा एशिया के देशों के शोषण का हथियार लगता है। सरप्लस वैल्यू देश के भीतर भी बनती है और दो देशों के बीच भी बनती है। जब यूरोप के संपन्न देश एशिया और दुनिया के गरीब देशों को अपना माल, मंहगी दरों व मुनाफे में बेचते हैं तो लागत के अतिरिक्त जो राशि इकट्ठी होती है उसका एक हिस्सा यूरोप के कामगारों के पास पहुँचता और शेष पूँजीपतियों के पास। इससे यूरोप का कामगार तबका संपन्न बनता है जिससे यूरोप के कामगार सर्वहारी नहीं रहते और वे दिमागी तौर पर पूँजीवाद के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष समर्थक बन जाते हैं। जिस प्रकार मार्क्स एक देश के अंदर अतिरिक्त मूल्य को लूट व शोषण मानते थे, वैसा ही दो देशों के बीच व्यापार के रिश्तों में अतिरिक्त मूल्य को लोहिया ने शोषण माना था।

डॉ लोहिया ने मार्क्सवाद व साम्यवादियों के इस नारे को कि दुनिया में दो ही जातियाँ हैं एक अमीर और दूसरी गरीब को, भारत जैसे देशों के लिये व्यावहारिक नहीं बताया। तथा यह भी कहा कि भारत में हर विषमता का कारण चाहे वह सामाजिक, राजनैतिक या आर्थिक हो, भारत की जाति प्रथा है। इसलिये पहले सामाजिक समता लाना होगी और अब लोहिया की दोनों बातें लगभग सारी दुनिया और दुनिया के साम्यवादी भी स्वीकार करने लगे हैं। भारत के साम्यवादी अब रूस और चीन के मानसिक और आर्थिक पिछलग्गूपन से मुक्त होने का विचार करने लगे हैं तथा अपने लेखों व भाषणों में रूस और चीन को अपने आदर्श के रूप में या तो चर्चा नहीं करते या फिर कभी कभार अमेरिका के विरोध के नाम पर समर्थन भी करते हैं तो वह भी बहुत दबे स्वर में। वरना 1950 के दशक में भारत के मार्क्सवादी या साम्यवादी के लिये रूस सबसे बड़ा साम्यवाद का पर्याय था। 1960 के दशक में सी.पी.आई के बँटवारे के बाद सीपीआई का आदर्श रूस हो गया और सीपीएम का आदर्श चीन हो गया। यहाँ तक कि 1970 के दशक में भारत की सड़कों पर और विशेषकर बंगाल की सड़कों पर नारे गूँजते थे 'अवर चेयरमेन कामरेड माओ'

डॉ लोहिया ने भारतीय समाजवाद को वैश्विक दर्शन कहते हुये यह भी कहा कि जब तक एक दुनिया एक निर्वाचित विश्व संसद नहीं बन जाती तब तक देश की सीमाओं की रक्षा करना हर देशवासी का फर्ज है। लोहिया ने राष्ट्रवाद और अंतरराष्ट्रीयतावाद की बारीक व्याख्या की और अपने आपको एक साथ राष्ट्रवादी और विश्व नागरिक दोनों कहा। उन्होंने विश्व नागरिकता के अभियान के लिये पैरवी की थी और उस समय के अनेक समाजवादियों ने अपने आपको विश्व नागरिक होने की घोषणा की थी। अब लोहिया का भले ही विवशता में ही सही परंतु कुछ साम्यवादी, मार्क्सवादी मित्र भारत में लोहिया की इस धारणा को स्वीकारने लगे हैं यद्यपि नाम लेने में संकोच करते हैं।

डॉ लोहिया ने सप्तक्रांति में जाति व रंग के जो सवाल उठाये थे उन्हें अब दुनिया स्वीकार कर रही है और मार्क्सवादी भी। यहाँ तक कि अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका में ब्लैक मार्क्सशिज्म के नाम की एक नई अवधारणा शुरू हुई है। वहाँ के काले रंग के लोगों ने पुस्तकें लिखी है और वे लोग मार्क्सवाद, रंगभेद के काले पक्ष को उजागर कर रहे हैं। रंग के नाम पर एकाधिकार को उसी प्रकार चुनौती दे रहे हैं जिस प्रकार भारत के अनेक मार्क्सवादी, साम्यवादी मित्रों ने अपने नेतृत्व के जातिवाद को चुनौती देना शुरू किया और यहाँ तक लिखा कि कामरेड अब आपसे मुक्ति चाहिये, श्यानि जाति के सत्य को अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका के साम्यवादियों ने भी समझा व स्वीकार किया है और उसके खिलाफ आवाज उठाना शुरू किया है।

सर्वहारा की तानाशाही को तो अब यूरोप के मार्क्सवादी भी कम से कम खुले तौर पर अस्वीकार करने लगे हैं हालाँकि अपनी वैचारिकी की कमजोरी को छुपाने या शर्म बचाने को

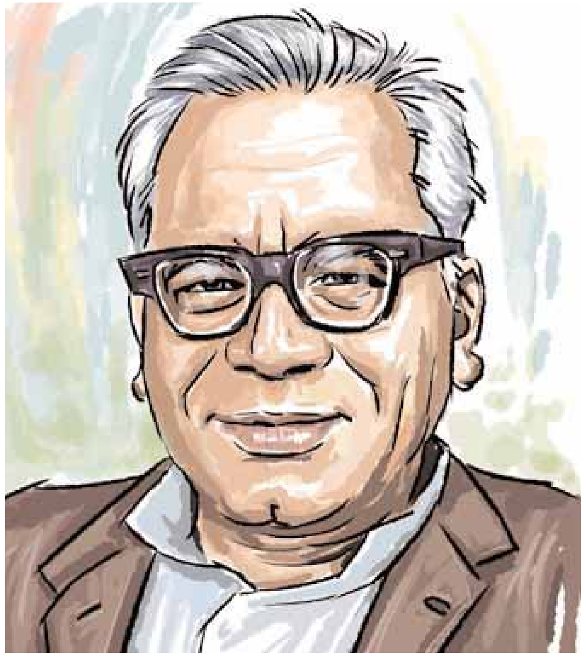

लेकर कभी कभार मार्क्स या लेनिन की कोई पंक्ति खोजकर लाते है कि उनने भी कभी ऐसा कहा था। भारत का साम्यवादी नेतृत्व अब लोहिया की यह बात मानकर कि भारत में बराबरी लाने के लिये सामाजिक विषमता को मिटाना आवश्यक है, अब आरक्षण, जातिगत जनगणना और सामाजिक हिस्सेदारी की मांग में सहभागी होने लगा है। भाषा व स्वर बदल गया है। केवल इतना अवश्य है कि उन्हें लोहिया का नाम लेने में परहेज होता है। भारत के भाजपा और आरएसएस संगठनों ने भी अब लाचार होकर डॉ.लोहिया की बात को स्वीकारना शुरू किया है। अपने संगठनों में पिछड़ी और अनुसूचित जनजातियों की हिस्सेदारी बढ़ाई है। हालाँकि वे भी डॉ लोहिया का नाम नहीं लेते और उसे भारतीय सभ्यता, भारतीय दर्शन निरुपित करते हैं कि जिसमें हर इंसान बराबर है। इतिहास के पुराने पन्नों को मिटाने में हमारे साम्यवादी मित्रों, संघ व भाजपा के मित्रों में कोई फर्क नहीं है। संघ नियंत्रित भाजपा सरकार तो अब पाठयक्रमों से उन निबंधों, लेखों, घटनाओं को हटा रही है जो भारत की जाति व्यवस्था के जुल्मों की दास्तान थे और साम्यवादी मित्र पिछड़े वर्गों के पक्षधर बनने के नारे को अब इतनी जोर की आवाज से लगाना चाह रहे हैं ताकि उनके अतीत में जातिवाद के बचाव का जुमला दो ही जातियाँ हैं अमीर और गरीब धूमिल हो जाये और उसे भुला दिया जाए। कांग्रेस पार्टी के नेता प्रतिपक्ष श्री राहुल गांधी ने भी अब पिछड़ों के आरक्षण, जाति जनगणना पर अपनी पार्टी को पिछले 70 वर्षों की भूमिका को बदला है और लोहिया की बात को स्वीकार करने लगे हैं, यद्यपि डॉ.लोहिया का नाम लेने में उन्हें भी हिचक है। दरअसल जब अपराध बोध को मन से स्वीकार कर प्रायश्चित व परिवर्तन किया जाता है तब व्यक्ति, समूह या समाज को अपनी गलती को स्वीकारने का साहस पैदा होता है और तब वह अतीत के सत्य के दोनों पक्षों को स्वीकारता है जो अन्याय हुए हैं वह भी और जो अन्याय से लोग लड़े हैं, अपमानित हुये हैं, पीड़ा उठाई है उनके नाम लेने का साहस भी उनमें पैदा होता है। परंतु कितना दुखद व विचित्र है कि भाजपा (संघ), कांग्रेस और साम्यवादी (मार्क्सवादी) तीनों ही अपने पिछले 60 वर्षों की सामाजिक विषमता को मिटाने की राजनैतिक भूल को समझकर अपनी भाषा तो बदल रहे हैं परंतु देश में महात्मा गांधी के बाद विषमता के खिलाफ सबसे ताकत से आवाज उठाने वाले डॉ लोहिया का नाम लेने में उन्हें शर्म आती है। हालाँकि यहाँ भी डॉ लोहिया, सत्य साबित हो रहे हैं कि उन्होंने कहा था कि श्लोग मेरी बात सुनेंगे, शायद मेरे मरने के बाद पर सुनेंगे जरूर।

अमेरिका में फिर से एक बार वहाँ की आर्थिक, सामाजिक विषमता के खिलाफ आवाज सार्वजनिक रूप से शुरू हुई है, वहाँ भी युवा पीढ़ी का एक अच्छा खासा हिस्सा अब साम्यवाद पूँजीवाद दोनों से हटकर लोकतांत्रिक समाजवाद की चर्चा करने लगा हैं। यहाँ तक कि पिछले कई सदियों से स्थापित दोनों दलों डेमोक्रेटिक और रिपब्लिक के बीच से भी आवाज उठने लगी हैं, उन दलों के युवा अपने ही दलों के स्थापित व सत्ता के खिलाफ खड़े हो रहे हैं। यूरोप और अमेरिका के मार्क्सवादी अब मार्क्स क्रांति की क्रोनोलॉजी की त्रुटि को समझ रहे हैं जिसमें मार्क्स ने कहा था कि ज्यों-ज्यों बड़े कारखाने बढ़ेंगे, पूँजी का संग्रहण बढ़ेगा, त्यों-त्यों बड़े कारखाने छोटे कारखानों को निगलेंगे, मजदूरों की शक्ति बढ़ेगी और मजदूर की शक्ति अपने संख्या के बल पर पूँजीपतियों को मारेगी तथा सर्वहारा की तानाशाही स्थापित करेगी। परंतु उत्तरोतर तकनीक की ताकत ने पूँजी का संग्रहण बढ़ाया, विषमता को बढ़ाया परंतु मजदूर के संख्या बल को और यूरोप व अमेरिका के कामगार के सर्वहारा पक्ष को घटा दिया है। जहाँ एक तरफ कामगारों की संख्या घटी है और दूसरी तरफ उनका आर्थिक पक्ष रंगीन व गरीब देशों की लूट के आधार पर आसमान को छूने लगा है। अब यूरोप व अमेरिका के मार्क्सवादी लोहिया के समाजवादी आर्थिक चिंतन को स्वीकार रहे हैं। मार्क्सवाद की आर्थिक परिवर्तन की दृष्टि की अदूरदर्शिता व असफलता को समझकर उसे त्याग रहे हैं। लोहिया की आर्थिकी को स्वीकार रहे हैं। हालाँकि लोहिया का नाम वह भी नहीं ले रहे हैं शायद इसलिये कि पिछले 50 वर्षों में उन तक लोहिया का नाम व्यापक रूप से नहीं पहुँचा। अमेरिका के इन संभावित परिवर्तनों को डॉ लोहिया ने 1960 के दशक में ही देखना और समझना तथा बोलना शुरू कर दिया था। मुझे याद है कि, जब लोहिया अमेरिका की यात्रा पर गये थे तब उन्होंने अमेरिकी सांसदों की बैठक में कहा था कि आप लोग जो बराबरी और लोकतंत्र की बातें कर रहे, हो वह बहुत हद तक समाजवादी है। हालाँकि आप लोग समाजवाद का नाम नहीं लेते। मार्क्सवाद, संपत्ति के संपूर्ण सरकारीकरण की बात कहता था, कांग्रेस मिश्रित अर्थव्यवस्था के नाम पर पूँजीवाद को जिंदा रखना चाहती थी, जनसंघ और संघ पूँजी व पूँजीवाद को नियंत्रण मुक्त रखना चाहते थे, और एक मात्र लोहिया ही थे और कहते थे कि संपत्ति को समाप्त नहीं करना है बल्कि उसे सीमित करना है न पूर्ण सरकारीकरण और न पूर्ण निजीकरण, बल्कि सहकारीकरण होना चाहिए और आज इसे अमेरिका की युवा पीढ़ी भी समझने लगी है।

मुझे साम्यवादी, कांग्रेस, भाजपा (संघ) के मित्रों से ज्यादा शिकायत अपने उन समाजवादी मित्रों से है जो अनेकानेक कारणों से चाहे वह पुराने विभाजन के प्रसोपाई मानसिकता के हों, छिपे जातिवाद के हों, छिपी अनुदारता और धार्मिक कटटरपंथ के हों, चाहे सत्ता का थोड़ा भी टुकड़ा मिल जाए इस लालच के हों या हताश और निराश मानसिकता के हों परंतु इन किन्हीं भी कारणों से क्यों न हों जो आज लोहिया को उनकी वैचारिकी, व्यक्तित्व को जाने-अनजाने आघात पहुँचा रहे। कुछ लोग आजकल गांधी-लोहिया और जयप्रकाश के नारे से जयप्रकाश को हटाकर गांधी-लोहिया-नेहरू कहने लगे हैं क्योंकि शायद उन्हें कांग्रेस की सत्ता में आने की संभावना लगने लगी है। कुछ लोग गांधी, लोहिया और दीनदयाल का एकजुट बनाकर भाजपा की सत्ता से कुछ हासिल करने में लगे हैं, कुछ लोग छोटी-छोटी व्यक्ति केंद्रित देशी-विदेशी फंडिंग की एनजीओ की दुकानें खोलकर राजनीति को नकार रहे हैं और जो लोहिया कहते थे कि परिवर्तन के राजनीतिक दल संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी को समाप्त नहीं करना है वे उस लोहिया की विचार रणनीति को मिटा कर लोहिया को परिवर्तनकारी नेता की भूमिका से हटाकर पहले उपदेशक और फिर समाजवाद के नेतृत्व की भूमिका से हटाना चाहते हैं। आजकल समाजवादियों के नाम पर, उनकी एकजुटता के नाम पर सम्मेलन, समागम और फिर कुछ कोरे प्रस्ताव के साथ में कांग्रेस, भाजपा के साथ सहभागिता की रणनीति का चलन आम हो गया है। अब तो स्थिति यह है कि 70 समाजवादियों के चमके चेहरे लगते हैं जिनमें बीच में गांधी व लोहिया भी चिपके होते हैं। क्या यह गांधी व लोहिया के कद को कम करना नहीं है? मैं व मेरी पार्टी मानती है कि भारतीय समाजवाद और परिवर्तन के लिये तीन ही आदर्श हैं गांधी, लोहिया और जयप्रकाश। संसदीय लोकतंत्र में नीति व कार्यक्रम के आधार पर साझेदारी एक वक्त रणनीति होती है पर इसके लिये अपने ही मूल्य को नष्ट करना मेरी नजरों में पाप जैसा है।

राम मनोहर लोहिया के विचार में इतिहास लेखन

पुण्यतिथि पर विशेष

चित्रा माली

सहायक प्रोफेसर, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

भा डॉ.राममनोहर लोहिया के नेतृत्व में पहली छात्र हड़ताल 1 अगस्त 1920 को की गई थी जब लोकमान्य तिलक का देहांत हो गया था उन्होंने तिलक की मृत्यु को समूचे देश के लिए एक बड़ी क्षति माना तब वे महज दस वर्ष के थे। असहयोग आंदोलन के दौरान वे वानर सेना में शामिल हो गए थे और उन्होंने बिजली के तारों को काट दिया था जिनसे ट्राम चलती थी। इसी वर्ष उन्होंने स्कूल का त्याग भी कर दिया था। डॉ. लोहिया अपने पिता श्री हीरालाल (जो कांग्रेस में पहले से ही सक्रिय थे)के साथ गांधी जी से मिलने के लिए मुंबई गए। पहली ही मुलाकात में वे गांधी जी से अत्यंत प्रभावित हो गए थे। 1924 में डॉ. लोहिया जब वे 14 वर्ष के थे उन्होंने एक प्रतिनिधि के तौर कांग्रेस के अधिवेशन में शिरकत की थी जो उस समय की एक असाधारण घटना थी। डॉ.लोहिया की कुशाग्रबुद्धि,तर्कपूर्ण और विद्वतापूर्ण भाषा शैली ने सहज ही लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। वे असाधारण स्मरण शक्ति के मालिक थे एक बार सुनने भर से ही उन्हें याद हो जाता था वे अपने किसी साथी से पढ़ने के लिए कहते और सुनकर याद कर लिया करते थे। इतिहास उनके प्रिय,विषयों में से एक था। इतिहास से उसके तथ्यों से खिलवाड़ उनमें खीज उत्पन्न करता था। डॉ.लोहिया ने इतिहास में लिखे गए कई तथ्यों का पुनर्परीक्षण भी किया मसलन शिवजी को वे लुटेरों का सरदार मानने के लिए तैयार नहीं हुए और सौ अंग्रेजों को काल कोठरी में बंद करके उनकी हत्या की घटना को उन्होंने झूठा साबित किया। 1927 में डॉ.लोहिया ने बनारस से इंटर की परीक्षा पास की और आगे की पढ़ाई के लिए कलकत्ता चले गए। 1929 में उन्होंने बी.ए. की पढ़ाई विद्यासागर कॉलेज से पूर्ण की। इसी वर्ष जुलाई में वे उच्च अध्ययन के लिए बर्लिन चले गए। बर्लिन विश्वविद्यालय में परीक्षक का चुनाव स्वयं छात्र को ही करना होता था। डॉ.लोहिया ने प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रोफेसर बर्लर जेम्बार्ट को अपना अध्यापक चुना लेकिन उन्हें अंग्रेजी नहीं आती थी लोहिया ने उनसे तीन महीने का समय लिया। इन तीन महीनों में लोहिया ने जर्मन भाषा का ज्ञान हासिल कर लिया और फिर प्रोफेसर जेम्बार्ट से मिले। प्रोफेसर जेम्बार्ट लोहिया की कार्य के प्रति निष्ठा और लगन से काफी प्रभावित हुए। 23 मार्च 1931 को बर्लिन में 'लीग ऑफ नेशन्स' की बैठक हो रही थी और इसी दिन लाहौर में भगत सिंह को फांसी दी जा रही थी जिसके विरोध में लोहिया ने दर्शक दीर्घा से सीटी बजाकर अपना विरोध प्रदर्शित किया। इसके कारण उन्हें सभागार से बाहर निकाल दिया गया था। बर्लिन के छात्र पढ़ाई के साथ राजनीति में भी विशेष रुचि रखते थे और सक्रिय रहते थे जिससे डॉ.लोहिया भी अछूते नहीं रहे और उन्होंने भी प्रवासी भारतीयों की एक संस्था 'मध्ययूरोप हिंदुस्तानी संघ' की स्थापना की। भारत के बाहर प्रवासी युवकों की यह पहली संस्था थी जिसने भारतीय राष्ट्रीयता के प्रचार का कार्य किया। डॉ. लोहिया बर्लिन शहर की सभी सभाओं में जाते थे उन्होंने हिटलर की चार सभाओं में भी हिस्सा लिया था लेकिन वे नाजी पार्टी को कभी पसंद नहीं कर पाए। 1932 में बर्लिन विश्वविद्यालय से उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त हुई। उनके शोध प्रबंध का विषय 'नमक सत्याग्रह' था। 1933 में वे जर्मनी से जहाज में मद्रास पहुंचे। डॉ.लोहिया के पास कई सारी किताबें थीं जिन्हें रास्ते में ही जर्मन सरकार ने जब्त कर लिया था। मद्रास से आगे के सफर के लिए भी उनके पास पैसे नहीं थे। मद्रास में वे जहाज से उतरने के बाद सीधे हिंदू अखबार के दफ्तर पहुंचे और संपादक से मिले, लोहिया ने उन्हें बताया कि वे जर्मनी से आ रहे है और दो लेख देना चाहते हैं। लोहिया ने दफ्तर में ही दो लेख लिखे। 25 रुपये की राशि उन्हें मेहनताने के रूप में दी गई जिससे उनकी आगे की यात्रा का जुगाड़ हो गया। लोहिया बंगाल पहुंचे। डॉ.लोहिया के पिता ने व्यवसाय करना बंद कर दिया था और वे कांग्रेस के कार्यों के प्रति पूर्ण समर्पित हो गए थे। इसके अतिरिक्त वे हिंदी नाट्यपरिषद भी चलाते थे और शाम को बड़ा बाजार की हिंदी प्रचारक पुस्तकालय में बैठते थे। जहां की एक खासियत यह थी कि वहां सभी जाति धर्म के लोग एक ही कौमी बाल्टी से पानी पीते थे। डॉ.लोहिया अपने पिता से मिले और उन्हें राजनीति में सक्रिय रहने के अपने निर्णय से अवगत करवाया। 1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन हुआ और कांग्रेस सोशलिस्ट पत्र निकालने का निर्णय भी लिया गया जिसके संपादन कार्य की जिम्मेदारी डॉ. लोहिया को सौंपी गई। 1935 में पंडित नेहरू की अध्यक्षता में लखनऊ में कांग्रेस अधिवेशन हुआ जिसमें विदेशी (परराष्ट्र) विभाग खोलने का निर्णय लिया गया और इसकी जिम्मेदारी भी डॉ.लोहिया को दी गई जिसके लिए उन्हें इलाहाबाद जाना पड़ा। डॉ.लोहिया ने हरिजन में लेख लिखकर गांधी जी से आग्रह किया कि उन्हें अब अंतिम लड़ाई के लिए सामूहिक सत्याग्रह शुरू कर देना चाहिए। गांधी जी ने भी अंतिम लड़ाई का मन बना लिया था। जिसके परिमाणस्वरूप बंबई में 8 अगस्त 1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' की घोषणा की गई। 'भारत छोड़ो आंदोलन' में डॉ. लोहिया और कांग्रेस समाजवादी पार्टी के नेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ.लोहिया को भूमिगत आंदोलन की योजनाओं,वैचारिक तैयारियों,क्रियान्वयन की नीतियों को बनाने का श्रेय दिया जाता है। इसी के साथ पुलिस स्टेशनों,रेलवे,पोस्ट ऑफिस,टेलीफोन कार्यालयों, कचहरियों आदि पर अधिकार करने की योजना भी डॉ.लोहिया की ही थी। इस भूमिगत आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण बात रेडियो-संचार का संचालन था। रेडियो प्रसारण की औपचारिक घोषणा 3 सितंबर 1942 को 71-78 मीटर बैंड पर किसी अज्ञात स्थान से की गई। लगभग दो-ढाई महीने चले इस कांग्रेस रेडियो के अधिकांश वक्तव्य डॉ.लोहिया के लिखे होते थे। जिनमें डॉ.लोहिया ने दुनिया के सभी स्वतंत्रता प्रेमी राष्ट्रों का लगातार आह्वान किया कि वे सब भारत के इस स्वाधीनता संघर्ष को अपना समर्थन दें। इस भूमिगत आंदोलन और कांग्रेस रेडियो की विस्तृत जानकारी मधु लिमए ने अपनी किताब 'अगस्त क्रांति का बहुआयामी परिदृश्य' में प्रस्तुत की है।

डॉ.राममनोहर लोहिया ने पूरी वैश्विक व्यवस्था में व्याप्त संरचनागत हिंसा को,अन्याय के विविध पहलुओं के साथ उनके विरुद्ध हो रहे अहिंसक संघर्षों के रूप में पहचान की थी। जिसे उन्होंने सात श्रेणियों में विभाजित कर सप्तक्रांति की संज्ञा दी थी। लोहिया अपनी किताब इतिहास चक्र (wheel of History) में इतिहास की एक नई व्याख्या प्रस्तुत करते है जिन्हें तीन महत्वपूर्ण बिंदुओं पर केंद्रित किया जा सकता है। प्रथम - मनुष्य या सभ्यता की प्रगति सीधी किसी एक दिशा में नहीं हुई है। एक समय ऐसा आता है जब कोई सभ्यता विकसित होकर अपनी चरम सीमा पर पहुंचती है, लेकिन फिर उसका ह्रास होने लगता है। अब तक संसार में हुई सभ्यताओं के साथ यही हुआ है। द्वितीय - कोई भी सभ्यता व समाज जब विकास की अवस्था में होता है तो आंतरिक सामाजिक संबंधों में ढिलाई और गतिशीलता होती है जिसे हम समाज की वर्ग व्यवस्था कह सकते हैं। इस स्थिति में एक वर्ग दूसरे वर्ग से तुलना करने में प्रगति करता हैं। एक वर्ग का व्यक्ति दूसरे वर्गों में भी जा सकता था लेकिन जब समाज या सभ्यता का ह्रास होने लगता है तो आंतरिक संबंधों में जकड़ाव आ जाता है। वर्गों की स्थिति में परिवर्तन नहीं हो सकता है। प्रगति की आकांक्षा का स्थान न्याय और व्यवस्था की इच्छा ले लेती है। इसे वर्ण व्यवस्था की संज्ञा दे सकते हैं। तृतीय - इतिहास में शक्ति और समृद्धि के केंद्रों का भौगोलिक स्थान परिवर्तित होता रहता है।

एक भौगोलिक क्षेत्र की सभ्यता का ह्रास होने पर किसी अन्य क्षेत्र में नयी सभ्यता जन्म लेती है और विकसित होती है। इतिहास के इन तत्वों को समझ कर हम ऐसी विश्व - सभ्यता का निर्माण कर सकें,जो वर्ग और वर्ण के बदलाव से,विकास और ह्रास के हिंडोले से और भौगोलिक स्थानांतरण से मुक्त हो,जो विश्व सभ्यता हो और वर्ग और वर्णविहीन हो और जो व्यक्ति और समाज का चतुर्मुखी विकास करे। तभी मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगा। लोहिया ने स्वतंत्रता और समानता को इतिहास की विकासशील प्रक्रिया के आधारभूत मूल्य मानते हुए स्पष्ट किया था कि इन मूल्यों की व्यवहारिक प्रतिष्ठा इतिहास की किसी अंधी प्रक्रिया द्वारा नहीं बल्कि मानवीय इच्छा के माध्यम से अर्थात इन मूल्यों के लिए निरंतर प्रयत्नरत होने से ही संभव है। लोहिया की धारणा है कि अन्याय कई किस्म का होता है और सब किस्मों के खिलाफ साथ लड़ना पहले कभी नहीं हुआ है। किसी एक प्रकार के अन्याय के विरोध में लड़ाई तो मनुष्य ने पहले भी की है, लेकिन अबकी बार सभी प्रकार, जो मनुष्य सोच सकता है या हैं,उनके खिलाफ एक साथ,कभी इस अन्याय के खिलाफ कभी उस अन्याय के खिलाफ,एक ही देश में कई अन्यायों के खिलाफ लड़ रहा है÷। ग़रीबी और अमीरी के फर्क से भी अन्याय और विषमता उत्पन्न होती है और यही विषमता अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी देखी जा सकती है जो विकसित सम्पन्न देशों की विकासशील और अर्ध विकसित देशों के बीच है लेकिन समानता और बराबरी की भावना को बहुत जोरों के साथ देखा जा सकता है जो विभिन्न आंदोलनों और संघर्षों में परिलक्षित होती हैं। लोहिया स्वस्थ समाज की स्थापना के लिए सत्याग्रह को सर्वाधिक प्रभावी तरीका मानते हैं। उनकी दृष्टि में सत्याग्रह मानव समाज को बचाने का उपाय है और इसे हर व्यक्ति की आदत बन जाना चाहिए। लोहिया का मानना है कि सातों क्रांतियां दुनिया में एक साथ चल रही हैं और उनको लगातार बढ़ाते बढ़ाते शायद यह संभव हो जाए कि आज का इंसान सब अन्यायों और विषमताओं के खिलाफ लड़ते हुए संघर्ष करते हुए ऐसे समाज और विश्व का निर्माण कर पाए जिसमें आंतरिक शांति और बाहरी या भौतिक भरा-पूरा समाज बन पाए। यही स्वतंत्र और समतामूलक समाज के निर्माण की प्रक्रिया होगी और यह तभी फलीभूत होगी जब समग्र रूप से क्रांति होगी और वह भी अहिंसक सिविल नाफ़रमानी के माध्यम से।

आज डॉ. राममनोहर लोहिया की पुण्यतिथि है। लोहिया जब अंतिम समय में अस्पताल में भर्ती थे तब समूचे देश के हर कोने से हर वर्ग,हर जाति और हर धर्म के लोग उनसे मिलने पहुंचे थे। भारत के राष्ट्रपति के साथ साथ एक गैर राजनीतिक कैदी भी जो लोहिया के साथ तिहाड़ जेल में बंद था वह भी मिलने आया था। शेख अब्दुल्ला पुलिस के घेरे में लोहिया से मिलने आए थे। लोहिया के लिए कई लोग अपने घर बार और व्यवसाय तक बेच कर आ गए थे। लोहिया को जब खून की कमी हुई तो 150 व्यक्ति रक्तदान करने के लिए तैयार हो गए। इन सभी का संबंध किसी भी राजनीतिक संगठन से नहीं था। जिन व्यक्तियों का रक्त लेने से डॉक्टर ने मना कर दिया वे अपने आप को अभागा समझने लगे और उदास हो गए। इतिहास चक्र के लेखक के लिए इतिहास में यह अनोखी घटना दर्ज हुई।

डॉ. लोहियाः भारत की आत्मा को समझने वाले समाजवादी

पुण्यतिथि पर विशेष

डॉ. मनीष जैसल

लेखक मीडिया शिक्षक हैं।

भारतीय समाज की विविध भाषाओं, परंपराओं और लोकरंगों के बीच डॉ. राममनोहर लोहिया उन विरले विचारक के रूप में सामने आते हैं, जिन्होंने संस्कृति को केवल उत्सव, कला या आचार का रूप नहीं माना, बल्कि उसे समानता और न्याय की सांस लेती हुई चेतना के रूप में देखा। उनके लिए संस्कृति किसी अभिजात वर्ग की धरोहर नहीं थी, बल्कि उस आम जनजीवन की धड़कन थी, जिसमें श्रम, संघर्ष और स्वाभिमान का संगीत गूंजता है। लोहिया का मानना था कि असमानता के रहते कोई भी समाज सांस्कृतिक रूप से पूर्ण नहीं हो सकता, क्योंकि संस्कृति का अर्थ तभी सार्थक है जब उसमें हर व्यक्ति की भागीदारी और सम्मान हो। वे स्पष्ट शब्दों में कहते थे, समानता ही असली संस्कृति है, क्योंकि बिना न्याय के कोई सभ्यता अपनी आत्मा नहीं बचा सकती। यही सोच उनकी राजनीति और समाजशास्त्र दोनों की आधारशिला बनी, जहाँ सांस्कृतिक जागरण और सामाजिक परिवर्तन एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए दिखते हैं। आज भी जब समाज नए विभाजनों और असमानताओं से जूझ रहा है, तब लोहिया की यह दृष्टि पहले से कहीं अधिक जीवंत और आवश्यक प्रतीत होती है।

लोहिया का जन्म 1910 में उत्तर प्रदेश के अकबरपुर में हुआ। बचपन में ही उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की हवा महसूस की और गांधी जी के विचारों से गहराई से प्रभावित हुए। प्रारंभिक शिक्षा बनारस और कोलकाता में प्राप्त करने के बाद वे उच्च शिक्षा के लिए जर्मनी के बर्लिन विश्वविद्यालय पहुँचे, जहाँ उन्होंने नमक कर व्यवस्था पर शोधकार्य किया। यूरोप में रहते हुए उन्होंने समाजवाद के विचारों से परिचय प्राप्त किया और भारतीय सामाजिक यथार्थ से उसे जोड़ने की दृष्टि विकसित की। वहीं से उन्होंने यह समझा कि किसी देश की प्रगति केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक स्वावलंबन से भी होती है। यह सब आज़ाद भारत के आस पास की बात है।

भारत लौटने के बाद लोहिया गांधी के भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रहे। वे अंग्रेज़ी शासन के विरोध में बार-बार जेल गए और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी सामाजिक अन्याय, गरीबी, जातिवाद और भाषाई असमानता के खिलाफ अपनी आवाज़ बुलंद करते रहे। परंतु उनकी सबसे गहरी चिंता भारत की आत्मा, यानी उसकी संस्कृति रही। उन्होंने कहा था कि भारत की असली ताकत उसकी लोकसंस्कृति में छिपी है, उसे जगाना ही स्वतंत्रता की सच्ची रक्षा है। आज देश की सांस्कृतिक पहचान के संकट को देश किस तरह महसूस कर रहा है हम सभी इससे दो चार होते रहते हैं। डॉ लोहिया ने इस और हमें बहुत पहले सचेत कर दिया था।

लोहिया की सांस्कृतिक नीति का मूल केंद्र समानता पर आधारित समाज था। वे मानते थे कि भारत की संस्कृति ने सदियों तक समानता का संदेश दिया, किंतु जातिवाद और सामाजिक विभाजन ने इसे विकृत कर दिया। उनके अनुसार, सच्ची संस्कृति वही है जो अन्याय और भेदभाव के खिलाफ खड़ी हो। यही कारण है कि लोहिया के समाजवाद का आधार केवल आर्थिक सुधार नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण भी था। उन्होंने अपने भाषणों में बार-बार कहा कि जब तक जातीय भेदभाव, स्त्री के साथ असमानता और वर्गीय अन्याय खत्म नहीं होंगे, तब तक भारत सांस्कृतिक रूप से स्वतंत्र नहीं हो सकता। यह देश का दुर्भाग्य रहा कि देश में जातीय विमर्श के केंद्र में डॉ लोहिया नदारद रहे। क्यों ऐसा हुआ यह अब भी विमर्श का विषय बना हुआ है।

उनका दृष्टिकोण यह था कि संस्कृति और राजनीति एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। राजनीति यदि संस्कृति से कट जाए, तो वह केवल सत्ता का खेल बन जाती है। उन्होंने राजनीति को लोकसंस्कृति का विस्तार माना, ऐसा माध्यम जो जनता की चेतना को प्रतिबिंबित करे। इसीलिए लोहिया की राजनीति में नैतिकता, सत्य और जनसंवाद का विशेष महत्व था।

लोहिया ने भारतीय भाषाओं को सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता का मूल स्तंभ माना। वे अंग्रेज़ी शिक्षा के एकाधिकार के विरुद्ध थे। उनका कहना था कि यदि कोई समाज अपनी भाषा में नहीं सोचता, तो वह अपने विचारों में स्वतंत्र नहीं रह सकता। इसलिए उन्होंने शिक्षा और शासन में भारतीय भाषाओं के प्रयोग का आग्रह किया। वे केवल हिंदी के पक्षधर नहीं थे, बल्कि सभी भारतीय भाषाओं के समान विकास के समर्थक थे। उनका मानना था कि भारत की विविधता उसकी शक्ति है और हर क्षेत्रीय भाषा अपनी संस्कृति की वाहक है। आज देश में जिस एक दो भाषा को लेकर विवाद है उनसे जुड़े लोगों को लोहिया के इस विषय से जुड़े भाषणों और लेख को जरुर पढ़ना चाहिए।

भारतीय संस्कृति के प्रति लोहिया की दृष्टि लोक-आधारित थी। वे लोकगीतों, लोककला और लोकजीवन में भारतीयता की सच्ची झलक देखते थे। उन्होंने कहा था कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है और जब तक गाँवों का पुनर्जागरण नहीं होगा, तब तक भारतीय संस्कृति अधूरी रहेगी। उनके विचार में आधुनिकता का अर्थ पश्चिम की नकल करना नहीं, बल्कि अपने पारंपरिक ज्ञान को नए अर्थों में पुनर्जीवित करना है। इसीलिए वे कहते थे कि हमें ऐसी आधुनिकता चाहिए जो हमारी मिट्टी से जुड़ी हो।

उनकी सांस्कृतिक दृष्टि में विज्ञान और अध्यात्म का संतुलन था। वे मानते थे कि विज्ञान यदि मनुष्य की गरिमा बढ़ाए तो वह संस्कृति का हिस्सा है, और धर्म यदि मानवता की रक्षा करे तो वह भी संस्कृति का वाहक है। उन्होंने बार-बार यह कहा कि संस्कृति का लक्ष्य मनुष्य को भय से नहीं, बल्कि साहस और विवेक से जीना सिखाना है।

स्वतंत्र भारत के राजनीतिक और वैचारिक परिदृश्य को दिशा देने वाले व्यक्तित्वों में डॉ. राममनोहर लोहिया का नाम जयप्रकाश नारायण के साथ सम्मानपूर्वक लिया जाता है। इन दोनों ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम के अंतिम चरण में निर्णायक भूमिका निभाई, बल्कि स्वतंत्र भारत के सामाजिक पुनर्निर्माण और वैचारिक विमर्श को भी नई दिशा दी। सन् 1933 में जब लोहिया मद्रास पहुँचे, तो उन्होंने महात्मा गांधी के साथ मिलकर स्वाधीनता संग्राम को एक नई बौद्धिक धार दी। इसी काल में उन्होंने स्पष्ट रूप से यह प्रतिपादित किया कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन का नाम नहीं, बल्कि समाज के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्गठन की प्रक्रिया है। लोहिया ने समाजवाद को भारत की परिस्थितियों के अनुरूप रूपांतरित करने की आवश्यकता पर बल दिया और इसी सोच के साथ उन्होंने भविष्य के समाजवादी आंदोलन की वैचारिक रूपरेखा तैयार की जो आगे चलकर भारतीय राजनीति में एक विशिष्ट विचारधारा के रूप में स्थापित हुई।

स्वतंत्र भारत में लोहिया ने सोशलिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को एक वैचारिक मंच के रूप में विकसित किया, जहाँ सांस्कृतिक और सामाजिक समानता दोनों को एक साथ रखा गया। उनका कहना था कि आर्थिक प्रगति तब तक अधूरी है जब तक सांस्कृतिक आत्मसम्मान जागृत नहीं होता। वे मानते थे कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक नहीं होती; वह तब पूर्ण होती है जब व्यक्ति अपने विचार, भाषा और जीवनशैली में स्वतंत्र होता है।

आज जब वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद और सांस्कृतिक एकरूपता का दबाव बढ़ रहा है, तब लोहिया के विचार और अधिक प्रासंगिक हो उठते हैं। उन्होंने जिस भारतीय आधुनिकता की बात की थी, वह न तो पश्चिम की नकल थी, न अतीत की जड़ता। वह आधुनिकता थी जो लोक से जुड़ी, समानता पर आधारित और आत्मगौरव से ओतप्रोत थी।

आज देश के कम ही संस्थान हैं जहाँ लोहिया और उनके आदर्शों पर खुल कर बात हो, लोहिया के विचार नए भारत के निर्माण से भी बार बार मेल खाते हुए हमें दिखाई देते हैं। जवाहर लाल नेहरू विवि, आईटीएम विवि ग्वालियर, समाजवादी समागम तथा अन्य सीमित संस्थान और समूह इनके विचारों को साझा करते हुए दिखाई देते हैं।

12 अक्टूबर को जब हम डॉ. लोहिया को स्मरण करते हैं, तब हमें यह याद रखना चाहिए कि उनकी सांस्कृतिक नीति केवल विचारों की योजना नहीं थी, बल्कि एक जीवनशैली थी, ऐसा जीवन जो न्याय, करुणा और समानता पर टिका था। लोहिया हमें यह सिखाते हैं कि संस्कृति केवल मंदिरों या ग्रंथों में नहीं, बल्कि उन लोगों में जीवित रहती है जो अन्याय के विरुद्ध खड़े होते हैं और समाज को जोड़ने का प्रयास करते हैं। उनके शब्दों में कहा जाए तो संस्कृति तभी सजीव होती है जब उसमें परिवर्तन, संघर्ष और मानवता का संगम हो।

साहित?य

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

परिवार और प्रेम का अक्षय कोश है कविता

किसी भी कविता की उपस्थिति आसमान में नहीं होती, कविता का संसार इसी भूमि में, इसी जीवन संसार में मानवीय अस्तित्व की जो सुगंध है वह सब कविता की वह जमीन तैयार करती है जिसपर चलकर हम सब संसार से बातें करते हैं। कविता पूरे तौर पर मन मस्तिष्क और संसार के बीच परस्पर संवाद का नाम है, एक कविता एक विचार सूत्र के रूप में सबसे पहले पदार्थ के बीच हमें दिखती है फिर वहां से विचार सूत्र चेतना पर बार बार जोर देते हुए उस संसार को देखे जाने के लिए हमें विवश कर देते हैं। कविता पाताल से चलते हुए भूतल पर विस्तार पाते पाते स्वप्न सी आकाश में चली जाती है इसकी यह कह सकते हैं कि कविता की ऊंचाई आसमान से उपर भी चली जाती है। कविता इसी संसार में सांसारिक संदर्भों के साथ जन्म लेती है। एक एक कविता सौ सौ बार देखे जाने और समझे जाने की मांग रखती है, ऐसा नहीं होता कि आपने कविता पढ़ी और वह आपके मन मस्तिष्क पर बैठ गई या छा गई । यह भी हो सकता है कि कविता जो कुछ कह रही है वह आपके आसपास से निकल ही न रहा हो, पूरी कविता से गुजर जाने के बाद यदि हम भाषा शास्त्र और व्याकरण की पुस्तक देखने लगे या शब्दकोश देखने लगते हैं तो जाहिर सी बात है कि हमने कविता न पढ़कर कोई शास्त्र ही पढ़ रहे हैं या कविता जैसा कुछ पढ़ रहे हैं कविता तो बिल्कुल नहीं पढ़ रहे हैं कविता जब पढ़ते हैं तो दृश्यता बढ़ जाती है। समय और संदर्भ साफ साफ खुलने लगते हैं। कविता हमारी परिधि का विस्तार करती है, जो कुछ हम समझ नहीं सकते, जो कुछ कह नहीं सकते वह सब कविता के द्वारा सहज रूप में संसार को संबोधित किया जाता है। कविता एक सामाजिक व सांसारिक संबोधन है और यह संबोधन उन सब लोगों के साथ है जो संसार में रहते हैं संसार से परे जाकर सोचने और विचार करने वाले लोगों के लिए कविता का विस्तार नहीं होता न ही ऐसे लोगों की स्वीकृति कविता के संसार में होती है। कविता हमारे मन मस्तिष्क को इस तरह से साफ करती है कि जीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं है जो यहां न आ जाता हों। कविता के भीतर जो जीवन गुंथा होता है वह सीधे सीधे सामने आ जाता है। इस तरह यह भी सच है कि कविता हमारे संसार का खुलासा बहुत ही सहजता के साथ करती है और हमें हमारा इतिहास और जीवन इस तरह से पढ़ाते चलती है कि संस्कृति का पाठ अनायास ही हो जाता है। कविता सभ्यता और संस्कृति का वह निष्कर्ष है जहां से जीवन के अध्याय खुलते हैं, यहां एक बिंदु पर होकर जीवन का विस्तार जीया जाता है यहां विश्लेषण के लिए जगह होती है एक दो पंक्तियों में बहुत बड़ी बात कह दी जाती है जिसे और किसी माध्यम में कहने के लिए बहुत सारे स्पेस की जरूरत पड़ती है वह कविता में आकर यूं ही पूरी हो जाती है। इसीलिए यह कह सकते हैं कि कविता मानव संसाधन के साथ साथ मानव व्यवहार को भी प्रकट करने का सबसे सहज साधन है। कविता हृदय के अंतःस्थल से निकल कर मन मस्तिष्क पर अपना असर इस तरह से छोड़ती है कि कविता क्यों लिखी गई है इस पर आप विचार करते रहें, कविता की उपस्थिति और कविता का जन्म एक लेखक के लिए जहां महत्वपूर्ण होता है वहीं संस्कृति पर विचार करने वाले लोगों के लिए बौद्धिक समाज को रचने वाले लोगों के लिए यह अवसर बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। कविता अपने पाठक को एक नई दुनिया सौंपती है उसका सौंदर्य संसार के सौंदर्य के साथ ही एक नई दुनिया का सौंदर्य इस तरह से रच देता है कि कुछ भी अलग से नहीं लगता पर हमारी दुनिया में बहुत कुछ नया जुड़ चुका होता है। असली कविताएं इसी तरह जन्म लेती हैं। प्रेम और अप्रेम के बीच उपजे द्वंद्व से कविता का जन्म होता है। जीवन में जहां प्रश्न है, जहां आश्चर्य है और जहां सौंदर्य है स्वाभाविक है कि उसी भूमि पर कविता और प्रेम के लिए बड़ा स्पेस मिल पाता है। कविता में आश्चर्यजनक ढ़ंग से जो प्रकृति आती है, जो सांसारिक संदर्भ आते हैं और जो जीवन होता है वह किसी और संसार के लिए नहीं होता न ही किसी और संसार की प्रस्तावना रखता है बल्कि हर महत्वपूर्ण कविता इसी संसार की कहानियों को दर्ज कर जीवन को सही ढ़ंग से समझे जाने के लिए हमें प्रस्तुत करती है।इस तरह एक बात साफ है कि कविता में प्रेम का वह अक्षय कोश होता है जो किसी भी संसार को खत्म होने से पहले बचा लिए जाने के लिए आ जाता है। कविता अचानक ही जन्म लेती है, बहुत सोच विचार कर आप कवि नहीं हो सकते , इसी तरह जीवन के उलझे हुए गणित में सफर कर रहे लोगों के पास भी कविता का दरबार नहीं होता। कविता और प्रेम की दुनिया कुछ कुछ एक ही अंदाज में खुलती है जहां अवाक चुप्पी होती है, आश्चर्य होता है और अपनी आंखों में दुनिया को भर लेने का भाव होता है। कविता मन की आंख होती है, इतना ही नहीं प्रेम का समूचा विस्तार कविता में ही आकर रंग और जीवन ले पाता है। कवि कर्म और कविता किसी आसान प्रक्रिया का नाम नहीं है न ही जब मन चाहा तब कविता लिख ही लेंगे। कोई कोई कवि तो हजारों वर्षों से एक विषय पर अभ्यास कर रहा है पर कविता लिख नहीं पा रहा है। कविता लिखना आसान है भी नहीं जो कविता नहीं लिखते या जो कविता के बारे में सोचते नहीं वो हर समय मीटर लेकर नाचते रहते हैं कि किस विषय पर कविता लिखें और न ही कविता की कार्यशाला से कविता जन्म लेती है । कविता का होना एक अलग ही विषय है। एक अलग मन और अलग से एक भाव स्थिति होती है वहां से आप संसार के लिए कविता लिख सकते हैं। संसार को जीतना देखते हैं और जीतना संसार को जानने की कोशिश करते हैं उसी अनुपात में कविताएं भी सामने आती हैं। कविता की घुसपैठ जीवन के बीहड़ में होती है । कविता किसी भी तरह से निष्क्रिय जीवन का सिद्धांत नहीं है न ही कविता केवल जीवन जीने की सुविधा है और न ही कविता के मार्फत हममें से किसी को कोई सुविधा मिल सकेगी पर कविता के प्रति हर काल में बड़ी सक्रियता दिखाई देती है । जितने महत्वपूर्ण कवि और कविताएं हैं वे जीवन संघर्षों की भट्टी से ही निकल कर आएं हैं।

जीवन भर कदम कदम पर संघर्ष के बीज मिलते हैं और जीवन इन्हीं के बीच से चलते हुए आगे बढ़ता है। जीवन से प्रेम मूलतः कविता के प्रति प्रेम का उदाहरण है। प्रेम अनंत इच्छाओं के बीच शुद्ध अंतःकरण की खोज का नाम है। न जाने कितने सपने बनते बिगड़ते रहते हैं और इसी के बीच जीवन अपने लिए रास्ता निकाल कर चलता रहा है। अपार इच्छाओं के बीच इच्छाओं के टूटते जाने और झरते जाते जीवन प्रवाह में आदमी कहां और कितना बचता उसी की तस्दीक करती हैं ये कविताएं। प्रेम कविताएं बहुत बड़ी क्रांति की उम्मीद लेकर जन्मती हैं पर अपने यहां प्रेम को सात तहों में छुपाकर उसका गला इस तरह घोंट दिया जाता है कि बहुधा प्रेम करने वाले को भी इस बात का अहसास नहीं रहता कि वह क्या कर रहा है। कहां आग जली और कहां से आग बुझ गई। यह आग जलने और बुझने की जो कहानी है वह मनुष्य के चलते रहने की कहानी है। इस कहानी को बहुत दूर तक प्रेम कविताएं प्रमाणित करती हैं। इस तरह से कविता की हर यात्रा जो कविता के बीच रहने कविता से जुड़े रहने की बात करती है वह कविता के प्रेम में होने का भी प्रमाणपत्र है। यहीं पर यह भी कहा जा सकता है कि प्रेम कविताएं और परिवार पर लिखी कविताएं जीवन का अक्षय कोश है जिसके रास्ते जिंदगी को समझने में मदद मिलती है।

पुल निर्माण को लेकर टैंडर फाइनल, जल्द काम शुरू होने की उम्मीद

करबला पर बनेगा 100 मीटर लंबा और 18.50 मीटर चौड़ा पुल

बैतूल। शहर को भोपाल, इंदौर फोरलेन के साथ परतवाड़ा मार्ग से जोडने़ वाला करबला पुल का काम अब जल्द शुरू होगा। पुल निर्माण को लेकर टैंडर हो चुके है। करीब 10 करोड़ से बनने वाले इस पुल का ठेका बैतूल की किलेदार कंस्ट्रक्शन कंपनी को दिया गया है। दरअसल अभी यहां अंग्रेजों के जमाने का बना पुराना पुल है, जो संकरा और इस पुल की ऊंचाई काफी कम है। जिसके कारण बारिश में अक्सर बाढ़ आने से आवागमन रुक जाता है। लेकिन पुल निर्माण के बाद न केवल बैतूल-इंदौर मार्ग पर यातायात सुगम होगा, बल्कि बारिश के दिनों में लोगों को जाम और हादसों से भी राहत मिलेगी। करीब दो साल पहले माचना नदी पर ऊंचा पुल बनाने की स्वीकृति मिल चुकी थी। हालांकि, बजट आवंटन और टेंडर प्रक्रिया में समय लगने से यह काम शुरू नहीं हो सका। लगभग एक साल तक फाइलें अटकी रहीं और अब जाकर यह ठेका दिया

गया है। अधिकारियों का कहना है कि इस प्रोजेक्ट को पूरा करने में लगभग डेढ़ से दो साल का समय लग सकता है। बता दे कि इस पुल से ही हरदा, इन्दौर, परतवाड़ा सहित स्थानीय रास्तों पर आवागमन किया जाता है। इसीलिए यह पुल बेहद महत्वपूर्ण है।

100 मीटर लंबा और 18.50 मीटर होगा चौड़ा – नया पुल लगभग 100 मीटर लंबा और 18.50 मीटर चौड़ा होगा। नदी तल से इसकी ऊंचाई 12 मीटर रखी गई है। पुल टू-लेन होगा ताकि वाहनों का निर्बाध आवागमन हो सके। बताया गया कि पुल निर्माण कार्य में तेजी लाने के लिए विधायक हेमंत खंडेलवाल ने पीडब्ल्यूडी और सेतु विभाग के अधिकारियों के साथ मौके पर निरीक्षण किया था। निरीक्षण के दौरान उन्होंने पुल के साथ-साथ करबला से पहले पडने़ वाली छोटी पुलिया को भी परियोजना में शामिल करने के निर्देश दिए थे। बताया गया कि पहले स्वाइल टेस्टिंग की जाएगी, जिसकी रिपोर्ट आने के बाद पुल का ड्राइंग और डिजाइन तैयार होगा। इसके बाद ही ठेकेदार निर्माण कार्य शुरू कर पाएगा।

करीब सौ साल से ज्यादा पुराना है यह पुल

करबला के पास माचना नदी पर अंग्रेजों के जमाने का बना आर्च ब्रिज मौजूद है। यह पुल करीब सौ साल से भी ज्यादा पुराना है और अब काफी जर्जर हो चुका है। इस पुल की सबसे बड़ी समस्या इसकी कम ऊंचाई है। हर साल बरसात में नदी उफान पर आती है और पानी पुल के ऊपर से बहने लगता है। इसके अलावा बारिश में बाढ़ के दौरान लोगों के बहने से मौत भी हो चुकी है। 22 जुलाई 2014 को इस पुल से एक युवक बाइक सहित बह गया था। वहीं 2016 को एक वाहन पुल के नीचे गिर गया था। इसके अलावा एक युवक भी संकरे पुल से नीचे गिर गया था। वहीं 22 मई 2024 को एक बोलेरो बिना रेलिंग के पुल से नीचे गिर गई थी। इसके बाद भी कई लोग बाढ़ आने पर पुल पार करने का प्रयास करते है और अपनी जान गवां देते है।

इनका कहना है –

करबला स्थित माचना नदी पर पुल निर्माण का ठेका हो चुका है। अभी एग्रीमेंट मेरे पास नहीं आया है। जिससे अभी यह नहीं बता पायेगे कि पुल कितने समय में बनकर तैयार होगा। पुल 100 मीटर लंबा और 18.50 मीटर चौड़ा रहेगा।

– **गिरीश हिंगवे,** एसडीओ, ब्रिज कारपोरेशन बैतूल

भगोरिया के उल्लास को हमने राज्यस्तरीय पर्व का दर्जा देकर जनजातीय लोक परंपराओं को सम्मानित किया है : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने धार में भिलाला समाज समागम में की सहभागिता

धार। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि जनजातीय वर्ग का समग्र कल्याण राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। हमारी कोशिश है कि जनजातीय वर्ग का कोई भी व्यक्ति शासन की योजनाओं के लाभ से वंचित न रहे। उन्होंने कहा कि भिलाला समाज एक साहसी और संस्कारित समाज है, जिसने मां नर्मदा के आशीर्वाद से नशामुक्ति और मृत्युभोज जैसी सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने का संकल्प लिया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नशा नाश की जड़ है, जो कई पीढ़ियों को बर्बाद कर देता है। समाज की कुरीतियों को खत्म करने का प्रयास एक सामाजिक क्रांति का संकेत है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को धार के किला मैदान में जय ओमकार आदिवासी भिलाला समाज संगठन द्वारा आयोजित 12वें प्रांतीय वार्षिक सामाजिक सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम शुभारंभ किया। सम्मेलन के तहत भिलाला समाज द्वारा युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन, रोजगार पंजीयन शिविर, स्वास्थ्य परीक्षण शिविर, नशामुक्ति जागरूकता शिविर, कैरियर मार्गदर्शन शिविर सहित सामाजिक कुरीतियों के निवारण के लिए जागरुकता शिविर भी आयोजित किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पीथमपुर थाना (बगदून) के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण भी किया।

जनजातीय नायकों का सम्मान– मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने धार जिले की भिलाला समाज की जुझारू महिला नेत्री को केंद्रीय मंत्रिमंडल में स्थान देकर समाज का गौरव बढ़ाया है। राज्य सरकार ने अलीराजपुर का नाम परिवर्तन कर आलीराजपुर कर दिया है। क्रांतिसूर्य टंट्या मामा के नाम पर विश्वविद्यालय की स्थापना और महाराजा शंकर शाह व कुंवर रघुनाथ शाह की जयंती को भव्य रूप से मनाकर हमारी सरकार ने जनजातीय नायकों और परम्पराओं को सम्मान दिया है। उन्होंने कहा कि जनजातीय समाज का राष्ट्ररक्षा और स्वतंत्रता संग्राम में अतुलनीय योगदान रहा है। भगोरिया के उल्लास को हमने राज्यस्तरीय पर्व का दर्जा देकर जनजातीय लोक परंपराओं को सम्मानित किया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार का लक्ष्य प्रत्येक समाज को आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बनाना है। खेती, पशुपालन, मत्स्य पालन और उद्योग के क्षेत्र में तेज़ी से विकास हो रहा है। उन्होंने कहा कि हम सब भारत माता के लाल हैं, ऐसे में भेदभाव का कोई स्थान नहीं है। राज्य सरकार ने समाज के वंचित वर्ग को आरक्षण का लाभ दिया है। हमारी सरकार ने सबको विकास की मुख्यधारा में जोड़ने का कार्य किया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भिलाला समुदाय की सामाजिक एकता और आत्मनिर्भरता आज समाज के दूसरे वर्गों को विकास की दिशा में नई प्रेरणा दे रही है। समाज की विभिन्न मांगों के संबंध में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भिलाला समाज को विकास की नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए हम कोई कसर बाकी नहीं रखेंगे। मांगों की पूर्ति के लिए जितना अधिक हो सकेगा वो बेहतर से बेहतर तरीके से करेंगे।

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकारें युवाओं, किसानों और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए निरंतर कार्यरत हैं। उन्होंने बताया कि आज ही प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना के माध्यम से देशभर के किसानों को बड़ी सौगात मिली है। खरगोन- बडवानी लोकसभा सांसद गजेंद्र सिंह पटेल ने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार जनजातीय समाज के समग्र विकास के लिए ठोस कदम उठा रही है। उन्होंने कहा कि वक्फ संशोधन अधिनियम के बाद जनजातीय वर्ग के भाइयों-बहनों की जमीन सुरक्षित हुई है, जिससे समाज को बड़ी राहत मिली है। भिलाला समाज ने इस निर्णय का समर्थन करते हुए सरकार के प्रति आभार जताया है। उन्होंने बताया कि खरगोन और बड़वानी जिले में भिलाला समाज के सामुदायिक भवनों का निर्माण राज्य सरकार की आर्थिक सहायता से किया जा रहा है। कार्यक्रम में अनुसूचित जाति कल्याण मंत्री नागर सिंह चौहान, देवेंद्र पटेल, पूर्व सांसद छतर सिंह दरबार, समाज के सभी विधायक एवं अन्य निर्वाचित स्थानीय जनप्रतिनिधिगण सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित थे। कार्यक्रम के आरंभ में जय ओमकार आदिवासी भिलाला समाज संगठन के प्रांतीय अध्यक्ष बीएस जामोद ने सम्मेलन की रूपरेखा और भावी गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

रेत, गिट्टी, डस्ट के अवैध परिवहन में संलिप्त 1 डंपर और 4 ट्रेक्टर-ट्राली जप्त

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार जिले में अवैध खनन, परिवहन एवं भंडारण के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया जा रहा है। खनिज विभाग बैतूल द्वारा खनि अमले के साथ जिले के शाहपुर, घोड़ाडोंगरी, आमला क्षेत्र में खनिजों के अवैध परिवहन, उत्खनन, भंडारण की रोकथाम के लिए आकस्मिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान 11 अक्टूबर 2025 को घोड़ाडोंगरी क्षेत्रान्तर्गत 01 डम्पर क्रमांक एमएच 40 सीटी 3976 को गिट्टी, डस्ट के अवैध परिवहन करते पाए जाने पर जप्त कर पुलिस चौकी घोड़ाडोंगरी एवं 01 ट्रेक्टर कमांक एमपी 48 ए 7231 को पुलिस थाना सारणी की अभिरक्षा में खड़ा करवाया गया है। वहीं शाहपुर क्षेत्र में 02 ट्रेक्टर बिना नम्बर सोनालिका एवं फार्माट्रिक को खनिज रेत के अवैध परिवहन करते पाए जाने पर जप्त कर वाहन मालिक की सुपुर्दगी में दिया गया है। इसी प्रकार आमला क्षेत्रान्तर्गत 01 ट्रेक्टर क्रमांक एमपी 48 एए 7393 को खनिज रेत के अवैध परिवहन करते पाए जाने पर पुलिस थाना आमला की अभिरक्षा में खड़ा किया गया है। उक्त वाहनों के वाहन चालकों, वाहन मालिकों के विरूद्ध प्रकरण दर्ज कर मध्यप्रदेश अवैध खनन, परिवहन तथा भण्डारण नियम 2022 के प्रावधानों के तहत प्रकरण न्यायालय अपर कलेक्टर बैतूल में प्रस्तुत किए जा रहे हैं। खनिज विभाग द्वारा अवैध उत्खनन, परिवहन एवं भण्डारण पर सतत निगरानी रखते हुए प्रभावी कार्यवाही की जा रही है।

बालाजीपुरम में मनाया सामूहिक करवा चौथ

700 से ज्यादा जोड़ों से करवाया एकसाथ करवा चौथ का पूजन

बैतूल। भारत के पांचवें धाम श्री रूकमणी बालाजी मंदिर बालाजीपुरम बैतूल में शुक्रवार की शाम 6 बजे से करवा चौथ पर सामूहिक पूजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस बार यहां इस सामुहिक करवा चौथ पूजन में 700 से अधिक जोड़े शामिल हुए। बालाजीपुरम मंदिर के प्रमुख पुजारी असीम पंडा स्वामी के अनुसार शाम 6 बजे से भगवान बालाजी की संध्या आरती की गई। इसके बाद शाम 7 बजे से बालाजीपुरम मंदिर प्रांगण में बने भक्त निवास के सामने सामूहिक पूजन का कार्यक्रम संपन्न हुआ। उन्होंने बताया कि सामूहिक पूजन गुजरात से आए पंडितों के दल द्वारा करवाया गया। जिसमें भारतीय परंपरा को बढ़ावा देते हुए इस वर्ष भी बहुत से जोड़े पारंपरिक वेशभूषा में आए, जिन्हें वहां उपस्थित लोगों द्वारा सराहा गया।

मंदिर में की गई थी पूजन सामग्री एवं भोजन की व्यवस्था -बालाजीपुरम मंदिर के मुख्य पुजारी असीम पडा स्वामी ने बताया कि बालाजीपुरम मंदिर प्रबंधन की ओर से यहां पूजन सामग्री एवं भोजन की निशुल्क व्यवस्था करवाई गई। सज सवरकर पूजन थाल लेकर आई महिलाओं को पूजन सामग्री मंदिर प्रबंधन द्वारा पूर्णतः निशुल्क दी गई। पूजन के दौरान पुजारी ने करवा माता की कथा सुनाई, इसके बाद रात लगभग 9 बजे के चांद निकलने पर महिलाओं ने चंद्र को अर्ध देकर परंपरानुसार सुहागिनो ने अपने पति के छलन्नी से दर्शन कर उनकी लंबी उम्र की कामना की और पूजन बाद पतियों ने पत्नियों को पानी पिलाकर उनका उपवास तोड़ा, इसके बाद पतियो द्वारा अपनी पत्नी के लिए थाली सजाकर लाये और व्रत के बाद पहला निवाला खिलाया। सभी दंपतियों के सामूहिक भोज के साथ ही शेष श्रद्धालुओं को भी भोजन प्रसादी दी गई।

साहित्य के नोबेल विजेता

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

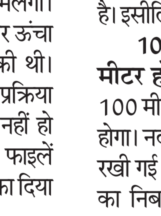

कठिन व चुनौतीपूर्ण लेखन के लिए जाने जाते हैं लास्ज्लो क्रास्ज्नाहोर्काई

लास्ज्लो हंगरी के पांक्तेय लेख हैं; सन 1985 में आये अपने पहले ही उपन्यास 'सातनतांगो' से चर्चित और प्रतिष्ठित। वह कठिन और चुनौतीपूर्ण लेखन के लिये जाने जाते हैं। यायावर वृत्ति के लास्ज्लो की खूबी है उनके सान्द्र अनुभव। उनके कुछ उपन्यासों पर फिल्में भी बनी है। इनमें बेला टार्र निर्देशित 'सातनतांगो और द मेलन्कोली ऑफ रेजिस्टेंस' प्रमुख हैं। 5 जनवरी, सन 1954 को हंगरी में बेकेस काउंटी में ग्यूला में मध्यमवर्गीय परिवार में जनमे लास्ज्लो, विषादपूर्ण और उदासीभरे कथानकों के लिये जाने जाते हैं।

अंततः ऐलान हुआ और हंगरी के यहूदी मूल के उपन्यासकार और पटकथा लेखक लास्ज्लो क्रास्ज्नाहोर्काई नोबेल खिताब के हकदार हुये। एक दहाई पहले सन 2015 में उन्हें मैन बुकर इंटरनेशनल प्राइज से नवाजा गया था। यूं तो सलमान रूश्दी और अमिताव घोष समेत अनेक नाम हवा में तैर रहे थे, किंतु नोबेल जूरी ने उत्तर आधुनिक के खाने में वर्गीकृत हंगरी लेखक को प्रतिष्ठा अलंकरण के योग्य पाया। लास्ज्लो हंगरी के पांक्तेय लेख हैं; सन 1985 में आये अपने पहले ही उपन्यास 'सातनतांगो' से चर्चित और प्रतिष्ठित। वह कठिन और चुनौतीपूर्ण लेखन के लिये जाने जाते हैं। यायावर वृत्ति के लास्ज्लो की खूबी है उनके सान्द्र अनुभव। उनके कुछ उपन्यासों पर फिल्में भी बनी है। इनमें बेला टार्र निर्देशित 'सातनतांगो और द मेलन्कोली ऑफ रेजिस्टेंस' प्रमुख हैं। 5 जनवरी, सन 1954 को हंगरी में बेकेस काउंटी में ग्यूला में मध्यमवर्गीय परिवार में जनमे लास्ज्लो, विषादपूर्ण और उदासीभरे कथानकों के लिये जाने जाते हैं। पिता ग्योर्गी वकील थे और माँ जूरिया पालिंकास सामाजिक सुरक्षा प्रशासिका। त्रासद अनुभवों के चलते पिता ने अपना यहूदी मूल छिपाये रखा और बेटे को यहूदी होने की बात तब बताई, जब वह 11 वर्ष के किशोर थे। बहरहाल लास्ज्लो लैटिन में प्रवीणता के साथ स्नातक हुये और फिर बुडापेस्ट में उन्होंने कानून की पढ़ाई पूरी की। वहीं मानविकी में उन्होंने हंगरी भाषा और साहित्य का अध्ययन किया। उनकी थीसिस, सांदोर, माराई के लेखन और अनुभवों पर एकाग्र थी, जिन्हें सन 48 में सोवियत आधिपत्य के बाद निर्वासन झेलना पड़ा था। अपने पहले ही उपन्यास से नामचीन लेखकों की कतार में आ गये। लास्ज्लो ने नवें

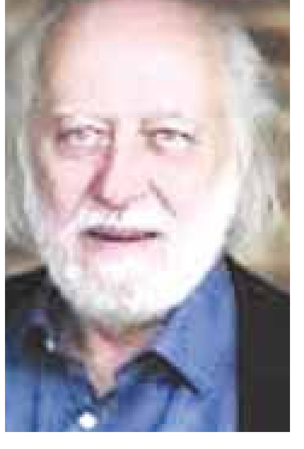

दशक और तदंतर खूब यात्रायें कीं। सबसे पहले वह बर्लिन गये और फिर चीन, जापान, मंगोलिया और संयुक्त राज्य अमेरिका। उनकी बेहिसाब यात्राओं ने उन्हें समृद्ध किया।

मंगोलिया और चीन के अनुभवों पर उनकी किताबें आयीं– द प्रिजनर ऑफ उर्गा और डिस्ट्रक्शन एंड सारो बिनीथ द हैवेन्स। क्योटो में तीन प्रवासों ने उनकी शैली व कथ्य को गहरे प्रभावित किया। अपनी चर्चित कृति 'वार एण्ड वार' को लिखते हुये उन्होंने योरोप को ओर छोर नापा। अमेरिकी कवि अलेन गिंसबर्ग से उन्हें कीमती सुझाव मिले और उन्होंने कवि के प्रति मुक्त कंठ कृतज्ञता ज्ञापित की। न्यूयार्क में वह उन्हीं के घर पर रूके। उनकी कृति मेलन्कोली ऑफ रेजिस्टेंस को सन 1993 में सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक कृति का जर्मन बेस्टेनलीस्टे पुरस्कार मिला।

बुक पुरस्कार पाने वाले इस पहले हंगारी लेखक को सन 2020 में मिंस्क में किस्सागोई में महारत के लिये बोरट्रंड प्राइज से नवाजा गया। उनके पुरस्कारों की सूची लंबी है। लास्ज्लो की ख्याति में उनके उपन्यासों पर उनके मित्र बेला की बनाई फिल्मों की खासी भूमिका है। बेला निर्देशित सातनतांगो, वर्कमीस्टर हार्मोनीज और तूरिन हॉर्स ने उन्हें वैश्विक प्रसिद्धि दी। अनेक आलोचक उनकी तुलना गोगोल से करते हैं।

सर्वविनाशकारी आतंक के घटाटेप में कला और साहित्य की स्थापना के लिये सचेष्ट लास्ज्लो किसी राजनीतिक आंदोलन की वकालत तो नहीं करते, किंतु सार्वभौम निराशा, कृषि समुदाय के पतन और सामाजिक सांस्कृतिक क्षय को उदघाटित करते हुये मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना की बात करते हैं। उनके प्राथमिक सरोकार सियासत से अधिक साहित्य, कला और मानवता में निहित है।

बेहद लंबे और दुरूह याकि जटिल वाक्यों के लिये ज्ञात लास्ज्लो ने सन 1990 में अनिको पेलिहे और फिर सन 1997 में डोरा कोप्सान्यी से शादी की। उनकी तीन संताने हैं – काता, एग्नेस और पन्नी। लंबा समय बर्लिन में बिताने के बाद लास्ज्लो संप्रति स्जेंत्लास्लोस की पहाड़ियों में अपने सुरम्य आवास में रहते हैं।

यशराज फिल्म्स (वाईआरएफ) ने अपनी आने वाली तीन बड़ी फिल्मों का ऐलान किया। इसकी शूटिंग 2026 की शुरुआत से ब्रिटेन में शुरू होगी। यशराज के इस कदम से ब्रिटेन में 3,000 से अधिक नौकरियां पैदा होंगी, जो अर्थव्यवस्था के नजरिए से भी बदलाव लेकर आएगा। इस घोषणा की जानकारी ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने खुद मुंबई में दी।

ब्रिटेन से 'यशराज' को मिली 3 फिल्मों की सौगात

ब्रिटिश प्रधानमंत्री स्टार्मर ने मुंबई के यशराज स्टूडियो का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने कई हस्तियों से मुलाकात की, जिसमें यशराज खानदान की बहू रानी मुखर्जी भी शामिल हैं। वे दो दिवसीय यात्रा पर भारत आए, जहां दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों को मजबूत करने का उद्देश्य है। ब्रिटेन का फिल्म उद्योग सालाना 12 बिलियन पाउंड का आर्थिक योगदान देता है। इससे वहां 90 हजार लोगों को रोजगार मिलता है। भारत विश्व का सबसे बड़ा फिल्म निर्माण केंद्र है। यशराज फिल्म्स का ब्रिटेन में 8 साल बाद यह बड़ा कदम इस बात का संकेत है कि भारत-ब्रिटेन व्यापार समझौते का असर अब दिखने लगा।

कीर स्टार्मर ने इस मौके पर कहा कि बॉलीवुड ब्रिटेन में वापसी कर रहा है। रोजगार, निवेश और नए अवसर इससे बढ़ने में मदद मिलेगी। यह साझेदारी भारत-ब्रिटेन व्यापार समझौते के असली उद्देश्य को साकार करती है। विकास को बढ़ावा देना, सांस्कृतिक रिश्तों को मजबूत करना और दोनों देशों की जनता के लिए फायदे सुनिश्चित करना।

इस अवसर पर यशराज फिल्म्स के सीईओ अक्षय विधानी ने कहा कि यूके हमेशा हमारे लिए बेहद खास रहा है। हमारी कुछ सबसे लोकप्रिय फिल्में जैसे दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे वहीं फिल्माई गई थीं। प्रधानमंत्री का हमारे स्टूडियो आना और इस साझेदारी पर हस्ताक्षर करना हमारे लिए सम्मान की बात है। हमने इस अवसर पर भारत और यूके के बीच कंटेंट निर्माण के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर सहयोग के रास्तों पर चर्चा की।

यह बेहद खास है कि हम 'दिलवाले

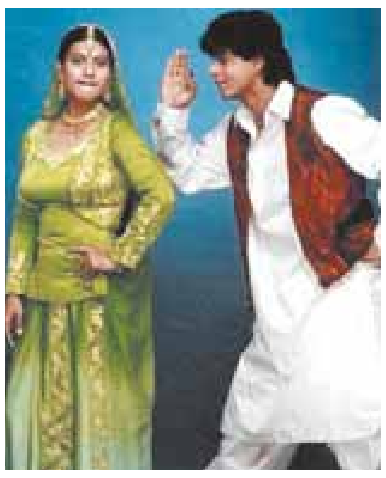

दुल्हनिया ले जायेंगे' के 30 साल पूरे होने के मौके पर फिर यूके लौट रहे हैं। हम वर्तमान में इस फिल्म का अंग्रेजी स्टेज म्यूजिकल कम फॉल इन लव यूके में प्रोड्यूस करेंगे। यूके का इंफ्रास्ट्रक्चर, तकनीक और टैलेंट बेजोड़ है, और हम इस रचनात्मक रिश्ते को और मजबूत करने के लिए उत्साहित हैं।

यह घोषणा भारत-यूके के सांस्कृतिक संबंधों के नए युग की शुरुआत का प्रतीक मानी जा रही है। यह न केवल दोनों देशों में नए रोजगार और निवेश के अवसर पैदा करेगी, बल्कि रचनात्मक आदान-प्रदान को भी नई दिशा देगी। गौरतलब है कि अतीत में भारत-यूके सहयोग से बनी फिल्मों में स्लमडॉग मिलेनियर जैसी वैश्विक सफलता शामिल रही है, जिसने मात्र 12 मिलियन पाउंड के बजट पर 300 मिलियन पाउंड की कमाई की थी। यह साबित करते हुए कि जब ब्रिटिश तकनीक और भारतीय कहानी कहने की कला एकजुट होती हैं, तो नतीजा विश्व स्तर पर असाधारण होता है।

33 साल छोटी एक्ट्रेस संग धमाल मचाएंगे सनी

अपने कई प्रोजेक्ट को पूरा करने के साथ अब सनी देओल ने एक फिल्म के लिए एक्सेल एंटरटेनमेंट के साथ हाथ मिलाया है। साथ ही उन्हें राजकुमार संतोषी की 'लाहौर 1947' का काम भी जल्द खत्म करना है। इस बीच एक और बड़ी फिल्म के सेट से उनकी तस्वीर और वीडियो लीक हो गए, जो लंबे वक्त से अटकी हुई थी। ये फिल्म है 'सूर्या - योद्धा' जिसे एम पद्मकुमार डायरेक्ट कर रहे हैं। इसी प्रोडक्शन हाउस के बैनर तले 'गदर-2' भी रिलीज हुई थी, जो ब्लॉकबस्टर रही।

लीक होकर वायरल हुआ वीडियो एक ड्रामाटिक सीक्वेंस हैं। इसमें सनी देओल प्रज्ञा जैसवाल के साथ नजर आ रहे हैं। सनी से 33 साल छोटी फिल्म की यह लीडिंग लेडी एक इमोशनली कॉम्प्लेक्स किरदार निभा रही हैं। जिसके किरदार में कई रंग देखने को मिलेंगे। दूसरे वीडियो में वे सनी के साथ बाइक वाला सीक्वेंस शूट करते दिखे।

प्रज्ञा जैसवाल को इसी साल आई 100 करोड़ी 'डाकू महाराज' में भी देखा गया था। उससे पहले वे अक्षय कुमार की 'खेल-खेल में' के लिए तारीफ बटोर चुकी हैं। प्रज्ञा एक शानदार एक्ट्रेस हैं, जो दोनों ही इंडस्ट्री में काम कर रही हैं। 'गदर 2' ने काफी तगड़ा परफॉर्म किया था। ऐसे में दोबारा उन्हीं मेकर्स के साथ कुछ बड़ा करने की प्लानिंग में हैं। फिल्म का राजस्थान में शूट चल रहा था, तभी ये वीडियो लीक हो गए। फिल्म को इसी साल रिलीज किया जा सकता है। यह एक ह्यूमन ड्रामा फिल्म है, जिसमें कुछ थ्रिलर एलिमेंट्स भी देखने को मिलेंगे।

रियल बॉक्स

फिल्मों के कथानक को मोड़ देता करवा चौथ

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हिंदी फिल्मों में करवा चौथ का त्यौहार पति-पत्नी के प्रेम और समर्पण की भावना को रेखांकित करने का सांस्कृतिक प्रतीक बन गया। इस बहाने त्योहार की लोकप्रियता में भी इजाफा और यह उत्सव अब देशभर में मनाया जाने लगा। करवा चौथ को फिल्मों ने पारंपरिक धार्मिक व्रत से सामाजिक और सांस्कृतिक उत्सव में बदल दिया। यह आज समाज में बेहद लोकप्रिय हो चुका और लगातार बढ़ रहा है। इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि हिंदी फिल्मों में करवा चौथ को भावनात्मक, पारंपरिक और रोमांटिक अंदाज में दिखाया गया है। फिल्मी दृश्यों में यह त्योहार पति-पत्नी के रिश्ते, प्यार, विश्वास और बलिदान का प्रतीक तो बनाता ही है, दर्शकों के दिल में भी खास जगह बना ली। कई फिल्मों में करवा चौथ के बहाने रिश्तों की मजबूती, संघर्ष और विश्वास को खूबसूरती से दिखाया गया। फिल्मों के इन दृश्यों की पारंपरिक पोशाक, पूजा की थाली, छलनी और चंद्रमा के इंतजार के दृश्य भारतीय संस्कृति की गहराई को प्रस्तुत करते हैं। आधुनिक फिल्मों में भी यह त्यौहार प्रेम और समर्पण की नई परिभाषा देता है, जैसे 'एनीमल' जैसी फिल्म में करवा चौथ का लंबा भावनात्मक दृश्य है।

यदि यह पड़ताल की जाए कि फिल्मों में करवा चौथ का चलन कब शुरू हुआ! तो इतिहास बताता है कि इसे पहली बार 1964-1965 में आई ब्लैक एंड व्हाइट फिल्म 'बहू बेटी' में दिखाया गया था। इसमें करवा चौथ व्रत का जश्न फिल्माए गए गाने 'आज है करवा चौथ सखी' के जरिए दिखाया था। इस गाने को आशा भोसले ने गाया और इसमें माला सिन्हा और मुमताज की अदाकारी थी। इसके बाद 1970-80 के दशक में कई फिल्मों में करवा चौथ के दृश्य देखे गए। लेकिन, व्रत को लोकप्रिय बनाने और इसे प्रचलित करने में 90 के दशक से लेकर 2000 के बाद की फिल्मों का बड़ा योगदान रहा। करवा चौथ के दृश्य फिल्मों में अकसर रोमांटिक और पारिवारिक भावनाओं को उभारने के लिए फिल्माए जाते रहे हैं। खासतौर पर उन फिल्मों में जहां पति-पत्नी के बीच दूरियां रहती है या रिश्तों में तनाव उभरता है। जैसे दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे, हम दिल दे चुके सनम, कभी खुशी कभी ग़म, बागवान, हम आपके हैं कौन और 'बाबुल' में करवा चौथ के सीन बेहद यादगार और लोकप्रिय रहे। इन फिल्मों ने करवा चौथ के व्रत को न केवल उत्तर भारत में बल्कि चारों तरफ लोकप्रिय बना दिया।

सबसे पहले करवा चौथ का फिल्मांकन फिल्म 'बहू बेटी' में जरूर हुआ, जिसे एक गीत जरिए दर्शाया था। 1978 में पहली बार 'करवा चौथ' नाम से पूरी फिल्म बनी, जिसके निर्देशक थे रामलाल हंस। 1990-2000 के दशक में 'करवा चौथ' का चलन कुछ ज्यादा बढ़ा। खासकर दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे (1995) और 'हम दिल दे चुके सनम' (1999) जैसी फ़िल्में इन्हें ज्यादा फिल्माया। देखा जाए तो अभी तक दर्जनों फिल्मों में 'करवा चौथ' के दृश्य देखे गए, जो त्योहार की लोकप्रियता और सांस्कृतिक महत्व दर्शाते हैं। 1960-70 के शुरुआती दौर में 'करवा चौथ' त्यौहार का पारंपरिक स्वरूप सामने आया। उस दौर में करवा चौथ को धार्मिक और पारिवारिक व्रत के रूप में दिखाया गया। इस त्योहार पर में महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र के लिए निर्जला व्रत करती हैं। 1990-2000 के दौर में इसमें रोमांटिक और सामाजिक बदलाव दिखाई दिया। 90 के दशक में यश चोपड़ा जैसे निर्देशकों की फिल्मों ने करवा चौथ को रोमांटिक और ग्लैमरस रूप में प्रस्तुत करना शुरू किया।

'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' और 'हम दिल दे चुके सनम' जैसी फिल्मों ने करवा चौथ

के सीन को बेहद लोकप्रिय बनाया, जहां पति-पत्नी के बीच के प्रेम और त्याग को नाटकीय और भावुक अंदाज में दिखाया गया। इसके साथ ही इस त्योहार की पारंपरिकता में आधुनिकता का समावेश हुआ, व्रत के पीछे के भाव और रिश्तों की गहराई को दिखाया गया। लेकिन, 2000 के बाद इसका रूप विविधता वाला हो गया और इसमें व्यवसायीकरण दिखाई देने लगा। फिल्मों में करवा चौथ के दृश्य अब पारंपरिक व्रत से आगे बढ़कर फैशन, ग्लैमर और कंज्यूमैरिज्म का हिस्सा बन गए। कई फिल्मों में करवा चौथ में सामाजिक और वैवाहिक मुद्दों को भी छुआ जाता रहा है। साथ ही गाने, सजावट और त्योहार की प्रस्तुति में बदलाव आया, जो दर्शकों के सांस्कृतिक अनुभव को नया रूप देता है। फिल्मों के साथ ही टीवी सीरियलों ने भी इस त्योहार को घर-घर में पहुंचा दिया।

करवा चौथ पर बनी फिल्मों के कुछ यादगार दृश्य ऐसे हैं, जो पति-पत्नी के प्रेम, त्याग और पारिवारिक भावनाओं को अद्भुत ढंग से दर्शाते हैं। 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' में शाहरुख खान और काजोल का छत पर करवा चौथ मनाते हुए सीन बेहद लोकप्रिय है। इसमें काजोल की भूमिका एक चालाक और प्रेमपूर्ण पत्नी की रही, जो व्रत के दिन बीमार बनकर शाहरुख को चुपके से पानी पिलाती है। 'हम दिल दे चुके सनम' में सलमान खान और ऐश्वर्या राय का करवा चौथ सीन पारंपरिक गुजराती रीति-रिवाजों के साथ, खूबसूरती से फिल्माया गया। फिल्म में करवा चौथ का सीन दो बार आता है, जिसमें ऐश्वर्या राय अपने पति के लिए व्रत रखती है। 'कभी खुशी कभी ग़म' में कई परिवारों के साथ करवा चौथ का भव्य रूप दिखाया गया। काजोल, शाहरुख खान, अमिताभ बच्चन, जया बच्चन, ऋतिक रोशन और करीना कपूर के करवा चौथ वाले सीन भव्यता और पारिवारिक भावना से भरपूर हैं। जबकि, 'बागबान' के कथानक में हेमा मालिनी पति अमिताभ बच्चन से दूर होने के बावजूद करवा चौथ का व्रत रखती है। फिल्म का भावुक और यादगार दृश्य पति-पत्नी के प्रेम और समर्पण को दर्शाता है। ऐसे दृश्यों में 'बाबुल' भी ऐसी ही फिल्म है, जिसमें सलमान खान, रानी मुखर्जी, अमिताभ बच्चन और हेमा मालिनी के साथ करवा चौथ के सीन में पति-पत्नी दोनों अपनी-अपनी पार्टनर के लिए व्रत रखते हैं, जो एक अलग ही भावनात्मक दृश्य है।

करिश्मा कपूर और सुष्मिता सेन फिल्म 'बीबी नंबर-1' में सलमान खान के लिए व्रत रखती हैं। इसमें करवा चौथ त्यौहार नाटकीय बदलाव लेकर आता है। फिल्म 'इश्क विश्क' में शाहिद कपूर और अमृता राव के बीच करवा चौथ का सीन रोमांटिक मोड़ बनता है, जब शाहिद को पता चलता है कि अमृता ने उसके लिए व्रत रखा है। आमिर खान और करिश्मा कपूर की फिल्म 'राजा हिंदुस्तानी' में करवा चौथ का दृश्य अपनी भावुकता के लिए यादगार बन गया। सलमान खान और प्रीति ज़िंटा की फिल्म 'दिल ने जिसे अपना कहा' में करवा चौथ सीन ने भी दर्शकों के दिलों को छुआ था। 'हम तुम्हारे हैं सनम' फिल्म में भी करवा चौथ का प्रसंग प्रेम और पारिवारिक रिश्तों को बखूबी से दर्शाता है। इन फिल्मों के ये सभी दृश्य सिनेमा में करवा चौथ के महत्व और सांस्कृतिक रंग को परिभाषित करने में सफल रहे। खासकर शाहरुख-काजोल के 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे' और सलमान-ऐश्वर्या के 'हम दिल दे चुके सनम' के इस त्योहार के दृश्य सबसे अधिक क्लासिक और फेमस माने जाते हैं। साथ ही ये प्रसंग इस त्यौहार को हिंदी सिनेमा में एक प्रेम और समर्पण के प्रतीक के रूप में लोकप्रिय बनाने में सहायक रहे।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

'राधे' से हटाए जाने पर टूटा था रजत का दिल

शाहरुख के बेटे आर्यन के शो 'द बैड्स ऑफ बॉलीवुड' में कैमियो भूमिका से कमबैक करने वाले रजत बेदी ने सलमान खान को लेकर एक किस्सा सुनाया। उन्होंने बताया कि वो सलमान खान की फिल्म 'राधे' से कमबैक करने वाले थे। लेकिन, जब भाईजान को ये खबर मिली तो उन्होंने उनसे कहा कि तुम यह रोल नहीं करोगे, क्योंकि यह तुम्हारे लिए सही रोल नहीं है। इस बात से रजत का दिल टूट गया था।

हाल ही में आर्यन खान की वेब सीरीज 'द बैड्स ऑफ बॉलीवुड' में नजर आए रजत बेदी ने लंबे समय बाद परदे पर एंट्री मारी और उनके किरदार ने लोगों को खूब गुदगुदाया भी है। इस सीरीज के बाद से ही रजत बेदी लगातार सुर्खियों में हैं। हाल ही में उन्होंने अपने एक इंटरव्यू में बताया कि सलमान खान ने अपनी फिल्म 'राधे' से उन्हें हटा दिया था। हालांकि, इसके पीछे की उन्होंने वजह भी बताई।

रजत ने बताया कि सलमान खान की फिल्म 'राधे' के साथ वो कमबैक के लिए पूरी तरह तैयार थे। दरअसल उन्हें सलमान की इस फिल्म में एक अहम रोल के लिए अप्रोच किया गया था। रज को जब ये ऑफर आया तो उन्हें ये पसंद आया था और इसे उन्होंने स्वीकार भी कर लिया था। कहते हैं कि जब सलमान खान को यह पता चला, तो उन्होंने रजत से मुलाकात की और उन्हें कमबैक के लिए थोड़ा और इंतजार करने को कहा। सलमान ने इस फिल्म से रजत को हटा दिया लेकिन इसके साथ ही उन्होंने उन्हें एक शानदार एक बड़ा कमबैक प्रोजेक्ट देने की बात कही।

जीवन के संध्याकाल में दुनिया से विदा हुई संध्या

अशोक जोशी

संध्या शांताराम को मराठी और हिंदी में अपने शानदार अभिनय और कुशल नृत्य के लिए जाना जाता था। वे वी शांताराम की तीसरी पत्नी थीं। उन्होंने अपनी दूसरी

पत्नी जयश्री से तलाक के एक महीने बाद ही संध्या से शादी कर ली। दोनों ने फिल्म 'पिंजरा' में साथ काम किया था। हालांकि, संध्या ने अधिक फिल्में नहीं की, लेकिन उन्हें हिंदी सिनेमा की कुछ यादगार फिल्मों के लिए जाना जाता है।

हिंदी सिनेमा में कुछ कलाकार ऐसे हुए, जो गिनती की फिल्मों और अपने ही परिवार की फिल्मों ही दिखाई दिए। ये वे कलाकार हैं, जिन्होंने अपनी सीमित भूमिकाओं से न केवल दर्शकों का दिल जीता, बल्कि अपनी पहचान को स्थायी रूप से सिने इतिहास में दर्ज करा दिया। आमतौर अभिनेत्रियों के साथ ऐसा हुआ है। कल्पना कार्तिक ने केवल नवकेतन की फिल्मों में ही काम किया, लेकिन उनकी पहचान बनी रही। जयमाला ने केवल अपने पति आदर्श की फिल्मों में ही काम किया। नाडिया केवल वाडिया मूवीटोन की फिल्मों में ही आई। इसी परंपरा को सम्मान के साथ आगे बढाया था फिल्म अभिनेत्री संध्या ने। जिन्होंने केवल वी शांताराम के निर्देशन में बनी फिल्मों में ही काम कर उसे इस तरह जीवंत किया कि दर्शक उन्हें नहीं भूले। गत दिनों 4 अक्टूबर को जब 94 वर्ष की उम्र में उन्होंने अपनी अंतिम सांस ली, तो हर सांस के साथ उनकी अभिनीत फिल्मों के नवरंग ताजा हो उठे।

आमतौर पर हिन्दी फिल्मों में अभिनेत्रियों के लिए खूबसूरती को सबसे जरूरी योग्यता कहा और माना गया है। उस कसौटी पर तो संध्या खरी नहीं उतरती थी, लेकिन अपने अभिनय और खासकर नृत्य से उन्होंने इस कमी को पूरा कर जो कला दिखाई वह मील का पत्थर बन गई। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह कि उनकी अभिनीत ज्यादातर फिल्में मॉसेस और क्लासेस दोनों को खूब पसंद आई। संध्या शांताराम हिंदी सिनेमा के दिग्गज फिल्मकार वी शांताराम की पत्नी थीं। उन्होंने मराठी फिल्मों से अपने अभिनय की शुरुआत की। उनकी पहली फिल्म 'अमर भूपाली' थी। संध्या ने मराठी फिल्म 'पिंजरा'

में अपने शानदार अभिनय और डांस से हिंदी फिल्म इंडस्ट्री को हिलाकर रख दिया था।

वी शांताराम ने 1951 में अपनी फिल्म 'अमर भूपाली' के लिए नई प्रतिभाओं की तलाश के दौरान संध्या की प्रतिभा को पहचाना था। फिल्म निर्माता को उनकी मनमोहक आवाज ने प्रभावित किया। इस फिल्म में संध्या ने एक सिंगर का रोल प्ले किया था। 'नवरंग' फिल्म से सबसे लोकप्रिय गीत 'अरे जा हट नटखट' से लोकप्रिय हुई संध्या का असली नाम विजया देशमुख था। साल 1959 में वी शांताराम की फिल्म 'नवरंग' से उन्होंने बॉलीवुड में कदम रखा था। अपनी पहली ही 'हिन्द' से ही वह खूब हिट हुई थीं। उनका यह गीत आज भी पॉपुलर हैं। इस गाने के लिए संध्या ने खासतौर पर शास्त्रीय नृत्य सीखा था। उस समय में कोई कोरियोग्राफर नहीं होता था। इस गाने में नजर आने वाले सभी डांस स्टेप्स संध्या और उनके पति वी शांताराम ने स्वयं ही तैयार किए थे।

शांताराम इस गाने को कुछ अलग तरह से पेश करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने गाने के सेट पर असली हाथी और घोड़ों का इस्तेमाल किया थ। वहीं एक्ट्रेस संध्या ने असली जानवरों के बीच निडर होकर डांस किया। संध्या जानती थीं कि ये उनके

लिए आसान नहीं होने वाला, लेकिन वे डरी नहीं और गाने की शूटिंग से पहले उन्होंने हाथी और घोड़ों से दोस्ती की, उन्हें अपने हाथों से खाना खिलाया और पानी पिलाया। संध्या के इस के इस निडर और दमदार स्वभाव से डायरेक्टर वी. शांताराम बहुत प्रभावित हुए थे।

संध्या को ऐसा करते देख शादीशुदा वी शांताराम होते हुए भी उनके मुरीद होकर उन्हें दिल दे बैठे। दोनों ने शादी रचा ली। इसके बाद संध्या ने पति की ही फिल्मों में ज्यादातर काम किया, जिसमें दो आंखें बारह हाथ, पिंजरा, नवरंग, झनक झनक पायल बाजे और अमर भूपाली जैसी फिल्में शामिल हैं। उन्हें झनक झनक पायल बाजे, दो आंखें बारह हाथ, नवरंग, पिंजरा और 'अमर भूपाली' जैसी फिल्मों के लिए आज भी याद किया जाता है। फिल्म 'झनक झनक पायल बाजे' में वह गोपी कृष्ण के साथ दिखाई दी थी। इस फिल्म के लिए गोपी ने ही उन्हें डांस सिखाया। फिल्म ने बाद में चार फिल्मफेयर पुरस्कार अपने नाम किए थे।

बाद के दिनों संध्या का आकर्षण कम होने लगा और वी शांताराम भी अभिनय छोड चुके थे। लेकिन, अपनी पत्नी को उन्होंने सदा एक खूबसूरत नायिका के रूप में ही देखा था। वह उन्हें नायिका के रूप में पर्दे पर पेश करने का मोह न छोड़ सके। 'झनक झनक पायल बाजे' में उन्होंने संध्या के साथ गोपीकृष्ण की जोड़ी पेश की। हालांकि पर्दे पर यह जोडी उतनी सहज नहीं लगी। लेकिन, जब दर्शकां ने दोनों को डांस करते देखा तो उन्हें यह जुगलबंदी और फिल्म के गीत इतने पसंद आए कि यह फिल्म भी हिट हो गई।

इस सफलता को वी शांताराम संध्या की सफलता मानने की भूल कर बैठे। इसलिए उन्होने संध्या को लेकर 'लड़की सह्याद्री की' का भव्य पैमाने पर निर्माण किया। यह संध्या की एकमात्र फ्लॉप फिल्म थी। उसी दौर में उन्होंने संध्या को 'सेहरा' और 'जल बिन मछली नृत्य बिन बिजली' में प्रस्तुत करवाया। दोनो फिल्मों के गीत बहुत लोकप्रिय हुए। 'सेहरा' में एक बार फिर उन्होने अपनी डांस प्रतिभा का प्रदर्शन किया। हालांकि, जल बिन मछली में भी उनके नृत्य बेहतरीन थे और सेट भी आकर्षक थे। लेकिन, तब तक दर्शकों का जायका बदल चुका था। लिहाजा यह फिल्म आशा के अनुकूल बिजनेस नहीं कर सकी और इसके साथ ही संध्या के फिल्मी करियर पर फूलस्टोप लग गया। इसके बाद वह शांताराम परिवार के दायरे में सिमट कर रह गई। सार्वजनिक जीवन में भी उनका योगदान नहीं रहा और 4 अक्टूबर को जीवन की संध्या में संध्या की दुनिया से विदाई हो गई। लेकिन, वह गिनती भर फिल्मों के बावजूद हिन्दी सिनेमा के इतिहास में अपना नाम दर्ज कर गई।

एक बीमार... और इतने सारे अनार !

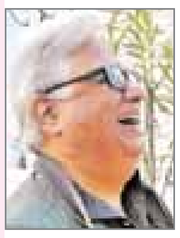

प्रकाश पुरोहित

उस युवक ने आष्टा से इंदौर के लिए **चार्टर्ड-बस** ली थी, दोपहर बाद 3.30 बजे की! उसे रात दस बजे इंदौर से मुंबई की उड़ान लेना थी और वहां से देर रात ढाई बजे लंदन जाना था! हर जगह के लिए भरपूर समय लेकर चला था!

आष्टा से बस ठीक समय पर पकड़ी, लेकिन सोनकच्छ के आगे जवाब दे गई! कोई पाइप फट गया था, आगे जाना नामुमकिन था। पीछे आ रही चार्टर्ड-बस में जगह नहीं थी तो भी उसने बाकी सफर खड़े-खड़े तय करना मंजूर कर लिया कि समय से इंदौर पहुंच जाए!

'ये बस कब तक पहुंच जाएगी इंदौर...?' उसने पास बैठे यात्री से पूछा।

'आठ-बीस पर तो वापसी है इसकी... यानी आठ से पहले तो पहुंच ही जाएगी।' यात्री ने घड़ी देखते हुए बताया, जबकि यह बात वैसे भी बताई जा सकती थी।

देवास पार हो गया... और फिर लगा जैसे बस तो चलना ही भूल गई है। सर्विस रोड बना तो दिए हैं, लेकिन इतनी गुंजाइश नहीं है कि दो गाड़ी भी साथ निकल सके। दस-दस मिनट, एक-एक जगह पर रुकने के बाद सरक रही थी बस! स्कूटर, मोटरसाइकल तो फिर भी इधर-उधर से निकल रही थीं, लेकिन इतनी बड़ी बस को ज्यादा जगह लगती है ना! देखते ही देखते आधा घंटा गुजर गया और बस ने एक बार भी स्पीड नहीं पकड़ी!

'ऐसे तो ये कितने बजे पहुंचेगी?' खड़े यात्री ने पूछा!

'ऐसा जाम रहा तो आठ-दस घंटे यहां आम बात है।' अनुभवी-लोकल ने बताया। खड़े यात्री के चेहरे पर पसीना छलक आया!

उसने बताया कि इंदौर से फ्लाइट लेनी है मुंबई के लिए और वहां से लंदन की!

'कितने बजे की है इंदौर से?'

'दस बजे की है...!'

'तो बड़ी मुश्किल होगी फिर तो...! लगता नहीं है कि पौने नौ बजे से पहले पहुंच पाएगी!'

'तो फिर मुझे क्या करना चाहिए?' इंदौर के लिए नया था विदेश जा रहा यात्री!

तभी आसपास की सीट के यात्री भी इस 'परिचर्चा' में शामिल हो गए!

'बस तो पकड़ना ही नहीं थी। टैक्सी कर लेते तो अब तक हवाई अड्डे पहुंच जाते।'

'कायदे से तो तुम्हें कल रात को ही निकल जाना था, सुबह इंदौर घूमते... और शाम को पैदल भी निकलते तो हवाई अड्डे टाइम से पहुंच जाते।'

'इससे तो बढ़िया रहता... भोपाल चले जाते...! उधर ऐसा जाम नहीं लगता है।'

'भोपाल में रात की फ्लाइट कम ही है! भोपाल वाले भी इंदौर से ही पकड़ते हैं।'

'कितना बुरा होगा ना... मुंबई की फ्लाइट गई तो कोई बात नहीं... लंदन की... कितने की थी?'

'अस्सी हजार की...!'

'अरे... रे... लाख-सवा लाख की उतर जाएगी।'

'ऐसे-कैसे...! यूं करो भय्या, विजय नगर में उतर जाना और टैक्सी पकड़ लेना, भगवान ने चाहा तो फ्लाइट मिल जाएगी।'

'विजय नगर का स्टॉप तो बंद हो गया... अब तो सीधे स्कीम-140 पर रुकेगी!'

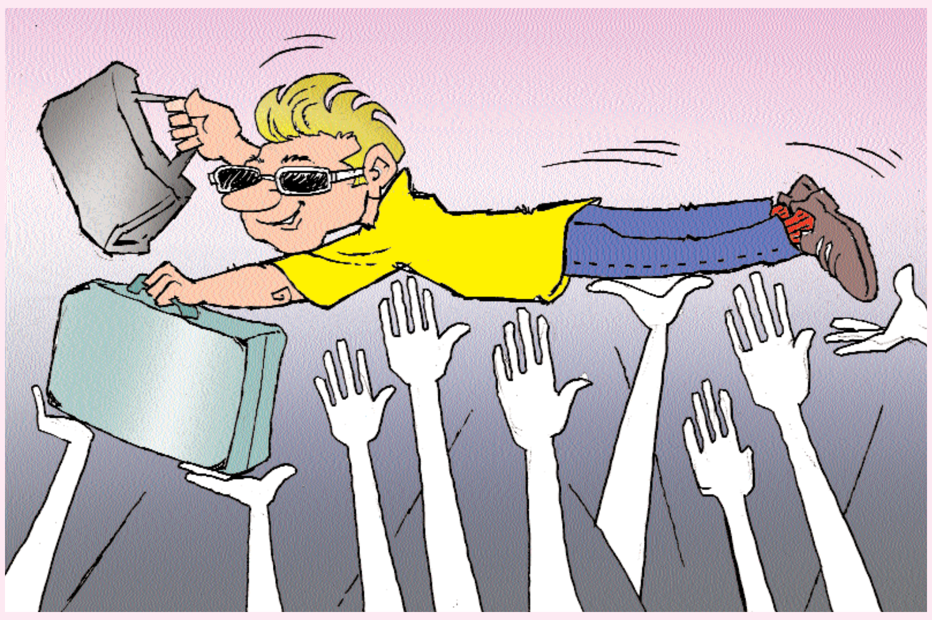

'तो क्या... अभी से ओला बुक कर लो। वहां जैसे ही उतरो... टैक्सी से रवाना हो जाना।'

'140 से तो पिकअप भी मिलता है...।'

'अरे... भरोसा नहीं उसका... मिले ना मिले। पिछले हफ्ते तो यहां लोगों ने बस आगे ही नहीं बढ़ने दी थी... कि पिकअप वेन थी ही नहीं! बड़ी देर तक घमासान चला...! आप तो ऐसा करो... बस स्टैंड पर ही टैक्सी बुला लो...! आधे घंटे में पहुंच जाओगे।'

'उलटी बात कर रहे हो...! गरबे-भंडारे चल रहे हैं सहर में... ए.बी. रोड पर तो और बुरे हाल हैं। ठीक यही रहेगा कि यहीं 140 पर उतर जाओ... और पिकअप के भरोसे मत रहना! अभी से... ऊबर कर लो बुक...! लगेज कितना है...?'

'हां, दो सूटकेस हैं... बस!'

'तो बस... जल्दी से आगे निकल जाओ... बस रुके, वैसे ही कूद पड़ना और सामान लेकर निकल पड़ना! महाकाल ने चाहा तो फ्लाइट भी एकाध घंटे तो लेट हो सकती है, फेस्टिवल-सीजन है ना... और रात की फ्लाइट, वैसे भी कभी टाइम से कहां आती है।'

'जी... थैंक-यू... धन्यवाद! आप ने बहुत मदद की! यदि लंदन पहुंच गया तो जरूर बताऊंगा। आपका नंबर...?'

नंबर की अदला-बदला हुई। जब बस-140 पर रुकी, पौने नौ बज रहे थे। सभी दुआ कर रहे थे कि युवक की फ्लाइट लेट हो जाए!

बदलना होगा कलाकृतियों को देखने का नजरिया

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

जीवन, मरण, आना-जाना, हमेशा से रहा है। धरा, धरा के ऊपर बसे हर एक जीव, प्राणी की तारतम्यता हमेशा से जस की तस रही है। कुछ विलुप्त तो कुछ प्रकट होने वाली श्रेणी में भी है पर एक बात तो तय है कि सृष्टि में कुछ भी अनायास ही नहीं होता, उसके होने का कारण भले हमारे समझ से परे हो पर उसका होना किसी न किसी कारण से ही होता है। संजीवनी बूटी पहले बस एक फालतू सी घास ही रही होगी पर बाद में उसकी भूमिका पूरे भूमि हेतु महत्त्वपूर्ण बन गई। धरा पर लोगों का रहना समय के साथ बाद में सामाजिक परिवेश के साथ देखा जाने लगा पर जब इंसान इन सभी से बिलग अकेले ही रह रहा होगा अपने को या अपने आसपास को साफ-सुथरा, स्वच्छ बनाने के प्रयास में रहा होगा जिसके हेतु उसे सजाने के लिए उसके मन में कुछ न कुछ उपाय जरूर कौंधे होंगे। आज भी जब हम सजावट में कुछ अलग करना चाहते हैं कुछ विशेष की उत्पत्ति हो जाती है जिसके निर्माण में विज्ञान भले ही होता होगा पर कला भी जरूर होती है। मन जैसे ही कुछ सोचता है कला की प्रक्रिया गतिमान हो जाती है। समाज निर्माण के बाद तो बहुत ही बदलाव आया और इन सभी चीजों के साथ सबसे तेजी से जो बदला वो कला ही थी। समय के साथ कला के रुपों और माध्यमों में खूब बदलाव हुए। कला नये-नये रूपों में हमारे सामने रही। घर में नानी, दादी, चाची जब कुश से डोल्ची, सलाई से स्वेटर, कंटोपा, तोड़न बनाती थीं तो हमें उसमें कला कभी नजर नहीं आयी पर आज जब बड़े-बड़े कला दीर्घाओं में बड़े से कैनवास पर उसी तोड़न का कोई टुकड़ा या पूरा तोड़न ही लगा कर कुछ रंगों के साथ संयोजित कर दीवाल पर टांग दिया जाता है तो वो बड़ी और खूबसूरत कलाकृति बन जाती है। क्या यहां पर कला बदली है या हमारी सोच जो उम्र के साथ भी बदलती है। कभी-कभी सदियों तक कला हमारे सामने पड़ी होती है पर हम उसे पहचान तक नहीं पाते। एक प्रदर्शनी में खपड़े और घोरियों को संयोजित कर गज़ब की कलाकृति बनाई गई थी।

तो क्या कमी कला में है या हमारे दृष्टि में है या कला थी ही नहीं कह कर हम अपना पीछा छुड़वा लेने से खुद को उस पूरे प्रक्रिया से ही अलग कर धन्य महसूस कर लेते हैं। प्रश्न तो हमेशा से ही रहा है, था और रहेगा।

समय के साथ लोग, शासन एवं रहन-सहन जिस तरीके से बदलता है कुछ ऐसे ही कला भी बदलती और अपनी यात्रा तय करती रहती है, हाँ इसी बीच कभी वो उफान पर होती है तो कभी तूफान से प्रभावित हो अपने अस्तित्व को बचाने हेतु संघर्षरत तो कभी किसी के शासनकाल में सुप्तावस्था को प्राप्त कर जाती है पर होती जरुर है। बात जब शासन-प्रशासन से परे की थी कला तब भी थी।

ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः।

हविष्मन्तो अरड्कृतः।। (ऋ 01/14/05)

ऋग्वेद के इस मंत्र में ईश्वर के दर्शन और प्राप्ति के संबंध में गहराई से बात कही गई है और इसी बहाने कुछ विशेष कला के भी दर्शन यहाँ हुए हैं, कला के प्राप्ति एवं दर्शन हेतु भी ये मंत्र प्रासंगिक है। कोई (अवस्यवः) डर से या अपने गलती पर पर्दा लगाने के गरज से भक्ति करता है या ईश्वर को याद करता है तो कोई प्रतिभा, विद्वता या ज्ञान (कण्वासः) के भरोसे प्रभु में लीन होना चाहता है और कुशा को काट कर सुन्दर तरीके से साफ-सफाई के साथ, सुन्दर पात्रों को सजा कर या (वृक्तबर्हिष) यज्ञ में गंदगी, खर-पतवार, झाड़-झंखाड़ आदि को हटाकर, धरा को समतल कर, सुन्दर आसन बिछाकर मन के भीतर के गंदगियों, काम, क्रोध, लोभ आदि से विरत हो कर ध्यान करता है, जिस भांति (हविष्मन्तः) यज्ञ में आहुति हेतु प्रयोग होने वाली हवि को पहले साफ-सुथरा, पवित्र किया जाता है उसके बाद ही प्रयोग किया जाता है उसी प्रकार

(अरङ्कृत) सांसारिक झंझटों से मुक्त हो कुछ पाने विशेषतः ईश्वर के दर्शन हेतु जब हम बैठते हैं तो दर्शन की प्राप्ति अवश्य हो जाती है। कलाकारों के साथ भी कुछ ऐसा ही है। सांसारिक झंझटों, झंझावातों से अलं (बस कर लेना) कर लेने के बाद तो कोई भी ऐसा कार्य नहीं है जिसे नहीं किया जा सकता। कला में भी कुछ खुद को सभी से अलग करते हुए ऋषियों की भांति सभी मद, मोह, क्रोध, लोभ से विरत बस लगे होते हैं और निरंतर लगे होते हैं, सफलता उन्हें जरूर मिलती है, जिसका जीता-जागता उदाहरण अजंता की प्राचीन गुफाएँ और कलाकृतियाँ हैं। गांवों में वर्ष के हर महीनों में कोई न कोई विशेष तीज-त्योहार जरूर पड़ते हैं और सभी के अपने-अपने विधान हैं और सभी में किसी न किसी रूप में कला की जरूरत जरूर महसूस की जाती है। कला का रूप और क्षेत्र दोनों व्यापक है बस हमें एक बिमारी सी हो गई है कि जिस पर किसी संस्थान की मुहर या किसी डिग्री की छाप न हो उसे हम कलाकार मानने को तैयार ही नहीं होते बावजूद इसके भारत के या अन्यत्र भी हर गांव और घर से कलाकृतियां बनकर निकलती है। अभी को ही ले लीजिए दीपावली आने को है खैर अब तो पक्के घरों का बोलबाला है। जब बखरियां होती थी तो पिड़ोर से बाकायदा लिपाई होती थी जो धूप का साथ पाते ही चमक उठती थी। बांस के कैनियों को कूंच कर कूंची का रूप दिया जाता था और दीवालों पर तरह-तरह की आकृतियां बनाई जाती थीं जो सभी घरों में होता था तो क्या हर घर को कलाकारों का घर नहीं कहा जा सकता है। बुढ़िया दादी का गंउखा और झरोखों को लीपते वखत रंगना की डिबिया में अंगुली डुबो कर और उसी अंगुली से गंउखा के चारों तरफ बनाई गई टेढ़ी-मेढ़ी आकृतियां क्या किसी कलाकृति से कमतर होती है। बच्चे खेल-खेल में घर के सामने छोटे-छोटे मंदिर बनाते हैं, सजाते हैं दीवाली हेतु रंग-बिरंगे माहौल का निर्माण करते हैं, फटे-पुराने कपड़ों का उपयोग कर कुछ विशेष बना जाते हैं, हउदा जहां गाय-भैंस के खाने का प्रबंध होता है उसे भी बाकायदा सजाया जाता है, पेड़-पौधों के चबूतरे बना कर उसे चित्रित किया जाता है। रंग-रंग के मिट्टी के बर्तनों और खिलौनों को बनाया जाता है। लकड़ी, मिट्टी, लोहे आदि की विभिन्न प्रकार की वस्तुएं शुरू से ही बनती रही है बस हम उसे कला नहीं मानते थे मसलन एक बढ़ई जब खूब मेहनत कर दिमाग लगा कर एक उत्कृष्ट दरवाजा बनाता है हम उसे भी कला नहीं मानते अगर वही दरवाजा किसी डिग्रीधारी ने बनाया होता और किसी महान मनुष्य के यहां प्रदर्शन हेतु रखा होता या किसी दीर्घा में प्रदर्शित होता तो उसी को उत्कृष्ट कलाकृति का दर्जा मिल जाता। कमी हममे या हमारी सोच में है या कलाकार, कलाकृति में है समझना होगा।

समय के साथ कुछ तो बहुत आगे बढ़ जाते हैं जबकि कुछ परिस्थितियों के दास बन दाम, काम और भय के कारण अपने कर्म से विरत हो जाते हैं, ऐसे समय में कला की हानि भी होती है। मध्यकालीन अपभ्रंश शैली कुछ ऐसी ही परिस्थितियों से गुजरी हुई जान पड़ी है।

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे।

जुहूमसि द्यविद्यवि। (ऋ 01/04/01)

कैल्शियम, प्रोटीन, वशा, लैक्टोज, अमीनो एसिड जैसे पदार्थों से भरपूर, उत्तम, पौष्टिक दूध देने वाली गायों को जिस प्रकार श्रेष्ठता के आवरण में रखा जाता है, सत्कार किया जाता है और दुग्ध दोहन हेतु उपयोग किया जाता है है उसी प्रकार हमें भी प्रतिदिन विशेष, उत्तम, रुचिकर, आवश्यक, पदार्थों, विषयों, वस्तुओं, ज्ञान आदि को उत्पन्न करने या विकसित करने या क्रियान्वित करने वाले चतुर विद्यावान, विद्वान, कलाविद्, विचारक आदि को प्राप्त करने का प्रयास करने चाहिएं, संपर्क साधने का प्रयास, सानिध्य प्राप्ति का प्रयास या सभी गुणों के उत्पादक श्रेष्ठ परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। दूध प्राप्ति के लिए जैसे गाय की सेवा आराधना की बात जगजाहिर है ठीक ऐसे ही उत्तम गुण प्राप्ति हेतु गुणी व्यक्ति, ज्ञानी, गुरु, आचार्य, रक्षा के लिए राजा और उत्तम शिल्प हेतु श्रेष्ठ शिल्पी की सेवा, आराधना करनी चाहिए। संलग्न कलाकृति बिकाश भट्टाचार्जी की है।

❑ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

जाफरान की खुशबू में... बजबजाते पल !

'सैफरन किंगडम' की कहानी उन सारी कहानियों का निचोड़ है, जो अरफात ने अमेरिका, कनाडा में कश्मीरी लोगों से सुनी। कश्मीर की तीन पीढ़ियों के सहारे बात की कोशिश अरफात ने की है। यहां गोलियों की आवाज आती है। कभी-कभार खून दिखाई देता है, लेकिन दहशत परदे पर फिल्म देखने वालों को महसूस होती है। परिवार के अनुभव को कैमरे की नजर से दिखाने की कोशिश है, लेकिन यह किसी भी कश्मीरी परिवार की कहानी हो सकती है, जो अब नहीं बचे, लापता और उन लोगों की कहानी, जिन्हें याद रखना बाकी है। अरफात शेख को फिल्म की शूटिंग जॉर्जिया में करनी पड़ी और इसलिए कलाकार चुनने में दिक्कतें पेश आई।चाहते थे कि सभी कलाकार कश्मीरी हों, लेकिन यह मुमकिन नहीं था।

इतने बरस बाद भी कश्मीर के लोग आजाद नहीं हो पाए हैं। इस और उस पार की लड़ाई में इस कदर बर्बाद हो रहे हैं कि बताते गला भर जाता है। कश्मीरियों की जिंदगियों को जोड़ कर फिल्म बनी है- 'सैफरन किंगडम।' उस कश्मीर की जिंदगी दिखाती है, जो आम कश्मीरी जी रहा है। मुस्लिम परिवार में शादी का मातम में बदल जाना, सैनिकों के जूतों तले फूलों का कुचला जाना। निर्देशक अरफ़ात शेख का कहना है कि वो कहानी कहना चाहता था, जो यह बताए कि आम कश्मीरी न तो सिर्फ आतंकवादी है, न ही वो फकत बेहतरीन मेजबान है बल्कि दहशत में जिंदगी गुजार रहे हैं।

'सैफरन किंगडम' की कहानी उन सारी कहानियों का निचोड़ है, जो अरफात ने अमेरिका, कनाडा में कश्मीरी लोगों से सुनी। कश्मीर की तीन पीढ़ियों के सहारे बात की कोशिश अरफात ने की है। यहां गोलियों की आवाज आती है। कभी-कभार खून दिखाई देता है, लेकिन दहशत परदे पर फिल्म देखने वालों को महसूस होती है।

परिवार के अनुभव को कैमरे की नजर से दिखाने की कोशिश है, लेकिन यह किसी भी कश्मीरी परिवार की कहानी हो सकती है, जो अब नहीं बचे, लापता और उन लोगों की कहानी, जिन्हें याद रखना बाकी है। अरफात शेख को फिल्म की शूटिंग जॉर्जिया में करनी पड़ी और इसलिए कलाकार चुनने में दिक्कतें पेश आई।चाहते थे कि सभी कलाकार कश्मीरी हों, लेकिन यह मुमकिन नहीं था।

शेख जानते थे कि कश्मीरी अभिनेताओं को अभिनय के लिए कहना मुश्किल होगा। कुछ लोगों के ओसीआई कार्ड इसलिए कैंसिल हो गए क्योंकि उन्होंने फिलिस्तीन रैली में हिस्सा लिया था, इसलिए अरफ़ात ने गैर-कश्मीरी कलाकारों को ही चुना। कश्मीरी मुसलमानों के सामूहिक दर्द, आघात और भारतीय सेना के तौर-तरीकों की कहानी बताने की कोशिश है। परिवार के संघर्ष के जरिए राजनीतिक उथल-पुथल के बीच पहचान और न्याय की तलाश है। नरसंहार की दर्दभरी यादों को भी ताजा करती है और खूनी उथल-पुथल के बीच भारतीय सेना का जुल्म, नजरबंदी, गुमशुदगी और हत्याओं की दर्दनाक कथा बुनती है। 'कश्मीर फाइल्स' को सरकार ने टैक्स फ्री कर दिया लेकिन 'सैफरन किंगडम' को शायद ही भारत में दिखाया जाएगा। अरफात कहते हैं, मैंने तो कोशिश ही नहीं की इंडिया में दिखाने की।

उम्मीद है कि यह फिल्म कश्मीरी सिनेमा के लिए नए युग की शुरुआत करेगी। ऐसा युग, जहां लोगों की कहानियां उस गरिमा, ईमानदारी और सम्मान के साथ कही जाएंगी, जिससे दूर रखा गया है। शेख का काम कहानी कहने की ताकत का सबूत है, जो खो गया है उसे पाने और आगे बढ़ने का नया रास्ता बनाने का तरीका है।